Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल...

शेखावाटी मिशन-100

हिन्दी साहित्य

कक्षा-12

कार्यालय : संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)
प्रभारी : शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

: missionshekhawati100@gmail.com | 9413361111, 9828336296

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

टीम शेखावाटी मिशन-100

संतोष कुमार महर्षि
संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चुरु संभाग
चुरु (राज.)

रामचन्द्र पिलानियां
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
सीकर (राज.)

पितराम सिंह काला
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
झुन्झुनूं (राज.)

मनोज कुमार ढाका
जिला शिक्षा अधिकारी
झुन्झुनूं (राज.)

निसार अहमद खान
जिला शिक्षा अधिकारी
चुरु (राज.)

महेन्द्र सिंह बड़सरा
सहायक निदेशक (स.शै.प्र.)
कार्यालय संयुक्त निदेशक, चुरु

हरदयाल सिंह फगेड़िया
अति.जिला शिक्षा अधिकारी (शै.प्र.)
सीकर (राज.)

रामचन्द्र सिंह बगड़िया
अति.जिला शिक्षा अधिकारी
सीकर (राज.)

नीरज सिहाग
अति.जिला शिक्षा अधिकारी (शै.प्र.)
झुन्झुनूं (राज.)

सांवरमल गहनोलिया
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (शै.प्र.)
चुरु (राज.)

महेश सेवदा
सहसंयोजक शेखावाटी मिशन-100
सीकर (राज.)

रामावतार भदाला
सहसंयोजक शेखावाटी मिशन-100
सीकर (राज.)

तकनीकी सहयोग

राजीव कुमार, निजी सहायक | पवन ढाका, कनिष्ठ सहायक | महेन्द्र सिंह कोक, सहा. प्रशा. अधिकारी | अभिषेक चौधरी, कनिष्ठ सहायक | दीपेन्द्र, कनिष्ठ सहायक

जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय), सीकर

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन-100

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्यक्रम सत्र : 2021-2022

उच्च माध्यमिक परीक्षा - 2022

विषय : हिन्दी साहित्य-12

सर्वश्रेष्ठ सफलता सुनिश्चित करने हेतु सर्वश्रेष्ठ संकलन

राकेश कुमार
संयोजक हिन्दी
रा.बा.उ.मा.वि.,गुढ़ा गौड़जी (झुन्झुनूं)

कमला कुमारी गढ़वाल
रा.उ.मा.वि., पनलावा (सीकर)

केशर काछवाल
रा.उ.मा.वि., रुल्याणा माली (सीकर)

विकास शर्मा
रा.उ.मा.वि., जुराठड़ा (सीकर)

टेलीग्राम :- शिक्षा विभाग समाचार

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
अन्तरा भाग – 2 काव्य खण्ड

1. जयशंकर प्रसादः (देवसेना का गीत/कार्नेलिया का गीत)

(i) देवसेना का गीत प्रसाद रचित कौनसे नाटक से लिया गया हैं।

उत्तर :– स्कंदगुप्त नाटक से

(ii) देवसेना की वेदना का मूल कारण क्या हैं–

उत्तर :–स्कंदगुप्त का प्रेम नहीं मिलना।

(iii) देवसेना कौन थी और किससे प्रेम करती थी?

उत्तर :–देवसेना मालवा के राजा बन्धुवर्मा की बहन थी और वह स्कंदगुप्त से प्रेम करती थी।

(iv) देवसेना ने क्या प्रतिज्ञा ली–

उत्तर :– भाई की मृत्यु के पश्चात देवसेना ने भाई के स्वप्न को पूरा करने के लिए राष्ट्रसेवा की प्रतिज्ञा ली थी।

(v) कार्नेलिया का गीत कहां से लिया गया हैं–

उत्तर :–कार्नेलिया का गीत प्रसाद के चन्द्रगुप्त नाटक से लिया गया है

(vi) कार्नेलिया कौन थी–

उत्तर :–कार्नेलिया सिकन्दर के सेनापति सिल्यूकस की बेटी थी।

(vii) कार्नेलिया का गीत में किसका वर्णन किया गया हैं–

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

उत्तर :–इस कविता में भारतभूमि की महिमा गौरव और प्राकृतिक सुषमा का वर्णन किया गया हैं।

(viii) ''अरूण यह मधुमय देश हमारा'' कविता में अनजान अतिथियों को आश्रय देने वाला देश किसको बताया हैं–

उत्तर :–भारत देश को

(ix) हेमकुम्भ ले उषा सवेरे भरती दुलकाती सुख मेरे। प्रस्तुत पंक्ति में कौनसा अलंकार हैं–

उत्तर :– इस पंक्ति में रूपक और मानवीकरण अलंकार हैं।

(x) कवि ने आशा को बावली क्यों कहा हैं–

उत्तर :–आशा व्यक्ति को भ्रमित कर देती हैं, उसे बावला बना देती है। प्रेम में प्रेमी विवेकहीन हो जाता है। प्रेम अन्धा होता है। देवसेना भी स्कन्दगुप्त से प्रेम किया और यह आशा मन में पाली कि स्कन्दगुप्त उसे अपना लेगा। उसकी आशा उसके मन का पागलपन ही था। वह स्कन्दगुप्त का प्रेम नहीं पा सकी।

(xi) 'मैने भ्रमवश जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए–

उत्तर :– देवसेना निराश और दुखी होकर जीवन के उस समय को याद करती हैं जब उसने स्कन्दगुप्त से प्रेम किया था। उन्ही क्षणों को याद करते हुए वह कहती हैं कि मैंने स्कन्दगुप्त से प्रेम किया और उन्हें पाने की चाह मन में पाली किन्तु यह मेरा भ्रम ही था। मैने आज जीवन की आकांक्षारूपी पूंजी को भीख की तरह लुटा दिया हैं मैं इच्छा रखते हुए भी स्कन्दगुप्त का प्रेम नहीं पा सकी। आज मुझे अपनी इस भूल पर पश्चात्ताप होता है।

(xii) 'देवसेना का गीत' कविता में देवसेना की निराशा के कारणों को लिखिए–

उत्तर :– देवसेना के निराशा के मुख्य दो कारण थे। प्रथम तो हूणों के आक्रमण के कारण उसके भाई बन्धु वर्मा एवं परिवार के सदस्यों की वीरगति प्राप्त हुई और जीवनभर अकेली रहकर उसे संधर्ष करना पड़ा।

दूसरा मुख्य कारण यह था कि वह स्कन्दगुप्त से प्रेम करती थी लेकिन स्कन्दगुप्त का प्रेम न पास सकी क्योंकि स्कन्दगुप्त विजया से प्रेम करता था। जब स्कन्दगुप्त ने उसके सामने प्रेम का प्रस्ताव रखा तब तक वह आजीवन अविवाहित रहने का व्रत ले चुकी थी।

(xiii) कार्नेनिलया का गीत में भारत की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया हैं? वर्णन कीजिए–

उत्तर :– प्रस्तुत गीत में प्रसाद जी ने भारत के प्राकृतिक सौंदर्य एवं सास्कृतिक महत्व का वर्णन किया है। प्रातः

छायावादी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

काल सूर्य की प्रथम किरणें जब भारत की भूमि पर पड़ती हैं तब प्रकृति की शोभा देखती ही बनती है। उस समय प्रकृति मधुमय दिखाई देती हैं। यहां दूर देशो से आने वाले सभी व्यक्तियों को आश्रय मिलता है। यह देश सभी की शरणस्थली है। यहों मनुष्य दयावान और करूणावान है। तथा सभी के प्रति सहानुभूति रखते है। यहां के लोग सभी को सुःख पहुंचाने वाले हैं। भारत में विविध सभ्यता–संस्कृति, रंग–रूप, आचार – विचार, एवं धर्म वाले प्राणियों के साथ समानता का व्यवहार किया जाता हैं। इस प्रकार भारत की गौरव गाथा एवं प्राकृतिक सौदर्य का वर्णन इस गीत में हैं।

(xiv) छल से संध्या के श्रमकण,
आँसू से गिरते थे प्रतिक्षण।
मेरी यात्रा पर लेती थी–
नीरवता अनंत अंगड़ाई
श्रमित स्वप्न की मधुमाया में
गहन विपिन की तरूछाया में ,
पथिक उनींदी श्रुति में किसने–
यह विहाग की तान उठाई।

उपर्युक्त काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

उत्तर :–(i)सन्दर्भ :– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक अन्तरा भाग –2 में छायावादी कवि ''जयशंकर प्रसाद'' द्वारा रचित स्कन्दगुप्त नाटक में ''देवसेना का गीत'' शीर्षक से संकलित अंश से ली गई है।

(ii) प्रसंग :– इस काव्यांश में जयशंकर प्रसाद जी ने देवसेना का निराशा का वर्णन करते हुए जीवन की नीरवता का वर्णन किया है।

(iii) व्याख्या :– देवसेना को स्कन्दगुप्त का प्रेम न मिलने के कारण वह निराश हैं उसकी आंखों से प्रतिक्षण आंसू बह रहे हैं। वह कहती हैं कि ये आंसू पसीने की बूंदो की तरह गिर रहे हैं मेरे जीवन की इस यात्रा में नीरवता प्रतिपल अंगड़ाई ले रही है। देवसेना ने स्कन्दगुप्त के प्रेम की सुखद आकांक्षाओं के सपनो को संजोया किन्तु उसकी आकांक्षाएं अतृप्त रही। जिस प्रकार कोई पथिक थक कर किसी वृक्ष की छाया में सुखद स्वप्नों को देखता हुआ विश्राम कर रहा हो और तब उसे कोई विहाग राग सुना दे तो उसे वह अच्छा नही लगता हैं उसी प्रकार जीवन के उतार पर स्कन्दगुप्त का प्रेम निवेदन उसे विहाग के समान प्रतीत होता हैं अब स्कन्दगुप्त का प्रणय

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

निवेदन उसे अच्छा नहीं लग रहा है।

(iv) विशेष :–(a) काव्यांश की भाषा प्रसागुण तथा लाक्षणिकता से युक्त हैं

(b) देवसेना की मनोव्यथा का मार्मिक चित्रण किया है।

(c) 'आंसू से गिरते' में उपमा अलंकार, ''लेती थी नीरवता अनंत अंगड़ाई'' में मानवीकरण तथा ''श्रमित स्वप्न'' में अनुप्रास अलंकार हैं।

(xv)जयशंकर प्रसाद का कवि परिचय लिखिए–

उत्तर :–जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 ई में काशी सुंधनी साहू नाम से प्रसिद्ध परिवार मे हुआ। जयशंकर प्रसाद जी जन्मजात प्रतिभाशाली साहित्यकार थे। वे हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभो में से एक है। आपकी रचनाओं में राष्ट्रवाद का स्वर प्रमुख है। प्रकृति का मनोरम सजीव चित्रण भी आपकी विशेषता है। आपकी रचनाओं मे भारतीय संस्कृति की मनोरम तथा गरिमामयी प्रतिष्ठा हुई हैं। जयशंकर प्रसाद जी मानवतावादी आशा और उत्साह की प्रेरणा देने वाले साहित्यकार हैं।

जयशंकर प्रसाद कवि नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार तथा निबन्धकार है। आंसू, झरना, लहर तथा कामयानी प्रमुख काव्य संग्रह, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, राजश्री, जनमेजय का नागयज्ञ, ध्रुवस्वामिनी (नाटक) तथा आंधी, इंद्रजाल, छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, प्रमुख कहानी संग्रह है।

2. <u>सूर्यकांत त्रिपाठी विराला – (गीत गाने दो मुझे / सरोज स्मृति)</u>

(i) 'गीत गाने दो मुझे' कविता में कवि हमें क्या करने की प्रेरणा देते हैं–

उत्तर :–कवि हमे निरंतर संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं।

(ii) कवि के अनुसार किसकी लौ बुझ गई हैं–

उत्तर :– कवि के अनुसार पृथ्वी की लौ बुझ गई हैं

भ्रष्टाचार मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(iii) कवि 'गीत गाने दो मुझे' कविता में गीत क्यों गाना चाहता हैं–

उत्तर :– हृदय की वेदना को भूलने के लिए कवि निराला गीत गाना चाहता हैं।

(iv) 'भर गया जहर से संसार जैसे हार खाकर।' पंक्तियों में जहर का क्या आशय हैं–

उत्तर :–कवि ने निराला का जहर से आशय संसार में व्याप्त विषमता, द्वेष और ईर्ष्या भाव से हैं।

(v) 'सरोज स्मृति' कैसा गीत हैं–

उत्तर :–शोक गीत

(vi) कवि निराला पुत्री सरोज को किसकी पुत्री के समान मानते हैं–

उत्तर :–कवि निराला पुत्री को कण्व ऋषि की पुत्री शकुन्तला के समान मानते हैं।

(vii) सरोज को श्रद्धान्जलि के रूप में कवि क्या समर्पित करता हैं–

उत्तर :–सरोज को श्रद्धान्जलि के रूप में कवि पुण्य कर्मो का फल समर्पित करता हैं।

(viii) 'सरोज स्मृति' कविता का मुख्य स्वर क्या हैं–

उत्तर :–'सरोज स्मृति' कविता मे वात्सल्य से भरा एक पिता का विलाप है।

(ix) 'सरोज स्मृति' में सरोज कौन हैं–

उत्तर :–कवि निराला की पुत्री का नाम सरोज हैं सरोज स्मृति कविता निराला की दिवंगत पुत्री सरोज की स्मृतियों पर केन्द्रित है।

(x) 'गीत गाने दो मुझे' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए–

उत्तर :–कविता में कवि ने उन परिस्थितियों की ओर संकेत किया हैं जिसमें संघर्ष का सामना करते हुए समर्थ एवं शक्तिशाली व्यक्तियों का जीना कठिन हो जाता है। हर दृष्टि से वातावरण प्रतिकूल हैं। कवि स्वयं अपने जीवन में संघर्ष करते हुए थक गया हैं। जीवन मूल्यो का पतन हो रहा हैं। शोषण और अन्याय के सामने सारे

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

संसार को हार माननी पड़ रही है। मानवता के कहीं दर्शन नहीं होते। मनुष्य की चेतना शक्ति समाप्त हो गई है। कवि ऐसे निराश जीवन में आशा का संदेश देना चाहता हैं।

(xi) 'ठग–ठाकुरों' से कवि का संकेत किसकी ओर हैं–

उत्तर :–'ठग–ठाकुरों' एक प्रतीक हैं जो उन शोषकों की ओर संकेत करता हैं जो सदैव समाज का शोषण करते रहे है। ये पूंजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है और सदैव साधारण जन पर अत्याचार करते हैं ये छिपे हुए ठग है जो प्रत्यक्ष में सीधे और सरल स्वभाव के दिखते है पर पर्दे की आड़ में जनता का खून पीते है।

(xii) 'आकाश बदल कर बना मही' में ं आकाश और मही शब्द किनकी ओर संकेत करता है–

उत्तर :–विवाह के समय कवि निराला की पुत्री का रूप स्वर्गीया पत्नी के समान लगने पर यहा आकाश स्वर्गीया पत्नी के लिए एवं मही सरोज की ओर संकेत करता है।

(xiii) ''दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूं आज जो नही कही'' कविता के आलोक मे कवि के हृदय की पीड़ा का वर्णन कीजिए –

उत्तर :– कवि का भाव यह हैं कि मेरा सारा जीवन दुःख एवं आभावों से भरा हुआ हैं। अब कवि के जीवन में उसके परिवार का कोई जन नहीं बचा हैं। कवि को आजीवन संघर्षो में जूझना पड़ा। मेरे जीवन की सारी कथा दुःख में डूबी हुई है। इसलिए मैने इस कविता में उस दुख–गाथा को गाया हैं जिसे मैनें आज तक किसी से नही कहा। इन पंक्तियो में निराला की गहरी वेदना छिपी है।

(xiv) सरोज का विवाह अन्य विवाहों से किस प्रकार भिन्न था –

उत्तर :–सरोज का विवाह एक सामान्य विवाह था। उसमें किसी प्रकार का आन्तरिक और बाह्य प्रदर्शन नहीं था। विवाह में निराला ने किसी को निमंत्रण पत्र नहीं भेजा केवल कुछ स्वजन ही विवाह के समय उपस्थित थें। सरोज

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

के विवाह में दहेज के रूप में कुछ समान भी नहीं दिया गया । घर पर तो संगीत का कार्यक्रम हुआ और न रात का जागरण ही हुआ। विदाई के समय कन्या को शिक्षा भी स्वयं पिता ने ही दी। इस प्रकार यह विवाहों से भिन्न था।

(xv) मुझ भाग्यहीन की तू संबल
युग वर्ष बाद जब हुई–विकल,
दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूं आज, जो नही कहीं
हो इसी क्रम पर वज्रपात
यदि धर्म, रहे नत सदा माथ
इस पथ पर मेरे कार्य सकल
हों भ्रष्ट शीत के से शतदल।
कन्ये, गत कर्मो का अर्पण
कर , करता मैं तेरा तर्पण।

सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

उत्तर :–(i) संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक अन्तरा भाग – 2 में छायावादी कवि ''सूर्यकांत त्रिपाठी निराला'' द्वारा रचित ''सरोज स्मृति'' से लिया गया है।

(ii) प्रसंगः– यहां कवि ने अपने हृदय की सम्पूर्ण करूणा अपनी पुत्री के प्रति अर्पित की हैं। एक भाग्यहीन पिता के संघर्षमय जीवन और पुत्री के प्रति कुछ न कर पाने का पश्चात्ताप इसमें व्यक्त हुआ है।

(iii) व्याख्या :– कवि प्रिय पुत्री के प्रति अपने भावो को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हे पुत्री सरोज। तू मूझ भाग्यहीन पिता का एक मात्र सहारा थी। मैने लंबे समय तक तेरी स्मृतियों को अपने हृदय में संजोए रखा परन्तु अब मैं बहुत व्याकुल हो गया हूं। अतः उस व्याकुलता को अब प्रकट कर रहा हूं। मैंने जीवन भर दुःख ही झेला हैं। आज जिस दुख को मैने किसी के सामने नहीं कहा उसे आज इस कविता के माध्यम से प्रकट कर रहा हूं। मानवीय धर्म की रक्षा करते हुए तो सिर नम्रता से झुका ही रहेगा चाहे मेरे शील सौजन्य रूपी सत्कर्म और धर्म

छायावादी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शीतकालीन कमल की पंखुड़ियों की तरह बिखर ही क्यों न जाए मुझे इसकी चिन्ता नहीं हैं। मैं अपने जीवन के सभी पुण्य कर्मो का फल तुझे श्रद्धांजलि रूप में अर्पित करता हूं। यही मेरा अर्पण है। यही मेरी तेरे प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

(iv) विशेष – (a) कवि की भाषा तत्सम प्रधान एवं भावानुकूल है।

(b) इस काव्यांश में कवि की करूणा व पुत्री स्नेह प्रकट हुआ है।

(c) ''शीत के–से शतदल'' पंक्ति में उपमा अलंकार हैं

(xvi) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला क साहित्यिक परिचय दिजिए–

उत्तर :–सूर्यकान्त त्रिपाठी का जन्म 1898 ई में बंगाल के मेंदिनीपुर जिले के महिषादल गांव में हुआ था। उनके बचपन का नाम सूर्यकुमार था। निराला छायावादी कवि होने के साथ–साथ प्रगतिवादी कवि भी हैं क्योंकि उनकी कविता में शोषण का विरोध और शाषकों के प्रति घृणा की अभिव्यक्ति हुई हैं। वे क्रान्तिदर्शी कवि हैं। उन्होनें छन्द मुक्त तथा छनबद्ध कविताएं लिखी हैं। उन्हें भारतीय इतिहास, दर्शन और परम्परा का बोध था। अपनी दिवंगत पुत्री के वियोग में सरोज स्मृति नामक एक लम्बी कविता लिखी जो कि शोक गीत है।

इनकी प्रमुख काव्य कृतियां–परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलिसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, नए पत्तें आदि है।

3. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेयः यह दीप अकेला / मैने देखा, एक बूंद

(i) दीपक और पंक्ति किसके प्रतीक हैं?

उत्तर :–दीपक व्यक्ति का और पंक्ति समाज का प्रतीक है।

(ii) सागर और बूंद किसके प्रतीक है?

उत्तर :–सागर – समाज अथवा परमात्मा का एवं बूंद व्यक्ति अथवा आत्मा का प्रतीक है

(iii) यह दीप अकेला कविता अज्ञेय के किस काव्य संग्रह से ली गई हैं?

उत्तर :–'बावरा अहेरी' काव्य संग्रह से ली गई हैं।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(iv) 'मैने देखा एक बूंद' कविता अज्ञेय के किस काव्य संकलन से संकलित हैं?

उत्तर :– ''अरी ओ करुणा प्रभामय'' काव्य संकलन से।

(v) मैने देखा एक बूंद कविता में कवि बूंद के परिपेक्ष्य में किसकी बात कर रहा हैं–

उत्तर :– एक बूंद की क्षणभंगुरता की

(vi) 'यह दीप अकेला' कविता में क्या संदेश दिया हैं?

उत्तर :–कविता में मनुष्य की व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता से जोड़ने का संदेश दिया है।

(vii) 'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए यह बताइए की उसे कवि ने स्नेह भरा, गर्वभरा एवं मदमाता क्यों कहा हैं–

उत्तर :– 'दीप अकेला कविता' में दो प्रतीकार्थ शब्द है। एक दीप तथा दूसरा पंक्ति। दीप व्यक्ति का प्रतीक है और पंक्ति समाज का प्रतीक है। दीप में स्नेह रूपी तेल भरा होता हैं तभी वह अपने आप को जलाकर संसार को प्रकाश देता है। उसकी लौ ऊपर को उठती है यह मानो उसका गर्वीलापन हैं। उसकी लौ हवा के साथ इधर–उधर झूमती है। यह उसका मदमातापन है। इसी प्रकार मनुष्य स्नेह से भरा होता हैं उसमें भी समाज का एक अंग होने का गर्व रहता है। जिसके कारण वह मदमाता होकर झूमता भी हैं।

(iii) 'यह अद्विितीय –यह मेरा – यह मैं स्वयं विसर्जित' पंक्ति के आधार पर व्यष्टि में विसर्जन की उपयोगिता बताइए–

उत्तर :– व्यक्ति सर्वगुण संपन्न होते हुए भी अकेला है। उसकी सार्थकता तभी है जब एक समाज के साथ मिल जाए। समाज का भला भी तभी है जब वह व्यक्ति को अपने साथ मिला ले। इस प्रकार व्यष्टि और समष्टि दोनों का हित होता है। व्यक्ति के गुणों का लाभ समाज को भी मिलता है। तथा राष्ट्र भी मजबूत होता है। दीप और व्यक्ति की पंक्ति और समाज में विलय होना अति आवश्यक हैं।

(ix) 'मैने देखा एक बूंद' कविता के माध्यम से कवि अज्ञेय ने बूंद एवं सागर के संदर्भ में कौनसे दर्शन का प्रतिपादन किया हैं?

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

उत्तर :– कवि उस बूंद में उस विशालता के दर्शन करता हैं जो उसे सागर की अथाह जल राशि को देखकर भी प्राप्त नहीं होता हैं उसे अहसास होता हैं कि वह अपने समाप्त होने वाले शरीर से भी ऐसे कार्य कर सकता हैं, जो उसके छोटे से जीवन को सार्थकता प्रदान करता हैं, वह ऐसा साधक बन जाता हैं जिसे सभी पापों से छुटकारा मिल गया हैं।

सागर समाज का प्रतीक हैं समष्टि का प्रतीक हैं। बूंद व्यक्ति अथवा व्यष्टि की प्रतीक है। बूंद सागर की लहरों से उछलकर अलग हो जाती हैं और पुनः उसी सागर में मिल जाती है। बूंद क्षणभंगुर है फिर भी एक पल के लिए ही सही सागर से अलग होकर अपना विशिष्ट महत्व रखती हैं लेकिन अन्त में उसी सागर में समाहित होना पड़ता है। इसी प्रकार मानव का समाज से पृथक होने पर कोई अस्तिव नहीं हैं किन्तु जब उसके खण्ड स्वरूप को विराट चेतना का आलोक मिल जाता हैं तो वह सागर हो जाता है।

(x) कवि अज्ञेय का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर :–अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' है। इनका जन्म 7 मार्च 1911 ई0 को कुशीनगर उत्तर प्रदेश में हुआ। क्रान्तिकारी आन्दोलन में सक्रियता के कारण इन्हे जेल भी जाना पड़ा। अज्ञेय की प्रतिभा बहुमुखी थी। उन्होने कविता, कहानी, उपन्यास, यात्रावृत्त, निबन्ध, आलोचना आदि विधाओं पर लेखनी चलाई। प्रकृति प्रेम और मानवमन के अन्तर्द्वन्द्व उनके प्रिय विषय है। उनकी कविता मे व्यक्ति – स्वातंत्र्य का आग्रह हैं। अज्ञेय प्रयोगवाद के जनक के रूप में जाने जाते है।

<u>काव्य कृतियां</u> – हरी घास पर क्षणभर, भग्नदूत, चिन्ता, इन्द्रधनु रौंदे हुए, आंगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार। 'सदानीरा' नाम से उनकी समग्र कविताओं का संकलन प्रकाशित हुआ है।

<u>उपन्यास</u> – शेखर एक जीवनी, अपने–अपने अजनबी, नदी के द्वीप।

<u>यात्रावृत्त</u> – अरे यायावर रहेगा याद, एक बूंद सहसा उछली।

<u>निबन्ध</u> – त्रिशंकु, आत्मनेपद।

<u>कहानी संग्रह</u> – विपथगा, कोठरी की बात, शरणार्थी, ये तेरे प्रतिरूप।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

4. केदारनाथ सिंह – बनारस/ दिशा–

(i) बनारस कविता में शहर का जीवन कैसे चलता हैं–

उत्तर :–बनारस कविता में शहर का जीवन धीमी गति से अथवा धीरे–धीरे चलता हैं

(ii) 'और खाली होता हैं यह शहर' यहां शहर शब्द किस नगर के लिए प्रयुक्त हैं–

उत्तर :–बनारस नगर के लिए.

(iii) बनारस कविता किस ऋतु का उल्लेख हुआ हैं–

उत्तर :–बनारस कविता में वंसत ऋतु का उल्लेख हुआ हैं–

(iv) बनारस में सैकड़ो वर्षों से किसकी खड़ाऊ रखी हैं–

उत्तर :– महाकवि तुलसीदास की

(v) बनारस शहर की कौनसी विशेषता विशिष्ट हैं–

उत्तर :–बनारस शहर की प्राचीनता एवं बनावट विशिष्ट हैं

(vi) दिशा कविता का मूल आधार क्या हैं–

उत्तर :–दिशा कविता का मूल आधार बाल मनोविज्ञान हैं

(vii) बच्चे ने हिमालय को किस दिशा में बताया था –

उत्तर :–बच्चे ने हिमालय को उस दिशा में बताया जिस दिशा में उसकी पतंग उड़ रही था।

(viii) बसन्त के अकस्मात आने से लहरतारा या मडुवाडीह मोहल्ले से क्या चलती हैं–

उत्तर :–धूल भरी आंधियां चलती है।

(ix) 'खाली कटोरो में बसन्त का उतरणना' से क्या अभिप्राय हैं?

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

उत्तर :–उपर्युक्त कथन का आशय हैं कि अब तक भिखारियों के जो कटोरे खाली थे वे अब भिक्षा से भर जाएंगे। लोग उनमें पैसे डालने आरम्भ कर देंगे। भिखारियों की आंखे आनन्द से चमकने लगती है। लगता हैं मानों उनके कटोरों में बसन्त उतर आया है।

(x) बनारस की पूर्णता और रिक्तता को कवि ने किस प्रकार वर्णित किया हैं–

उत्तर :–वसन्त के आगमन पर लोगो के मन में उल्लास भर जाता है, जो उसकी पूर्णता का प्रतीक हैं। गंगा घाट पर किसी न किसी पर्व पर दूर से आने वाले श्रद्धालु यहां एकत्रित होते है। गंगा में स्नान करके पूजा अर्चना करते है, और विश्वनाथ के दर्शन करते है। इस प्रकार बनारस में पूर्णता व्याप्त रहती है।

वही दूसरी ओर लोग शवों को अंधेरी गलियों से निकालकर गंगा घाट की ओर ले जाते है और दाह संस्कार करते है, यह कार्य बनारस की रिक्तता को प्रकट करता है।

(xi) बनारस में धीरे–धीरे क्या–क्या होता हैं?धीरे–धीर से कवि इस शहर के बारे में क्या कहना चाहता हैं?

उत्तर :–बनारस में हर कार्य धीमी गति से होता है। यहा धीरे–धीर धूल उड़ती हैं, लोग धीरे–धीर चलते है। यहां मन्दिरों में और गंगा घाट पर आरती के घंटे धीरे–धीर बजते हैं। यहा संध्या भी धीरे–धीर उतरती हैं।

बनारस में हर काम अपनी लय में होता है। धीरे –धीरे हर काम का होना बनारस शहर की अनूठी विशेषता है। यहां एक सामूहिक लय हैं। यह शहर अपने ढंग से जीता मरता है।

(xii अपनी एक टांग पर खड़ा है यह शहर
अपनी दूसरी टांग से
बिल्कुल बेखबर।

उपर्यक्त पंक्ति का शिल्प सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

उत्तर :–भावपक्ष– यह शहर स्वयं में मस्त और व्यस्त हैं। यह अपनी आस्था, मान्यता, विश्वास, श्रद्धा, भक्ति में लीन है। उसे अपनी पुरानी संस्कृति एवं परम्परा के अतिरिक्त और किसी की चिन्ता नहीं है। वह आधुनिकता से बेखबर है।

कक्षापक्ष :– भाषा सरल और प्रवाहमय हैं। मुक्त छन्द से है। बिम्ब योजना सार्थक हैं। लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग के कारण वर्णन सजीव और चित्र जैसा बन पड़ा हैं। 'बिल्कुल बेखबर' पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(xiii)''जो है वह खड़ा है

बिना किसी स्तम्भ के''

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि का भाव क्या हैं?

उत्तर :–बनारस की प्राचीनतम, आध्यात्मिकता, आस्था, विश्वास और भक्ति अत्यन्त सुदृढ़ है। वह प्राचीन काल से इस प्रकार बनी हुई है। उसको अपनी अस्तित्व की सुरक्षा के लिए किसी सहारे की जरूरत नहीं है। वह बिना किसी सहारे के जन – जीवन में समाई हैं।

(xiv) कवि ने बनारस की किन विशेषताओं उल्लेख किया हैं–

उत्तर :–(i) गंगा नदी के तट पर स्थित उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर बनारस है।

(ii) धार्मिकता और अध्यात्मिकता की प्रबलता – यह शिव की नगरी हैं। यहां गंगा के साथ लोगो की आस्था जुड़ी हुई है.।

(iii)इस शहर के साथ मोक्ष की अवधारणा जुड़ी है।

(iv) यहां अध्यात्मिक और आधुनिकता का सम्मिलित स्वरूप देखने को मिलता है.।

(v)बनारस में संध्या को मन्दिरों और घाटों पर आरती होती हैं और सारा शहर दीपों से जगमगाता है।

(xv)'दिशा' बाल मनोविज्ञान से संबंधित लघु कविता हैं स्पष्ट कीजिए–

उत्तर :–इस कविता में बाल स्वभाव का यथार्थ चित्रण है। बच्चों की सोच और बड़ों की सोच में अन्तर होता है। बच्चों की दुनिया छोटी होती हैं, इसलिए वे उसी सीमित दायरे तक सोचते है। इस कारण वे हिमालय उधर ही बताते है जिधर उनकी पतंग उड़ रही हैं। बच्चे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर बड़ी सहजता से देते हैं। कवि ने जाना हैं कि बच्चों का यथार्थ अपने ढ़ंग से होता है। कवि ने बच्चो का स्वभाव पहचान कर उसका अच्छा वर्णन किया है।

(xvi)केदारनाथ सिंह का साहित्यिक परिचय दीजिए –

उत्तर :–केदारनाथ का जन्म 7 जुलाई 1934 को उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के चकिया गांव में हुआ था केदारनाथ सिंह मूलतः मानवीय संवेदना के कवि है। आपकी कविताओं में शोर–शराबा न होकर विद्रोह का शांत एवं संयत स्वर सशक्त रूप से उभरा है।

केदारनाथ सिंह की कविताओं में बिम्ब विधान पर बहुत बल दिया गया है। उनकी भाषा नम्य और पारदर्शी है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

उनके शिल्प में बातचीत की सहजता है और अपनापन अनायास दिखाई देता है। आपको अकाल में सारस कविता संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार, मैथलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान, व्यास सम्मान प्राप्त हो चुके है।

काव्य संग्रह – अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही हैं, यहां से देखो, अकाल में सारस आदि

कहानी संग्रह – कब्रिस्तान में पंचायत।

अलोचना और निबन्ध :– मेरे समय के लोग, कल्पना और छायावाद, हिन्दी कविता में बिम्ब–विधान।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

5. विष्णु खरेः– एक कम/सत्य →

(i) कवि के अनुसार अमीर लोगों ने अमीर बनने के लिए क्या किया ?

उत्तर :–कवि के अनुसार अमीर बनने की होड़ में लोगो ने अपने स्वाभिमान तक को बेच दिया।

(ii) हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा हैं?

उत्तर :– कवि ने हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को ईमानदार कहा हैं क्योंकि वह अगर अमीर होता तो इस तरह हाथ फैलाकर भीख नहीं माँगता।

(iii) कवि ने कब से लोगो को आत्मनिर्भर, मालामाल और गतिशील होते देखा हैं?

उत्तर :–कवि ने सन 1947 अर्थात आजादी के बाद लोगो को आत्मनिर्भर, मालामाल और गतिशील होते देखा है।

(iv) कवि ने स्वयं को लाचार, कामचोर और धोखेबाज क्यों कहा है ?

उत्तर :–कवि ने स्वयं को लाचार, कामचोर और धोखेबाज कहा है क्योंकि उसको पता हैं कौन बेईमान हैं और कौन ईमानदार हैं। फिर भी यह सब जानकर भी वह कुछ नहीं कर पाताा हैं।

(v) सत्य कभी दिखता हैं कभी ओझल हो जाता हैं। क्यों?

उत्तर :–सत्य कभी दिखता हैं कभी ओझल हो जाता हैं क्योंकि सत्य हमेशा परीक्षा लेता है।

(vi) युधिष्ठर के पुकारने पर भी विदुर कहाँ चले गए थे।

उत्तर :–युधिष्ठर के पुकारने पर भी विदुर घने वन में चले गए थे।

(vii) सत्य कविता में विदुर और युधिष्ठर किसके प्रतीक हैं–

उत्तर :–सत्य कविता में विदुर सत्य और युधिष्ठर व्यक्ति के प्रतीक हैं

(viii) एक कम कविता में कवि ने किस पर व्यंग्य किया हैं–

उत्तर :–स्वार्थी, चालाक, धोखेबाज और भ्रष्ट व्यक्तियों पर व्यंग्य किया है।

(ix) भिखारी जब कवि के सामने हाथ फैलाता हैं तो कवि क्या सोचता हैं–

उत्तर :–भिखारी जब कवि के सामने हाथ फैलाता हैं तो कवि यह सोचने लगता हैं कि उसके सामने एक ईमानदार और एक निश्छल व्यक्ति हाथ फैलाए खड़ा हैं। यदि वह बेईमान और धोखेबाज होता तो निश्चिय ही अन्य लोगो की तरह मालामाल और अमीर होता और तब इसे हाथ फैलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती । समाज

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

में जो गलाकाट प्रतिस्पर्धा चल रही हैं यह भिखारी उससे दूर हैं।

(x) कवि ने लोगो के आत्मनिर्भर, मालामाल और गतिशील होने के लिए किन तरीकों की ओर संकेत किया हैं? स्पष्ट कीजिए–

उत्तर :–कवि ने आजादी के बाद भारत के अनेक लोगों को आत्मनिर्भर मालामाल और गतिशील होते देखा है। छलकपट, धोखाधड़ी, विश्वासघात, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता एवं अन्याय के बल पर लोगो ने अपनी स्थिति को सुधारा हैं। अनैतिक तरीकों से लोग धनवान बने हैं और दूसरों को धक्का देकर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति को ही उन्होने अपनी उन्नति का साधन बनाया है।

(xi) मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वन्द्वी या हिस्सेदार नहीं मुझे कुछ देकर या न देकर भी तुम कम से कम एक आदमी से तो निश्चिंत रह सकते हो। उपर्युक्त पंक्ति का शिल्प सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

उत्तर :–आज सर्वत्र दूसरों से आगे निकलने की होड़ लगी है। इस गलाकाट प्रतिस्पर्धा में प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से आशंकित हैं। ऐसी स्थिति में भिखारी अपने फैलाए हुए हाथ से वह हमें आश्वस्त कर रहा हैं कि वह पूरी तरह हमारी कृपा पर आश्रित हैं हमारे बराबर का नहीं हैं। हमसे होड़ नहीं कर सकता हैं और हम उसकी तरफ से निश्चिंत रह सकते हैं। कम से कम एक व्यक्ति तो ऐसा हैं जो इस प्रतिद्वंद्विता भरे युग में हमारा प्रतिद्वन्द्वी नहीं है। भले ही हम उसे कुछ दे या न दे फिर वह हमारा प्रतिद्वन्द्वी नहीं है।

कलापक्षः– भाषा सरल, सहज एवं प्रवाहपूर्ण हैं। भाषा में व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ हैं। ये पंक्तियां मुक्त छंद एवं व्यंग्य रूप मे लिखी है।

(xii) 'सत्य का दिखना और ओझल होना' से कवि का क्या तात्पर्य हैं–

उत्तर :– सत्य का कोई स्थिर स्वरूप नहीं होता हैं।वह हमें कभी दिखता हैं तो कभी छिप जाता है। वस्तुतः आज के समाज में सत्य को पहचानना बड़ा कठिन काम हैं यही बात कवि कहना चाहता हैं। सत्य की कोई निश्चित पहचान नहीं हैं इसलिए हर व्यक्ति सत्य के बारे में संशयग्रस्त है। जो एक व्यक्ति के लिए सत्य हैं वही शायद दूसरे के लिए सत्य नहीं है।

xiii यदि हम किसी तरह युधिष्ठिर जैसा संकल्प पा जाते हैं तो एक दिन पता नहीं क्या सोचकर रूक ही जाता हैं सत्य लेकिन पलटकर सिर्फ खड़ा ही रहता हैं वह दृढ़निश्चयी अपनी कहीं और देखती दृष्टि से हमारी आंखों में देखता हुआ अंतिम बार देखता सा लगता है। वह हमें और उसमें से उसी का हलका सा प्रकाश जैसा आकार समा जाता हैं हममें।

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

उपर्युक्त पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(i) संदर्भ : – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग – 2 में विष्णु खरे द्वारा रचित 'सत्य' कविता से संकलित है।

(ii) प्रसंग – महाभारत के मिथकीय चरित्रों युधिष्ठिर, विदुर आदि को लेकर लिखी हुई इस कविता में कवि ने

ने सत्य की विशेषताओं को उद्घाटित किया है। सत्य उसी का प्राप्त होता हैं जो दृढ़ निश्चिय एवं संकल्पवान होता है।

(iii) व्याख्या :– सत्य हमारी परीक्षा लेने के लिए हमसे दूर होता जाता हैं और यह परखने का प्रयास करता हैं कि हम कब तक उनका अनुगमन कर सकते हैं। विदुर को युधिष्ठिर पुकारते हुए रूकने के लिए कह रहे थे पर विदुर थे कि उनकी पुकार को अनसुना करके घने जंगल में आगे बढ़े जा रहे थे। युधिष्ठिर संकल्पवान एवं दृढ़निश्चियी व्यक्ति थे। वे लगातार विदुर का पीछा करते रहे और अन्ततः विदुर को रूकना ही पड़ा। ठीक इसी तरह सत्य भी हमारे दृढ निश्चय की परीक्षा करता है। यदि हम संकल्प शक्ति से युक्त हैं तो अन्ततः सत्य को पा ही लेते हैं।

(iv) विशेष :– 1. भाषा सरल, भावानुकूल एवं प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली हैं।

2. मुक्त छंद एवं तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है।

3. युधिष्ठिर एवं विदुर को प्रतीक बनाकर सत्य का उद्घाटन किया गया है।

4. सत्य की प्राप्ति दृढ़ निश्चयी व्यक्ति को ही होती है।

शैक्षिक मिशन –100

6. तुलसीदास – भरत राम का प्रेम/गीतावली के पद

(i) तुलसीदास द्वारा रचित 'भरत–राम का प्रेम' किस काव्य से लिया गया हैं?

उत्तर :– तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितत्रमानस' नामक महाकाव्य के 'अयोध्या कांड' से लिया गया है।

(ii) राम को वापस लाने के लिए भरत कहाँ गए थे?

उत्तर :–चित्रकूट

(iii) कवि ने माता कौशल्या के दुःख की तुलना किससे की है?

उत्तर :–कवि ने माता कौशल्या के दुःख की तुलना एक वियोगी मोरनी से की है?

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(iv) राम वियोग में कौशल्या किसे छाती से लगाती हैं?

उत्तर :–राम वियोग में कौशल्या राम की पनहियाँ(जूतियां) को छाती से लगाती हैं?

(v) खेलते समय भरत जब हारने वाले होते थे तो राम क्या करते थें–

उत्तर :–खेलते समय भरत जब हारने वाले होते थे तो राम स्नेह वश स्वयं हारकर भरत को जीता देते थे।

(vi) किसकी आज्ञा पाकर भरत अपनी बात कहने के लिए सभा में खड़े हुए–

उत्तर :–गुरु मुनि वशिष्ठ की आज्ञा पाकर।

(vii) पद के दो पद कहां से लिए गए हैं–

उत्तर :–महाकवि तुलसीदास के द्वारा रचित गीतावली से

(viii) माता कौशल्या राम को क्या कहकर बुला रही हैं–

उत्तर :–माता कौशल्या राम को उनके प्रिय घोड़ों की दुहाई देती हैं और कहती हैं कि जिन घोड़ो को तुम प्यार से पुचकारते थे इनके लिए सिर्फ एक बार चले आओं।

(ix) माता कौशल्या राम की किन वस्तुओ को देखकर उनका स्मरण करती हैं–

उत्तर :–माता कौशल्या श्री राम के बचपन के छोट–छोटे धनुष बाण एवं उनकी छोटी जूतियों को देखकर स्मरण करती है।

(x) 'रहि चकि चित्रलिखी सी' पंक्ति में कौनसा अलंकार हैं–

उत्तर :–उपमा अलंकार

(xi) 'भरत राम का प्रेम' पदों में किस प्रसंग का उल्लेख मिलता हैं?

उत्तर :–'भरत राम का प्रेम' पदों में राम द्वारा वन गमन तथा भरत द्वारा चित्रकूट जाकर उन्हे वापस लाने के प्रसंग का वर्णन हैं?

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(xii)''मैं जानउं निज नाथ सुभाउं'' में राम के स्वभाव की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया गया हैं–

उत्तर :– सभा में भरत जी कहने लगे मैं अपने स्वामी श्रीराम के स्वभाव को जानता हूं। भरत के इस कथन से पता चलता हैं कि भगवान राम अत्यन्त उदार हैं तथा भरत और अन्य परिवार जना पर उनका अपार स्नेह है। वह अपराध करने वाले पर भी कभी क्रोध नहीं करते। वह अत्यन्त दयालु है। बचपन से अब तक उन्होने भरत को कोई दुःख नहीं पहँचाया है।

xiii 'महीं सकल अनरथ कर मूला' पंक्ति द्वारा भरत के विचारो भावों का स्पष्टीकरण कीजिए –

उत्तर :–भरत जी कहते हैं कि 'महि सकल अनरथ कर मूला' अर्थात मैं ही सारे अनर्थ की जड़ हूँ । माता कैकेयी ने अपने पुत्र के लिए अर्थात मेरे लिए अयोध्या का राज्य राजा दशरथ से मांगा और मैं निष्कंटक राज्य कर सकूँ इसलिए राम को चौदह वर्ष का वनवास दे दिया। इस प्रकार अयोध्या में राम के राज्याध्किार हनन तथा वन गमन के अनर्थ के लिए मूल दोषी तो मैं ही हूं। यह सब मेरे कारण हुआ है। राम, लक्ष्मण व सीता को वनवास के कष्ट सहने पड़े, अयोध्या के सब नर नारी विकल हुए एवं माताओ को राजा दशरथ के निधन से वैधव्य भोगना पड़ा है।

xiv राधों! एक बार फिरि आवौं।

ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरों बनहि सिधावों।
जे पय प्याइ पोखी कर पंकज पार वार चुचुकारे ।
क्यों जीवहि मेरे राम लाडिले ! ते अब निपट बिसारे।
भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे।
तदपि दिनहि दिन होत झांवरे मनहुँ कमल हिम मारे।
सुनहु पथिक! जो राम मिलहि बन कहियों मातु संदेसो।
तुलसी मोहि और सबहिन ते इन्हको बड़ो अंदेसो।

उपर्युक्त काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

उत्तर :–

(i) संदर्भ :– प्रस्तुत काव्यांश गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'गीतावली' से ली गई जिन्हे हमारी पाठ्य पुस्तक अन्तरा भाग 2 में पद शीर्षक से संकलित किया गया है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(ii) प्रसंग :– राम के वनगमन के कारण उनके द्वारा पाले–पोसे गए घोड़े अत्यन्त व्याकुल है। माता कौशल्या पथिक के माध्यम से राम को यह सन्देश भिजवा रही हैं कि उन्हें अपने घोड़ो को इस तरह विस्मृत नहीं कर देना चाहिए।

(iii) व्याख्याः– माता कौशल्या किसी पथिक को संदेश देती हुई कहती हैं कि हे पथिक! यदि तुम्हे वन में कही राम मिल जाएं तो उनसे मेरा यह सन्देश अवश्य देना कि तुम्हारे पाले – पोसे घोड़े तुम्हारे वियोग में अत्यन्त व्याकुल है। इसलिए हे राम कम से कम एक बार तो वन से आकर इन्हे देख लो। तुमने जिन घोड़ो को दूध पिलाकर और अपने कमल जैसे हाथ इनके बदन पर फिराकर बार–2 प्रेम से पुचकारा था वे तुम्हारे वियोग में भला कैसे रह सकेंगे। हे लाड़ले पुत्र राम! क्या तमने अपने उन प्रिय घोड़ो को भूला दिया हैं? यद्यपि तुम्हारे न होने से भरत उन घोड़ो की सौगुनी अधिक देखभाल करते हैं क्यों कि वे तुम्हारे प्रिय घोड़े हैं तथापि तुम्हारे बिना इस प्रकार दिनों दिन कमजोर होते जा रहे हैं जैसे पाला पड़ने पर कमल दिनों – दिन मुरझाता जाता हैं। हे पथिक ! तुम राम से जाकर यह संदेश अवश्य कह देना। तुलसीदास जी कहते है कि माता कौशल्या ने कहा कि मुझे सबसे अधिक इन घोड़ो की चिन्ता हैं कि ये तुम्हारे वियोग में भला कैसे जीवित रहेंगे।

(iv) विशेष :–(i) प्रस्तुत पद्यांश की भाषा ब्रज हैं।

(ii) 'तदपि दिनहि .... मनहुं कमल हिममारें' पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(iii) राम के वियोग में अयोध्या के नर –नारी ही नहीं घोड़े तक दुखी हैं। यही बताना कवि का उदेश्य है।

(iv) माधुर्य गुण एवं गेय पद छंद में रचना हुई है।

शेखावाटी मिशन–100

XV तुलसीदास का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर :– कवि तुलसीदासजी का जन्म सन् 1532 में उत्तरप्रदेश के जिला बांदा के गांव राजापुर में हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। इनका जन्म अभुक्त मूल नक्षत्र होने के कारण इनके माता– पिता ने बचपन में परित्याग कर दिया। इनका पालन –पोषण व शिक्षा इनके गुरू नरहरिदास ने दी थी। इनका विवाह रत्नावली के साथ हुआ।

भक्तिकाल की सगुण धारा का राम भक्ति शाखा के प्रमुख कवि के रूप में तुलसीदास जी को जाना जाता हैं।

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

इन्होने अपने ग्रन्थो के माध्यम से समाज को लोगमंगल तथा समन्वय का संदेश दिया है। तुलसी ने अवधि व ब्रजभाषा में काव्य रचना की है। तुलसी जी द्वारा रचित कृतियों में रामचरित मानस (1623 ई में) विनयपत्रिका, गीतावली, जानकीमंगल, पार्वतीमंगल, वैराग्यसंदीपनी, रामलला नहछू तथा रामाज्ञा प्रश्नावली इत्यादि।

7. विद्यापति :– 'पद'

(i) कवि विद्यापति के संकलित पदो में से प्रथम पद में किसका वर्णन हैं–

उत्तर :–विरहिणी नायिका के भावों का वर्णन है।

(ii) विरह में राधा का शरीर किसके समान क्षीण होता जा रहा हैं–

उत्तर :–विरह में राधा का शरीर चतुर्दशी के चन्द्रमा के समान क्षीण होता जा रहा है

(iii) कवि विद्यापति के पदों में नायक और नायिक कौन हैं

उत्तर :–कवि विद्यापति के पदों में नायक कृष्ण को और नायिक राधा को माना है।

(iv) राधा को जीवनभर किससे तृप्ती नहीं हुई–

उत्तर :–राधा को जीवनभर कृष्ण प्रेम से तृप्ती नहीं हुई

(v) कवि विद्यापति के काव्य का मुख्य विषय क्या हैं–

उत्तर :–राधा–कृष्ण के प्रेम के माध्यम से लौकिक प्रेम के विभिन्न रूपों का चित्रण किया गया है।

(vi) कवि विद्यापति ने तीसरे पद में किस ऋतु का चित्रण उद्दीपन रूप से किया है–

उत्तर :– वसन्त ऋतु का चित्रण

(vii) रानी लक्ष्मणा देवी पर मुग्ध होकर कौन रमण करते हैं–

उत्तर :–रानी लक्ष्मणा देवी पर मुग्ध होकर राजा शिवसिह रमण करते हैं

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(viii) विद्यापति के पद किस भाषा में रचित हैं–

उत्तर :–मैथिली भाषा में

(ix) धरनी धरि धनि कत बेरि बइसइ,

पुनि तहि उठइ न पारा।

उपर्युक्त पंक्तियों में कौनसा अलंकार हैं–

उत्तर :–अनुप्रास एवं अतिशयोक्ति अलंकार

(x) तोहर बिरह दिन छन–छन तनु छिन– चौदसि– चांद समान उपर्युक्त रेखांकित पद में कौनसा अलंकार हैं?

उत्तर :–उपमा अलंकार

(xi) 'जनम अबधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल' उक्त काव्य पंक्ति के आधार पर विद्यापति की नायिका की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर :– सखी ने जब नायिका से प्रेम के अनुभव के बारे में पुछा तो नायिका ने कहा कि प्रेम में सदैव अतृप्ति रहती है। मन सदैव अतृप्त रहता हैं। नायिका (राधा) के नेत्र आज भी नायक (श्रीकृष्ण) के दर्शन के व्याकुल हैं। भले ही नायक की छवि हमेशा उसकी आँखों के सामने रही हो लेकिन उसके नेत्र कभी भी प्रिय की सांवली सलोनी सूरत को देखकर तृप्त नहीं होते। यह अतृप्ति उसके प्रेम की परिचायक हैं।

xii 'सेह पिरित अनुराग बखानिअ तिल –तिल नूतन होए' से लेखक का क्या आशय हैं–

उत्तर :– कवि प्रस्तुत काव्यांश के माध्यम से यह कहना चाहता हैं कि वही प्रेम और अनुराग बखानने योग्य हैं जिसमें क्षण–क्षण पर नवीनता का अनुभव हो अर्थात प्रेम की एक विशेषता है नित नवीनता इसी प्रकार जिस प्रीति में कभी पुरानापन न आए जो सदैव नयी –नयी सी लगें वही प्रीति बखानने योग्य है।

xiii. विरहिणी नायिका पर वसन्तु ऋतु आने का क्या प्रभाव पड़ता हैं–

उत्तर :– विरहिणी नायिका पर बसन्त ऋतु आने का प्रभाव बिल्कुल विपरीत पड़ता हैं क्योंकि संयोगकाल में जो

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

वस्तुएं सुखकर होती है। वियोग काल में वही विरह को बढ़ाने वाली हो जाने से दुखदायक देने लगती हैं। वह उसे प्रिय की याद दिलाकर उसकी वेदना बढ़ा देती है। बसन्त ऋतु आ जाने से उपवनों में फूल खिल गए हैं जिसे देखककर नायिका अपने आंखो को बंद कर लेती हैं। कोयल की कूक और भ्रमरों की मधुर गुंजार भी नायिका को अच्छी नहीं लगती इसलिए वह अपने दोनों कानो को बंद कर लेती है। वसन्त की यह सुषमा विरहिणी नायिका के विरह को उदीप्त कर रही है।

xiv विद्यापति का साहित्यिक परिचय दिजिए –

उत्तर :–विद्यापति का जन्म 1380 ई में बिहार के मिथिला अंचल के मधुबनी जिले के बिस्पी गांव में हुआ। विद्यापति मिथिला के राजा शिवसिंह के अभिन्न मित्र, राजकवि और सलाहकार थे। विद्यापति भक्ति और श्रृंगार के कवि है। श्रृंगार उनका प्रधान रस है। राधाकृष्ण के प्रेम के माध्यम से उन्होने लौकिक प्रेम के विभिन्न रूपो का चित्रण किया है। उनकी वाणी में कोयल जैसी मधुरता थी इसी कारण उन्हे मैथिल कोकिला तथा अभिनव जयदेव कहा जाता है।

विद्यापति का संस्कृत, अवहटर (अपभ्रंश) तथा मैथिली पर पूरा अधिकार था । विद्यापति ने मुख्य तीन रचनाएँ की हैं जिनमें मैथिली भाषा में रचित रचना– पदावली तथा अवहट्ट में रचित रचनाएं कीर्तिलता एवं कीर्तिपताका है।

(xv) प्रियतमा के दुःख के क्या कारण थे–

उत्तर :–प्रियतमा (विरहिणी नायिका) इसलिए दुःखी हैं क्योंकि प्रियतम (नायक) पास नहीं हैं। सावन के महीने को नायक के बिना काट पाना उसके लिए कठिन हो रहा हैं। प्रिय के बिना अकेला भवन उसे काटने को दौड़ता है। प्रियतम कृष्ण उस विरहिणी नायिका का मन अपने साथ हरण करके ले गए हैं इसलिए अब विरह में नायिका कमजोर होती जा रही हैं और उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

8. केशवदास ने सरस्वती वंदना/पंचवटी का वर्णन/अंगद

(i) केशवदास किस काल के सुप्रसिद्ध कवि रहे हैं?

उत्तर :– रीतिकाल के

(ii) कवि केशवदास ने माता सरस्वती के गुणो को कैसे बताया हैं–

उत्तर :– अवर्णनीय बताया है।

(iii) कवि केशव के अनुसार भगवान शिव की तरह मुक्ति कौन देती हैं–

उत्तर :–कवि केशव के अनुसार भगवान शिव की तरह मुक्ति पंचवटी देती है

(iv) अंगद रावण को क्या आभाष कराने की कोशिश कर रहा हैं–

उत्तर :–अंगद रावण को प्रभु श्रीराम की शक्ति का आभाष कराने की कोशिश कर रहा हैं

(v) पंचवटी क्या हैं–

उत्तर :–वनवास के समय वन में राम ने जिस स्थान पर अपना निवास बनाया था, उस धार्मिक तीर्थ स्थान को पंचवटी कहा जाता है।

(vi) अंगद कौन था–

उत्तर :–अंगद किष्किंधा के राजा बाली का पुत्र और सुग्रीव का भतीजा था तथा राम सेना का एक प्रमुख योद्धा था।

(vii) देवी सरस्वती उदारता का गुणगान क्यों नहीं किया जा सकता हैं–

उत्तर :–वाग्देवी सरस्वती की महिमा और उदारता का गुणगान करना इसलिए असंभव हैं क्योंकि वह अमरम्पार है। बड़े–बड़े देवता, ऋषि और तपस्वी ही नहीं अपितु चतुर्मुख बुह्माजी, पंचमुख महादेवजी और षड्मुख कुमार कीर्तिकेय भी उनकी महिमा का वर्णन नहीं कर सके तो भला एक मुख वाला मनुष्य उनकी अपार महिमा का वर्णन

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

कैसे कर सकता है।

(viii) 'चहुं ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी वन पंचवटी।' उपर्युक्त पंक्ति का काव्य सौन्दर्य लिखिए–

उत्तर :– भावपक्ष :– यह पंचवटी गुणो में भगवान शंकर के समान है। जिस प्रकार भगवान शंकर अपने शरण में आए व्यक्ति को मुक्ति प्रदान करते हैं उसी प्रकार जो व्यक्ति इसी पंचवटी के संपर्क में आता हैं अर्थात निवास करता है। उसे अनायास ही मुक्ति प्राप्त हो जाती है। पंचवटी में सर्वत्र मुक्तिरूपी नर्तकी का नृत्य चलता रहता है। यहाँ रहने वाले प्राणियो को बिना प्रयास के ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

कलापक्ष :– कवि ने ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। पंचवटी को शंकर के समान बताया है। अतः उपमा अलंकार है। सवैया छन्द में रचना प्रस्तुत की गई है।

(ix) 'पंचवटी वर्णन' में कवि ने पंचवटी की किन विशेषताओं का वर्णन किया हैं–

उत्तर :–पंचवटी की निम्न विशेषताएं–

(i) पंचवटी पवित्र स्थानों में से एक हैं यहां आने पर लोगो के द्वारा दिए गए पाप भी मिट जाते है।

(ii) पंचवटी में सभी कष्टों का निवारण होता हैं और लोगो को सुख की अनुभूति होती हैं।

(iii) दुष्ट लोग यहां एक क्षण भी नहीं रूक पाते हैं।

(iv) पंचवटी भगवान शिव के समान मुक्ति प्रदान करने वाला स्थान है।

x. सिंधु तरयों उनको बनरा तुम पे धनुरेख गई न तरी।
बांधोई बांधत सो न बन्यो उन बारिधि बांधिकै बाट करी।
श्री रघुनाथ– प्रताप की बात तुम्हें दसकंठ न जानी परी।
तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराई–जरी।

उपर्युक्त काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

उत्तर :–

(i) संदर्भ :–प्रस्तुत छंद केशव दास रचित 'रामचन्द्र चन्द्रिका के अंगद–रावण संवाद' से लिया गया हैं। इसे हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग 2 में रामचन्द्र चंद्रिका शीर्षक से संकलित किया गया है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(ii) प्रसंग :– अंगद जब राम के दूत के रूप में रावण की सभा में गया तो रावण ने राम को नीचा दिखाने के लिए पूछा कि यह राम कौन हैं? अतः उसी की भाषा में उत्तर देते हुए अंगद ने जो कहां उसी का वर्णन यहाँ है।

(iii) व्याख्या :– अंगद रावण से कहने लगा कि राम के आगे तुम्हारी कोई बराबरी नहीं हो सकती है। उनका तो एक छोटा सा वानर अर्थात हनुमान इतने बड़े समुन्द्र को लांघकर लंका तक आ गया और तुम धनुष की उस रेखा को नहीं लांघ सके जो लक्ष्मण जी ने सीता की कुटी के चारों ओर खींच दी थी।

तुम लोगों ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर उनके वानर हनुमान को बांधने का प्रयास किया पर उसे बांध नही पाए और उन्होने समुद्र पर पुल बांधकर अपनी सेना के लिए रास्त बना दिया। अब रावण तुम तो दसकंठ कहे जाते हो, तुम्हारे अंदर तो ज्यादा बुद्धि होनी चाहिए थी पर तुम दस सिरों वाले होकर भी मूर्ख रहे जो मुझसे श्रीराम के प्रताप के बारे में पूछ रहे हो।

हनुमान की पूछ को तेल और रूई लगाकर तुम लोगो ने जलाने का पूरा प्रयास किया पर उसे नहीं जला पाए। हां इस प्रयास में तुम्हारी हीरे–मोती से जड़ी सोने की लंका अवश्य जल गई। हे रावण! यह राम का ही प्रताप हैं और तुम मुझसे पुछ रहे हो कि राम का प्रताप क्या है क्या अब भी तुम्हे राम का प्रताप समझ में नहीं आया ।

(iv) विशेष :– (a) केशव के संवाद पात्रानुकूल है और व्यंजना सौन्दर्य से युक्त है।

(b) काव्यांश की भाषा ब्रज हैं।

(c) तंलनि तुलनि में छेकानुप्रास, जरी–जरी में यमक अलंकार है।

xi. केशवदास का साहित्यिक परिचय लिखिए

उत्तर :–आचार्य केशवदास का जन्म 1555 ई0 में ओरछा नगर में हुआ था। उनके पिता का नाम काशीराम था। ये ओरछा नरेश महाराज इन्द्रजीत सिंह तथा वीरसिंह देव के यहां आश्रय दाता के रूप में रहे है।

केशवदास हिन्दी साहित्य के रीतिकाल की कवि त्रयी के एक प्रमुख स्तम्भ हैं। केशवदासी की रचनाओं में उनके तीन रूप मिलते हैं– आचार्य, महाकवि और इतिहासकार। वे संस्कृत काव्यशास्त्र का सम्यक परिचय कराने वाले हिन्दी के प्राचीन आचार्य और कवि हैं केशव ने ब्रज भाषा में रचनाएं की है। उनकी भाषा में कोमलता और माधुर्य के स्थान पर क्लिष्टता पाई जाती है। उनके काव्य में शब्दो के चमत्कार पर अधिक बल दिया गया है। काव्य में क्लिष्टता के कारण उनको 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा जाता हैं। केशव के काव्य में संवाद योजना अत्यंत प्रभावशाली है। केशव ने अपने काव्य में विविध छंदो का प्रयोग किया हैं

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

कृतिया :– रामचन्द्र चन्द्रिका (रामकथा पर आधारित महाकाव्य), रसिकप्रिया, कविप्रिया, छन्दमाला, विज्ञानगीता, वीरसिंह देव चरित, जहांगीर जसचन्द्रिका, रतन बावनी आदि।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
कक्षा – 12 हिन्दी साहित्य अंतरा भाग –2 (गद्य खण्ड)
प्रेमधन की छाया स्मृति

शेखावाटी मिशन–100

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. आचार्य रामचद्र शुक्ल का बदरीनारायण चौधरी से परिचय कहां हुआ –

   उत्तर :–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का बदरीनारायण चौधरी से परिचय मिर्जापुर में हुआ।

2. भारत जीवन प्रेस की पुस्तके किनके घर से आती थी

   उत्तर :– रामचन्द्र शुक्ल के घर से

3. किस प्रेस की किताबे लेखक के घर से आया करती थी?

   उत्तर :–'भारत जीवन' प्रेस की किताबे प्रायः लेखक के घर से आया करती थी।

4. चौधरी साहब किस स्वभाव के व्यक्ति थे–

   उत्तर :– चौधरी साहब एक खानदानी रईस थे। उनके बात करने का ढ़ंग उनके लेखो से बिल्कुल अलग था वह एक खुशमिजाज और हर बात पर अपने उल्टे व्यंग्य देने वाले स्वभाव के व्यक्ति थे।

5. रामचंद्र शुक्ल के पिताजी को किसके नाटक अतिप्रिय थे–

   उत्तर :– भारतेंदु जी

6. चौधरी 'प्रेमधन' की भाषा की विलक्षण वक्रता से क्या तात्पर्य हैं–

   उत्तर :–'प्रेमधन' साहब की बोलचाल की भाषा अलग अंदाज में विनोद मिश्रित अर्थ लिए हुए रहती थी, जो भाषा को अलग अर्थ प्रदान करती है।

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

7. 'सत्य हरिशचन्द्र' और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र में क्या अन्तर हैं–

उत्तर :–'सत्य हरिशचन्द्र' एक नाटक है जो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखित हैं–

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. रामचन्द्र शुक्ल ने अपने पिताजी की क्या–क्या विशेषताएं बताई हैं–

उत्तर :–रामचन्द्र शुक्ल ने अपने पिताजी की निम्न विशेषताएं बताई–

(i) वे फारसी के अच्छे ज्ञाता और पुरानी हिंदी कविता के प्रेमी थे।

(ii) फारसी कवियों की उक्तियों को हिन्दी कवियों की उक्तियों के साथ मिलाने मे उन्हें बड़ा आन्नद आता था।

(iii) भारतेन्दु जी के नाटक उनको बहुत प्रिय थें।

2. प्रेमधन की छाया स्मृति निबंध से शुक्ल के भाषा परिवेश और प्रारम्भिक रुझानों पर प्रकाश डालिए–

उत्तर :– ज्यो–ज्यों लेखक सयाना होता गया हिन्दी साहित्य की ओर उसका झुकाव बढ़ता गया । उसके पिताजी साहित्य प्रेमी थे भारत जीवन प्रेस की किताबे उनके यहां प्राय आती रहती थी, साथ ही मिर्जापुर में केदारनाथ पाठक ने एक पुस्तकालय खोला था, जहां से किताबे लाकर रामचन्द्र शुक्ल पढ़ा करते थे।

3. निस्सदेंह शब्द को लेकर रामचन्द्र शुक्ल ने किस प्रसंग का जिक्र किया हैं–

उत्तर :– रामचन्द्र शुक्ल अपनी समव्यस्क मित्र–मण्डली में हिन्दी और नए पुराने मित्रों से चर्चा किया करता था। इस चर्चा में निस्संदेह इत्यादि आया करते थे, जबकि जिस स्थान पर लेखक रहता था वहां अधिकत्तर वकील मुख्तार कचहरी मे काम निमटाने वाले अफसर और अमले रहते थे। ये लोग उर्दू को तरहीज देते थे अतः उनके कानो को हम लोगो की हिंदी कुछ अटपटी लगती थी। इसलिए उन्होने लेखक की मित्र मंडली का नाम 'निसन्देह लोग' रख लिया था।

4. समव्यस्क हिंदी प्रेमियो की मंडली में कौन –कौन से लेखक मुख्य थे –

उत्तर :– बचपन में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के समव्यस्क हिन्दी प्रेमियों की मंडली में श्रीयुत् काशीप्रसाद

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

जायसवाल, बाबू भगवान दास जी हालना, पण्डित बदरीनाथ गौड़ और उमाशंकर द्विवेदी प्रमुख थे।

निबंधात्मक प्रश्नः–

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय लिखिए–

उत्तर :– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल उच्च कोटि के आलोचक निबंधकार, साहित्य–चिन्तक एवं इतिहास लेखक के रूप में जाने जाते है। उन्होने अपने मौलिक लेखन संपादन, अनुवादो से हिन्दी साहित्य में पर्याप्त वृद्धि की है।

भाषाः– आचार्य शुक्ल ने संस्कृत तत्सम शब्दावली युक्त तथा मुहावरेदार परिष्कृत खड़ी बोली युक्त तथा मुहावरेदार परिष्कृत खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग किया गया है। आवश्यकतानुसार वे अपनी भाषा में अंग्रेजी और फारसी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग करते है।

शैली : – शुक्ला जी की गद्य शैली विवेचनात्मक हैं। जिसमें विचार प्रधानता, सुख तर्क योजना, सदृश्यता व्यंग्य विनोद का योगदान है। विषय के अनुसार वे कभी व्याख्यात्मक शैली का तो कभी हास्य व्यंग्य प्रधान शैली का प्रयोग करते है।

प्रमुख कृतियां :– चिंतामणी, रस मिमांसा (निबंध), हिन्दी साहित्य का इतिहास तुलसीदास, सूरदास त्रिवेणी (समालोचना), जायसी ग्रंथावली, भ्रमरगीत सार, हिंदी शब्द सागर, काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, आनंद एवं कादम्बिनी पत्रिका (सम्पादन) ग्यारह वर्ष का समय (कहानी), अभिमन्यु वहा बुद्धचरित (काव्य ग्रंथ)

2. बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' की विनोद प्रियता का उदाहरण प्रेमधन की छाया स्मृति पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए–

उत्तर :– चौधरी बद्री नारायण 'प्रेमधन' की विनोद प्रियता तथा उनके कथनों के विलक्षण वक्रता रहती थी जिससे रोचकता की सृष्टि होती थी। ऐसी तीन घटनाए अग्रलिखित हैं।

(i) चौधरी साहब का नौकरों तक के साथ संवाद सुनने लायक होता था। अगर किसी नौकर के हाथ से गिलास गिरता तो वे फोरन कहते 'कारे बचा त नाही' अर्थात क्यों रे बचा तो नहीं

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(ii) एक दिन चौधरी साहब बरामदे मे खड़े थे। वामनाचार्य गिरी चौधरी साहब पर एक छंद बना रहे थे। जिसका अंतिम चरण ही बनने को रह गया था । इस रूप में जब उन्होने चौधरी साहब को देखा तो झट से छंद का अंतिम चरण बना डाला 'खेभा टेकी खड़ी जैसे नारि मुग लाने की ।'

(iii) एक दिन रात को छत पर चौधरी साहब कुछ लोगो के साथ बैठे गप सप कर रहे थे पास मैं लैम्प जल रहा था अचानक बती भयकाने लगी जब रामचन्द्र शुक्ल ने बती कम करने का मन बनाया तो उनके मित्र ने तमाशा देखने के विचार से रोक दिया। चौधरी साहब ने नौकर को आवाज लगाई 'अरे! फुटआई तवै चलत आवहा' अंत में चिमनी ग्लोब के साथ चकनाचूर हो गयी पर चौधरी साहब का हाथ लैम्प की ओर न बढ़ा।

3. 'प्रेमधन की छाया स्मृति' संस्मरण में लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के किन–किन पहलुओ को उजागर किया हैं?

उत्तर :–<u>(i) हिन्दुस्तानी राईस</u> :– उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' एक अच्छे खासे हिन्दुस्तानी रईस थे और उनके स्वभाव में वे सभी विशेषताएं थी जो रइसों में होती हैं।

(ii) <u>भारतेन्दू मंडल के कंवि</u> :– 'प्रेमधन भारतेन्दु मंडल' के प्रमुख कवि थे।

(iii) <u>अपूर्व वचन भंगिमा</u> :– प्रेमधन की बातचीत का ढ़ंग उनके लेखो के ढ़ंग से निकलती थी विलक्षण वक्रता रहती थी।

(iv) <u>मनोरंजक स्वभाव</u> :– प्रेमधन का स्वभाव विनोदशील था वे विनोद प्रवृति के थे और प्राय : लोगो को (मूर्ख) बनाया करते थे। लोग उन्हे भी मूर्ख बनाने के प्रयास में या उन पर मनोंरजक टिप्पणिया करने की जुगत में रहते थे।

<u>सुमिरिनी के मनके</u>

<u>अतिलघुत्तरात्मक प्रश्नः–</u> पण्डित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

1. 'ढेले चुन लो' से क्या तात्पर्य हैं–

उत्तर :–'ढ़ेले चुन लो' एक प्रथा हैं जिसमें विभिन्न प्रकार की मिट्टी के ढ़ेलों को चुनकर पत्नी का चयन करना बताता है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

2. 'ढ़ेले चुन लो' वृतान्त में भारतेन्दु हरिशचन्द्र के किस नाटक का उल्लेख किया गया हैं–

उत्तर :– 'ढ़ेले चुन लो' वृतान्त में भारतेन्दु हरिशचन्द्र के दुर्लभ बंधु नाटक का उल्लेख किया गया हैं।

3. घड़ी के दृष्टांत से लेखक ने किस पर व्यंग्य किया हैं–

उत्तर :– घड़ी के दृष्टांत से लेखक ने धर्म के उपदेशको पर व्यंग्य किया है।

4. शेक्सपीयर के कौनसे नाटक का जिक्र लेखक ने किया हैं–

उत्तर :–लेखक ने शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटक 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' क जिक्र पाठ में किया है।

5. तीन ग्रहसूत्रो का नाम बताएं, जिसमें ढेलों का जिक्र किया गया हैं–

उत्तर :–तीन ग्रहसूत्र, जिसमें ढ़ेलों की लॉटरी का उल्लेख हैं– आश्वलायन और भारद्वज, गोथिल

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. लेखक ने धर्म रहस्य जानने के लिए 'घड़ी के पुर्जे' का उदाहरण क्यों दिया हैं–

उत्तर :– धर्मोपादेशक अपने कथन को घड़ी के उदाहरण से समझते हैं– घड़ी समय जानने के लिए होती हैं। यदि स्वयं व्यक्ति से समय पुछ लो, पर घड़ी ने यही समय पूर्जो को खोलकर उन्हें फिर से जमाने की चेष्टा मत करों ठीक इसी तरह धर्म के बारे में तुम्हें जो बताया जाता हैं वह सुन लो तर्क–विर्तक प्रश्न मत करों।

2. 'ढेले चुन लो' की कहानी का मूल प्रतिपाद्य या संदेश स्पष्ट कीजिए –

उत्तर :– 'ढेले चुन लो' कुछ लघु कथा का प्रतिपाद्य रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध करना हैं। जीवन संगीनी का चुनाव हमें आंख–कान से देखकर सुनकर करना चाहिए। ढेले का स्पर्श करवाकर या पूर्णतः ज्योतिषीय गणना पर निर्भर रहकर जीवन साथी के चुनाव की परम्परा दकियानूसी एवं गलत है।

3. 'अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ी साजी का इम्तहान पास करके आया हैं उसे तो देखने दो' लेखक ने ऐसा क्यों कहा–

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

उत्तर :– जिस प्रकार घड़ी साज को घड़ी ठीक करने देखने का अधिकार मिलता हैं उसी प्रकार लेखक के अनुसार धर्म के ज्ञाता को धर्म का रहस्य जानने और जिज्ञासा व्यक्त करने का अधिकार मिलना चाहिए। जो जानकार हैं उसे जानने का अवसर अवश्य मिलना चाहिए।

4. वैदिक काल में हिन्दुओं में कैसी लॉटरी चलती थी, जिसका जिक्र लेखक ने किया हैं–

उत्तर :– वैदिक काल में स्नातक सुयोग्य पत्नी के चुनाव हेतु कन्या के सामने वेदी गौशाला के ढ़ेले रखे जाते थे। कन्या द्वारा उचित ढ़ेला चुनने पर ही उसका वरण किया जाता था।

5. पं0 चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का साहित्यिक परिचय लिखों–

उत्तर :–<u>साहित्यिक परिचय</u> – संस्कृत, पाली, प्राकृत, अप्रभंश, ब्रज, अवधी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी के साथ अंग्रेजी, लेटिन और फ्रेंच पर भी गुलेरी जी की अच्छी पकड़ी थी। गुलेरी जी ने उनकी भाषा सरल और विषयानुकूल हैं।

<u>शैलीः</u>– साहित्यकार के नाते गुलेरी जी के विविध रूप है। इस कारण आपने विवेचनात्मक वर्णानात्मक, नाटकीय व समीक्षात्मक शैली को अपनाया है।

<u>प्रमुख कृतियाँः</u>– सुखमय जीवन, बुद्धू का कांटा, उसने कहा था(कहानियां)

<u>सम्पादन :</u>–

1. समालोचक	1903–06 ई0
2. मर्यादा	1911–12 ई0
3. प्रतिभा	1918–20 ई0
4. नागरी प्रचारिणी पत्रिका	9120–22 ई0

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

निबंधात्मक प्रश्नः–

1. 'बालक बच गया' निबन्ध की मूल संवेदना पर प्रकाश डालते हुए लेखक के शिक्षा संबंधी विचारो को प्रस्तुत कीजिए–

उत्तर :– लेखक वर्तमान शिक्षा पद्धति रटन प्रवति के विकृत स्वरूप को राष्ट्र के लिए घातक मानते हैं। उनके अनुसार धर्म विज्ञान प्रकृति और पुराण शिक्षा का कोई भी विषय क्यों न हो ठोस शिक्षा और उसका गुढ़ अर्थ ही बच्चे के व्यक्तित्व के लिए आवश्यक हैं। शिक्षा बच्चे पर लादनी नहीं चाहिए बल्कि उसके मानस में शिक्षा की रूचि पैदा करने वाले बीज डाले जाने चाहिए।

2. 'धर्म का रहस्य जानना सिर्फ धर्माचार्या का काम नहीं। कोई भी व्यक्ति उस रहस्य को जानने के हकदार हैं अपनी राय दे सकता है।' टिप्पणी कीजिए–

उत्तर :– धर्म पर कुछ मुट्ठीभर लोगो का एकाधिकार निश्चित रूप से धर्म को संकुचित अर्थ प्रदान करता है। यह मुट्ठीभर लोग नहीं चाहते की धर्म का रहस्य हर कोई जान ले। ऐसा होने पर उनका अधिकार छिन जाएगा और स्वार्थ सिद्ध नहीं हो पाएगा किन्तु जब धर्म का संबंध आम आदमी में जुड़ जाएगा और वह रहस्य जान जाएगा तो निश्चिय ही धर्म उसके विकास में सहायक होगा। तथाकथित धर्माधिकारी धर्म को अपने अधिकार में रखकर पाखण्ड और अंधविश्वास के सहारे आम आदमी को धर्म के नाम पर ठगते हैं इन सबसे आम आदमी तभी बच पाएगा जब वह धर्म के रहस्य को जान पाएगा।

''कच्चा चिट्ठा''

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्नः– ब्रजमोहन व्यास

1. ब्रजमोहन व्यास ने पुरातत्व सामग्री का संकलन संरक्षण किसके लिए किया था–

उत्तर :– प्रयाग संग्रहालय के लिए

2. प्रयाग संग्रहालय के नवीन विशाल भवन का उद्घाटन किसने किया था।

उत्तर :–जवाहर लाल नेहरू ने

शाला्वाणी मिशन–100

3. ब्रजमोहन व्यास ने सन्ग्रहालय के उद्घाटन के बाद संग्रहालय का दायित्व किसे सौंपा–

उत्तर :– डॉ0 सतीशचन्द्र काला को

4. 'मैं तो केवल निमित्र मात्र था। अरुण के पीछे सूर्य था' किसका कथन हैं–

उत्तर :– ब्रजमोहन व्यास का

5. बुढ़िया ने मूर्ति देने के बदले कितने रूपए लिए थे ?

उत्तर :– बुढ़िया ने मूर्ति देने के बदले दो रूपए लिए थे

6. कौशाम्बी और पसोवा नगर क्यों प्रसिद्ध हैं–

उत्तर :– कौशाम्बी और पसोवा नगर क्रमशः बौद्ध और जैन धर्म के प्राचीन धर्मो के प्राचीन तीर्थो के लिए प्रसिद्ध है।

7. 'कच्चा चिट्ठा' किस विधा में लिखा गया हैं–

उत्तर :– आत्मकथा शैली में

8. लेखक का दक्षिण भारत की यात्रा करने का मुख्य उदेश्य क्या था–

उत्तर :–लेखक ने सुन रखा था दक्षिण भारत में ताम्र मूर्तियां एवं हस्तलिखित पोथियों की खरीद फरोख्त होती हैं उन्हे किसी प्रकार से प्राप्त करने का उदेश्य था।

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. लेखक ने संग्रहालय से नेहरूजी का किस तरह का संबंध दिखाया गया हैं पाठ 'कच्चा चिट्ठा' के आधार पर बताऐं।

उत्तर :– लेखक नेहरू जी नवीन संग्रहालय का शिलान्यास करवाना चाहते थे। नेहरू जी ने विख्यात इंजीनियर से

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

नक्शा बनवाया और भवन का शिलान्यास किया।

2. पसोवा की प्रसिद्धि का क्या कारण था और लेखक वहां क्यों जाना चाहता था –

उत्तर :– पसोवा एक बड़ा जैन तीर्थ था। वहां पर एक छोटी सी पहाड़ी की गुफा में बुद्धदेव व्यायाम किया करते थे। यह एक किवदंती हैं कि वही पर सम्राट अशोक ने एक स्तूप बनवाया था जिससे महात्मा बुद्ध के केश और नखखण्ड रखे गए थे लेखक को पसोवा में मृणमुर्तियां सिक्के और मनके मिलें। अतः लेखक वहां की प्रसिद्धि के कारण और कुछ पुरातात्त्विक वस्तुएं प्राप्त करने की आशा से जाना चाहते थे।

3. गॉववालो ने उपवास क्यों रखा और उसे कब तौड़ा? दोनो प्रसंगो को स्पष्ट कीजिए–

उत्तर :–व्यास किसी गांव से एक पेड़ के नीचे रखी शिवजी की चर्तुमुखी मूर्ति उठा लाए थे। गांव वाले उस मूर्ति की पूजा– अर्चना किया करते थे जब उनको पता चला की शिवजी अंर्तधान हो जाए तो उन्होने ठान लिया कि जब तक शिवजी वापस नहीं आएंगे वे अन्न का एक दाना भी नहीं खायेंगें । ग्राम के मुखिया ने इस संबंध मे व्यास जी से विनती की वे मूर्ति को वापिस लौटा दे और मूर्ति को दूबारा से प्रतिष्ठापित होने पर ही गांव वालो ने अपना उपवास तोड़ा।

4. दो रूपये में प्राप्त बोधिसत्व की मूर्ति पर दस हजार रूपए क्यों न्यौछावर किए जा रहे थे–

उत्तर :– बोधिसत्व की जो मूर्ति लेखक ने बुढ़ियां से दो रूपए में खरीदी थी उसको संग्रहालय में रखवा दिया था। एक दर्शक जो संग्रहालय देखने आया था उसको दस हजार रूपए में खरीदना चाहता था क्योंकि इस मूर्ति का निर्माण कुषाण शासक कनिष्क के समय हुआ थां इस प्रकार के लेख मूर्ति के पदस्थल पर उत्कीर्ण था। इस मूर्ति के पुराततव महत्व के कारण ही दर्शक इस पर दस हजार रूपए लुटा रहा था।

5. ब्रज मोहन व्यास का साहित्यिक परिचय लिखिए–

उत्तर :–भाषाः– व्यास जी संस्कृति साहित्य के अध्येता थे। आपकी भाषा परिष्कृत प्रवाहपूर्ण खड़ी हिंदी बोली हैं। भाषा में तत्सम शब्दों के साथ अरबी, फारसी शब्द लोक प्रचलन शब्द अंग्रेजी के शब्द आदि मिलते हैं। यत्र–तत्र मुहावरे का प्रयोग मिलता है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शैली :– वर्णानात्मक शैली का प्रयोग किया जाता हैं साथ विवरणात्मक शैली को भी अपनाया है।

कृतियाँ :–जानकी हरण (कुमारदास कृत) का अनुवाद

पं0 बालकृष्ण भट्ट जीवनी

पं0 मदन मोहन मालवीय जीवनी

मेरा कच्चा चिट्टा आत्मकथ्र

निबंधात्मक प्रश्नः–

1. 'मै तो निमित मात्र था अरुण के पीछे सूर्य था' व्यास जी के इस कथन का आश्य क्या हैं–

उत्तर :– प्रयाग संग्रहालय को बनवाने और उसे स्थापित करने के लिए व्यास जी ने अथक परिश्रम किया था इसको स्थापित करने का पूर्ण श्रेय उनको जाता है परन्तु उन्होने श्रेय प्रकृति को दिया उन्होने स्वयं को अरुण, प्रकाश माना हैं अरुण के पीछे सूर्य होता हैं उसके तेज संसार में फैला अंधियारा दूर होता है। इस लेखक ने स्वयं को अरुण और उसको प्रेरित करने वाला सूर्य, ईश्वर माना है। ईश्वर ने प्रयाग संग्रहालय बनाने का महान कार्य किया हैं लेखक तो केवल निमित मात्र हैं। इस स्वीकृति से व्यास जी की विनम्रता प्रकट होती है।

2. 'कच्चा चिट्ठा' के आधार पर प्रयाग संग्रहालय को ब्रजमोहन व्यास के योगदान पर प्रकाश डालिए–

उत्तर :–व्यास जी पुरातत्व सामग्री को एकत्रित करने की मनोवृति थी। व्यास की प्राचीन वस्तुओं का संग्रह करने के लिए खाक छानते रहते थे। वे लोभ लालच से दूर रहते थें। पुरातत्व महत्व की बोधीसत्व की मूर्ति जो मात्र दो रूपए में मिली थी के दस हजार रूपए मिलने पर भी उन्होनें उनको नहीं बेचा। और एक समृद्ध संग्रहालय का निर्माण करवाया। प्रयाग संग्रहालय के भवन का पं0 नेहरू से शिलान्यास करवाया और उसे संग्रह करके अभिभावक डॉ0 सतीश चन्द्र काला को संग्रहालय के संरक्षण एवं परिवर्द्धन की जिम्मेदारी सौपकर उन्होने संन्यास ले लिया। निश्चिय ही प्रयाग संग्रहालय को निर्मित करने मे ंव्यास जी की महती भूमिका है।

श्रेष्ठाचारी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

संवदिया–

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्नः– 'फणीश्वरनाथ रेणु'

1. 'संवदिया' का क्या अर्थ हैं–

उत्तर :–'संवदिया' का अर्थ हैं 'संदेशवाहक' जो संवाद को हुबहू उसी भाव विचार के साथ सुनाता हैं जिसे जैसा भेजा गया हो।

2. 'सवदिया' किस विधा की कहानी हैं तथा इसका मूलभूत गुण बताइयें–

उत्तर :–'सवदिया' फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित आंचलिक कहानी हैं। इसका मूलभूत गुण मानवीय संवेदना है।

3. माँ ने बड़ी बहुरिया के लिए क्या–क्या भेजा गया था–

उत्तर :–मां ने बड़ी बहुरिया के लिए थोड़ा चूड़ा और बासमति का धान भेजा गया था।

4. गांव के लोग संवदिया को क्या समझते थे–

उत्तर :–गांव के लोगों के अन्दर संवदिया को लेकर एक गलत धारणा थी कि संवदिया का काम कामचोर, निठल्ले और पेटू लोग ही करते है। उनका मानना था कि जिनके न आगे नाथ और न पीछे पगहा हो वही ऐसा काम करते है।

5. 'संवदिया' पाठ में संवदिया का क्या नाम हैं–

उत्तर :–हरगोविन

6. 'फणीश्वरनाथ रेणु' का जन्म कब और कहां हुआ था–

उत्तर :– फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 1921 में आरौही हिगंना जिला–पूर्णिया, बिहार में हुआ था।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

7. हरगोबिन संवाद को लेकर कहां गया था–

उत्तर :–बड़ी बहु के मायके गया था।

8. हरगोबिन को अचरज क्यों हुआ –

उत्तर :–जब बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को बुलाया तो उसे आश्चर्य हुआ कि अब तो गांव–गांव में डाकघर खुल गए हैं, ऐसे में संवदिया का क्या काम आज तो आदमी घर बैठे ही लंका तक खबर भेज सकता है।

9. हरगोबिन संवदिया कहा का रहने वाला था –

उत्तर :– जलालगढ़ का

10. मोदिआइन काकी किस नाम से चिढ़ती थी–

उत्तर :–मोदिआइन काकी काबुली कायदा नाम से चिढ़ती थी।

शेखावाटी मिशन–100

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. बड़ी बहु का संदेश सुनकर हरगोबिन की आंखे क्यो छलछला आई? संक्षेप में बताओं –

उत्तर :– हरगोबिन एक सहृदय व्यक्ति था बड़ी बहु ने जब उसे अपना मार्मिक संदेश सुनाया तो वह भी भावुक हो गया उसने बड़ी बहु को हिम्मत बंधायी। उसे यह जानकर दुख हुआ की बड़ी हवेली की सारी शान–शौकते जब समाप्त हो गयी और बड़ी बहु को खाने के लिए भी लाले हैं जिस परिवार के लिए बड़ी बहु ने अपना सारा जीवन न्यौछावर किया था वो अब उसकी सुध भी नही लेते हैं। बड़ी बहु की दीनदशा देखकर हरगोबिन्द की आंखे भर आई।

2. बड़ी हवेली की बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन्द को क्यो बुलाया–

उत्तर :–पत्नी का सर्वगवास हाने के बाद बड़ी बहुरिया के परिवार ने उनको अकेला छोड़कर शहर में अपना आवास बना लिया। तीनो देवर बड़ी बहु के सारे जेवर छीनकर ले गए जिससे उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो गयी। इसलिए वह अपने घर संदेश भेजना चाहती थी कि वे उसे अपने पास बुला ले।

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

3. बड़ी बहुरिया की दयनीय दशा के कारण बताओं–

उत्तर :– **(i)** पति का आसामयिक निधन होने से परिवार का अनुशासन भंग हो गया।

(ii) देवरों मे लड़ाई झगड़े से घर के सामान का बंटवारा होना।

(iii) रैयतों ने जमीन पर दावा करके जमीन से बेदखल कर दिया।

4. बड़ी बहुरिया का संवाद हरगोबिन क्यों नहीं सुना सका–

उत्तर :–हरगोबिन एक कुशल संवदिया था लेकिन उसको लगा की बड़ी बहु को अपने मायके मे बच्चो की झुठन खानी पड़ेगी बड़ी बहु का संदेश था कि अगर उसे शीघ्र नहीं बुलाया तो वह पोखर में कुदकर जान दे देगी यह संदेश हरगोबिन नही सुना पाया। उसको लगा की बड़ी बहु तो गांव की लक्ष्मी हैं अगर वह मायके में रही तो पुरे गांव की बदनामी होगी

5. फणीश्वर नाथ रेणु का साहिन्यिक परिचय लिखिए–

उत्तर :– साहित्यिक परिचय :– रेणु जी हिन्दी के प्रसिद्ध आंचलिक कथाकार हैं आपने अपनी रचनाओं द्वारा उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की विरासत को आगे बढ़ाया हैं।

भाषा :– अत्यंत ही सशक्त व संवेदनशील हैं। उसमें सम्प्रेषणीयता व भावानुकूलता हैं। उनकी भाषा आंचलिक शब्दों और मुहावरे का प्रयोग सफलतापूर्वक हुआ है।

शैली :– वर्णनात्मक शैली का आधार बनाया है। यत्र–तत्र व्यंग्य शैली व आत्मकथा शैली को अपनाया हैं। इनकी रचनाओं में संवाद शैली का प्रयोग दर्शनीय है।

कृतियां :– उपन्यासः– मैला आंचल, परती परिकथा

कहानी संग्रह :– ठुमरी, अग्निखौर, आदिम रात्रि की महक, तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम

शैक्षाणिक मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

6. बड़ी बहुरिया का संदेश देने में हरगोबिन्द ने क्या–क्या शारीरिक मानसिक कष्ट सहे और क्यो? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए–

उत्तर :– हरगोबिन एक ईमानदार व दृढ़प्रतिज्ञ संवदिया हैं। सर्वप्रथम वह इस उलझन में रहा कि अगर उसने बड़ी बहु का संदेश हुबहू सुना दिया तो पूरे गांव की बदनामी होगी। संवाद दिए बिना लौटते वक्त उसने राह खर्च नहीं लिया और बिना टिकट यात्रा करना उसने उचित नही समझा और पैदल चलकर बीस कौस का रास्ता भुखा –प्यासा तय करता हैं यद्यपी उसके पास बड़ी बहुरिया की मां का दिया चुड़ा और बासमति धान था परन्तु वह बड़ी बहु की अमानत थी उसको वह कैसे रख सकता था। भुख और प्यास की वजह से वह बेहोश भी हो गया यह सब उसने बड़ी बहु एवं गांव के लिए किया क्योंकि वह बड़ी बहुरिया का बहुत सम्मान करता था।

7. 'संवदिया' की परिभाषा बताते हुए इसकी प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए –

उत्तर :–संवदिया वह होता हैं जो एक व्यक्ति का संवाद दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाता हैं और बदले में कुछ पारिश्रमिक पाता हैं। एक अच्छा संवदिया संवाद भेजने वाले की बात हुबहू उसी शब्दों संवेदना और भावनाओं के साथ कहता हैं संवदिया का काम सिर्फ संवाद पहुंचाना ही नही वरन् भावनाओं का सम्प्रेषण भी है।

लधु कथाएँ (शेर, पहचान, चार हाथ, साझा) – असगर वजाहत

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. 'चार हाथ कथा' किस व्यवस्था को उजागर करती हैं–

उत्तर :–'चार हाथ कथा' पूंजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को व्यक्त करती हैं। शोषक की लोलुप प्रवृति व शोषित की पर प्रकाश डालती हैं।

2. 'साझा' कथा में हाथी किसका प्रतीक हैं–

उत्तर :– हाथी समाज के धनाढ़य एवं प्रभुत्वशाली वर्ग का प्रतीक है।

3. शहर तथा आदमियों से डरकर लेखक कहां पहुंचा–

उत्तर :–शहर तथा आदमियों से डरकर लेखक जंगल पहुंचा–

शैक्षणिक मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

4. बहरी, गूंगी, अंधी प्रजा किसको पसंद हैं–

उत्तर :–बहरी, गूंगी, अंधी प्रजा राजा को पसंद हैं

5. हाथी ने किसान के साथ साझा में किसकी खेती की–

उत्तर :–हाथी ने साझा में किसान के साथ ईख की खेती की

6. साझा कहानी का प्रतीकार्थ क्या हैं–

उत्तर :– पूंजीपतियों की नजर उद्योगों पर एकाधिकार करने के बाद किसानों की जमीन पर है। यह साझा कहानी का प्रतीकार्थ हैं।

7. शेर का पात्र कहानी में किस और ईशारा करती हैं–

उत्तर :–शेर का पात्र कहानी में सत्ता की और ईशारा करती हैं।

8. आंखे बंद करने से क्या हासिल होने वाला था –

उत्तर :–मन की शांति मिलने वाली थी।

9. मिल मालिक ने दुगुना उत्पादन करने के लिए क्या किया–

उत्तर :–मिल मालिक ने दुगुना उत्पादन करने के लिए मजदूरी आधी कर दी और दोगुने मजदूर नौकर रख लिए।

10. आंखे बंद करवाने के पीछे राजा का क्या मकसद था–

उत्तर :– राजा ने जनता को अपनी आंखे बंद करने का आदेश दिया ताकि लोग राजा के शोषण और अराजकता के खिलाफ न बोल सके। एक बार आंखे बंद हो जाने के बाद राजा अपनी मनमानी से जनता का शोषण करता रहा।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण हैं विश्वास कहानी के आधार पर टिप्पणी कीजिए–

उत्तर :– लेखक ने जब जानवरों को एक–एक करके शेर के मुंह में जाते देखा तो विचार किया कि ऐसा वे लालच व प्रलोभन के वशीभूत होकर कर रहे हैं। लेखक ने जब शेर के स्टाफ से पूछा की क्या वाकई में शेर के पेट के अन्दर रोजगार का दफ्तर हैं तो उत्तर मिला– 'हॉ सच हैं।' जब लेखक ने पूछा– कैसे? तो उत्तर मिला सब ऐसा ही मानते हैं जब लेखक ने पुष्टि करनी चाही तो बताया गया कि ''प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण विश्वास'' अर्थात जानवरों को विश्वास हैं कि शेर के पेट में रोजगार का दफ्तर हैं और वहां उन्हे नौकरी मिलेगी इसलिए वे निरंतर उसमें जाते जा रहे है।

2. राजा ने कौन–कौनसे हुक्म निकाले व उनके क्या निहितार्थ थे? बताएं–

उत्तर :–राजा ने निम्नलिखित हुक्म निकाले–

1. प्रजाजन अपनी आंखे बंद कर ले।

2. प्रजाजन अपने कानों में पिघला सीसा डाल ले।

3. प्रजाजन अपने होंठ सिलवा ले।

4.प्रजाजनों को कई तरह की चीजे कटवाने और जुड़वाने के हुक्म मिलते रहें।

राजा चाहता था की प्रजा अंधी, गूंगी,बहरी बनकर उसके आदेशो को मानती रहे। उसके बुरे कार्यो को देख न सके और न उसके खिलाफ बोल सकें। वह लोगो के जीवन को स्वर्ग जैसा बनाने का झांसा देकर अपना जीवन स्वर्गमयच बनाता रहता है।

3. मजदूरों को चार हाथ देने के लिए मिल मालिक ने क्या किया और उसका क्या परिणाम निकला–

उत्तर :– मिल मालिक ने सोचा अगर मजदूरों के चार होते तो उसका उत्पादन दुगुना हो जाता। उसने वैज्ञानिको से सलाह ली पर वह सफल नहीं हो सका तब उसने लकड़ी के हाथ लगवाने पर काम नहीं बना। फिर उसने मजूदरो के लोहे के हाथ लगवा दिए जिससे मजदूर मर गए।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

4. 'चार हाथ' लघु कथा पूंजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती हैं। कैसे? इस कथन का अभिप्राय कहानी के आधार पर स्पष्ट करों –

उत्तर :– 'चार हाथ ' लघु वर्तमान में पनप रही मशीनी युग को जीता–जागता उदाहरण हैं यह पूंजीवादी व्यवस्था में चल रही शोषणवदी प्रवति को उजागर करती है। मिल मालिक अपने स्वार्थ को पुरा करने के लिए मजदूरों की स्थिति व हालातो का फायदा उठाकर उनका शोषण करते हैं और हर संभव प्रयत्न करते हैं कि मजदूरी लाचारी और बेबसी में इतना दब जाए की विरोध ही न कर पाए।

5. असगर वजाहत का साहित्यिक परिचय लिखितए–

उत्तर :–असगर वजाहत ने अपनी भाषा में तद्‌भाव शब्दों के साथ उर्दू शब्द व मुहावरें का भी प्रयोग किया हैं। भाषा सहज और सादगी पूर्ण हैं। इनकी भाषा सशक्त भावनुकूल वर्णात्मक शैली के लिए हुए हैं।

कहानी संग्रह – दिल्ली पहुंचना हैं स्विमिंग पुल, सब कहां कुछ, आधी बानी ।

उपन्यास :– रात में जागने वाले, पहर दोपहर तथा सात आसमान, कैसी आणि लगाई।

नाटक :– फिरंगी लौट आए, इन्ना की आवाज वीरगति, समिधा, जिस लाहौर नही देख्या।

निबंधात्मक प्रश्नः–

1. 'साझा' लघु कथा का संदेश अपने शब्दों में लिखों–

उत्तर :–इस कहानी के माध्यम से लेखक संदेश देना चाहता हैं कि उद्योगो पर कब्जा करने के बाद पूंजीपति वर्ग अब किसानों की जमीन भी हड़पना चाहते है। साझा खेत का प्रस्ताव एक झांसा हैं, वे किसान के श्रम का शोषण और उसकी फसल पर कब्जा करना चाहते है। किसान धोखे में रहता हैं और सारी कमाई धनाढ़य लोगो की जेब में चली जाती है। साझा खेती में किसान का हित नहीं है।

2. साझा लघुकथा में लेखक ने किसानों की बदहाल स्थिति पर प्रकाश डाला हैं स्पष्ट कीजिए–

उत्तर :लेखक ने साझा कहानी के माध्यम से आजादी के बाद किसानों की बदहाली एवं उसके कारणो पर प्रकाश डाला हैं। अमीर वर्ग किसान को साझा खेती का प्रस्ताव देकर उसकी जमीन को हड़पने का प्रयास करता हैं इस

शेखावाटी मिशन–100

कहानी में हाथी उन्ही प्रभुत्वशाली पूंजीपतियों का प्रतीक हैं जो साझा नीति पर अमल करते हुए सारी फसल खुद निगल जाते हैं और किसान अपनी बेबसी व लाचारी पर आंसू बहाता है।

3. 'पहचान' कथा में व्याप्त राजा की निरकुंशता एवं छलावा वृति को वर्तमान संदर्भ में प्रस्तुत कीजिए–

उत्तर :–पहचान कथा में शासन की निरंकुशता एवं लालच को दर्शाया गया है। सबसे पहले राजा प्रजा को अंधी, बहरी व गूंगी कर देता हैं ताकि विरोध का स्वर न उठे और आराम से सत्ता सुख भोग सके। वर्तमान में इसी तरह सता का राज हैं जो केवल यही चाहती हैं कि जनता आंख मुंदकर विश्वास करें सता वर्ग प्रगति के नाम पर समस्त साधनों को हड़पकर स्वयं का भला करती हैं। पहचान कथा में निहित सत्य वर्तमान का सर्वेकालिक सत्य प्रस्तुत करता है।

'जहां कोई वापसी नहीं' – निर्मला वर्मा

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. सिंगरौली क्षेत्र को लेखक ने कालापानी क्या बताया –

उत्तर :–सिंगरौली के जंगल प्रकृति सम्पदा से इतने घने और विस्तृत थें जहां कोई आने – जाने का जोखिम नही ंउठाता था।

2. 'जहां कोई वापसी नहीं' पाठ के लेखक कौन हैं–

उत्तर :–निर्मल वर्मा

3. आधुनिक भारत के नए शरणार्थी किनको कहा गया हैं–

उत्तर :–आधुनिक भारत के नए शरणार्थी नवोगांव क्षेत्र से विस्थापित लोगो को कहा गया है। –

4. खैरवार जाति के राजा कब राज किया करते थे।

उत्तर :–1926 से पूर्व सिंगरौली में राज किया करते थे।

5. अमझर गांव किस राज्य में आता है।–

उत्तर :–अमझर गांव मध्यप्रदेश के सिंगरोली राज्य क्षेत्र में आता है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

6. सिंगरौली का नाम पुरानी दंत्यकथा के अनुसार क्या था–

उत्तर :– एक पुरानी दंतकथा के अनुसार सिंगरौली का नाम सृंगावली था। जो एक पर्वमाला के नाम से निकला है।

7. अमरौली प्रोजेक्ट के तहत क्या हुआ–

उत्तर :– अमरौली गांव प्रोजेक्ट के तहत नवागांव अनेक गांव औद्योगीकरण के नाम पर उजाड़ दिये गए ।

8. विरोध के कौनसे स्वरूप का इस्तेमाल अमझर गांव वालों ने किया –

उत्तर :– किसी बात का विरोध जब हम चुप रहकर सत्य के लिए करते हैं तो लेखक इसे मूक सत्याग्रह कहते हैं अमझर गांव वालों ने औद्योगीकरण के विरोध में यह सत्याग्रह किया था।

9. 'जहां कोई वापसी नहीं ' यात्रा वृतांत निर्मल वर्ग के किस संग्रह से लिया गया हैं–

उत्तर :– 'धुध से उठती धुन' से लिया गया है।

शेखावाटी मिशन–100

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. धरती का वातावरण गर्म हो रहा हैं इसमे यूरोप व अमेरिका की भूमिका पर प्रकाश डालिए–

उत्तर :–यूरोप और अमेरिका के बड़े–बड़े कारखानों से निकलने वाली CO_2 आदि जहरीली गैसो से पृथ्वी का तापमान तीन डिग्री सेल्सियस तक बढ़ गया हैं। वातावरण में यह परिवर्तन संसार को विनाश की ओर ले जा रहा हैं।

2. 'जहां कोई वापसी नहीं' शीर्षक पर प्रकाश डालते हुए पाठ की मूल संवेदना लिखिएं –

उत्तर :– इस पाठ में लेखक ने औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप हुई विस्थापन की समस्या का जिक्र किया हुआ हैं। विस्थापन से केवल मनुष्य ही नहीं उसके आवास व परिवेश पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। इन विस्थापित को लेखक ने आधुनिक युग के शरणार्थी कहा है। जो अपने ही देश में अपनों ही के द्वारा भूमि , क्षेत्र प्रकृति से विस्थापित हो जाते हैं।

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

3. प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगिकरण के कारण विस्थापन में क्या अंतर हैं–

उत्तर :– प्रकृति के कारण होने वाला विस्थापन औद्योगिकरण के कारण होने वाले विस्थापन से अलग प्रकार का हैं। बाढ़ या भूकम्प के कारण लोग सुरक्षा की दृष्टि से कुछ समय के लिए ओर संकट हटते ही वापस आ जाते है परन्तु औद्योगिकरण के कारण विस्थापित लोग फिर कभी भी वापस अपने मूलस्थान पर नहीं लौट पाते है।

4. अमझर से आप क्या समझते हैं। अमझर गांव सुनापन क्यों हैं–

उत्तर :– 'अमझर' एक गांव का नाम हैं जिसका अर्थ हैं– आम के पेड़ो से घिरा गाँव जहां आम झरते हैं। पिछले कुछ वर्षो से यहां पर सूनापन है न तो आम पकते हैं न ही गिरते हैं। कारण पूछने पर पत्ता चला कि जब से सरकारी घोषणा हुई है। कि अमरौली प्रोजेक्ट के अर्न्तगत नवागांव के अनेक गाँव जिनमे ंअमझर भी शामिल हैं उजाड़ दिए गए जाएगें तब से न जाने कैसे आम के पेड़ सुखने लगे है।

5. निर्मला वर्मा का साहित्यिक परिचय लिखों–

उत्तर :–निर्मला जी नयी कहानी आंदोलन के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर माने जाते हैं। निर्मल वर्मा क भाषा सझक्त, प्रभावपूर्ण और ग्सावट से युक्त है। उनकी भाषा में उर्दू और अंग्रेजी के शब्द भी मिलते हैं। मिश्र और संयुक्त वाक्य की प्रधानता हैं शब्द चयन स्वाभाविक हैं। वर्णात्मक, विवेचन एवं मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रचुर प्रयोग किया है।

कृतियाँः– कहानी संग्रह :– परिदें, जलती झाड़ी, तीन एकांत पिछली गरमियों में, कव्यों और काला पानी

उपन्यास :–वे दिन, लाल टिन की छत

यात्रा संस्मरणः– हर बारिश में, चीड़ों पर चांदनी, धुंध से उठती धुन

निबन्ध संग्रह :– शब्द और स्मृति, कला का जोखिम तथा ढ़लान से उतरते हुए

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

निबंधात्मक प्रश्नः–

1. निर्मलजी की सिंगरौली क्यों गए थे और उन्होने वहां जाकर क्या निष्कर्ष निकाला –

उत्तर :–सिंगरौली प्राकृतिक खनिज संपदा से परिपूर्ण क्षेत्र था। उसके खनन के लिए वहां से लोगो को विस्थापित कर दिया गया। नई सड़के व पुल बनाए गए हैं ताप विद्युत ग्रहो का निर्माण हुआ। विकास की इस प्रक्रिया से कितने व्यापक पैमाने पर विनाश हुआ इसका जायजा लेने निर्मल जी सिंगरौली गए थे। निर्मल ने वहां देखा की विकास के चक्के में आम आदमी को पिसा जा रहा हैं। विकास का चेहरा मानवीय होना चाहिए परन्तु हमारे सत्ताधारियों ने विकास के यूरोपीय मॉडल को अपनाकर भारतीय पर्यावरण के विनाश का मार्ग प्रशस्त किया हैं।

2. औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया हैं क्यों और कैसे –

उत्तर :– औद्योगीकरण से विकास को तो गति मिलती हैं परन्तु पर्यावरण को हानि पहुंचती है। वनो की कटाई औद्योगिक कचरे का निस्तारण, जहरीली गैसो का उत्सर्जन वायु प्रदुषण के कारक हैं। अनेक लोगो को विस्थापन की समस्या से झुझना पड़ता हैं जिसके कारण वे अपनी संस्कृति से कट जाते हैं। बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएं, भोपाल गैस त्रासदी दुर्घटनाएं औद्योगिकरण की ही देन है।

3. सिंगरौली की उर्वरा भूमि तथा उस इलाके की सम्पदा ही उसके लिए अभिशाप बन गयी सिद्ध कीजिए–

उत्तर :– सिंगरौली की उर्वराभूमि और वनसम्पदा के सहारे हजारों वन वासियों ने अपने परिवार का पालन पोषण किया है और कर रहे थे आज सिंगरौली की अतुल्य संपदा ही उसक अभिशाप का कारण बन गई। विस्थापन की लहर रिहन्द बांध बनाने से शुरू हुई जिसके कारण अनेक गांव उजाड़ दिए गए । चारो तरफ की हरियाली खत्म करके पक्की सड़के व पुल बनाए गए।

नोटः – सिंगरौली का विंध्याचल की पर्वत मालाओ, जंगलो तथा प्राकृतिक सम्पदा के कारण वैकुण्ड माना जाता है। यातायात के साधनों के अभाव मं तथा दुर्गम वनभूमि होने के कारण कालापानी माना जाता हैं।

शिक्षावाणी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

दूसरा देवदास– ममता कालिया'

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. ममता कालिया की कहानी दूसरा देवदास का नायक कौन हैं ?

उत्तर :–संभव

2. संभव की पारों से पहली मुलाकात कहां हुई–

उत्तर :–संभव की पारों से पहली मुलाकात हर की पौडी पर हुइ ?

3. 'दूसरा देवदास' कहानी में किसका वर्णन हैं?

उत्तर :–'दूसरा देवदास' कहानी में यूवा मन की संवेदनाओं का वर्णन हैं

4. मंसा देवी किस रूप में विराजमान थी ?

उत्तर :– मंसा देवी चामुंडा रूप धारण किए हुए विराजमान थी।

5. रोपवे किस कम्पनी का था?

उत्तर :– रोपवे 'उषा ब्रेको सर्विस' नाम की कम्पनी का था।

6. लाल रंग का कलवा बांधने के लिए पंण्डित जी को संभव ने कितने रूपए का नोट दिया?

उत्तर :– दो रूपए का नोट दिया।

7. गंगा घाट किस–किस देवता की मूर्ति रखी हुई हैं?

उत्तर :– गंगा घाट पर गंगा की मूर्ति के साथ–साथ चामुंडा, बाल कृष्ण, राधाकृष्ण, हनुमान और सीताराम की मूर्तिया रखी थी।

8. लोग वहां आरती करने क्यों जाते हैं?

उत्तर :– किसी मन्नत या मनोकामना के पूरा हो जाने के बाद लोग खुशी का इजहार करने या गंगा मां का

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

आशीर्वाद प्राप्त करने वहां जाते थे।

9. संभव को रात को नींद क्यो नहीं आती हैं ?

उत्तर :– संभव को नींद न आने की वजह पारो थी। वह उसके प्रेम में पागल की भाँति रातभर उसके बारे में सोचा करता था।

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. नीलांजलि क्या हैं?

उत्तर :–नीलांजलि पांच मंजिला पीतल का यंत्र हैं जो आरती के काम आता है। इसमें हजारों बत्तिया घी में भिगोकर रखी जाती है। इस प्रकार जलते हुए दीये भव्य दृश्य उत्पन्न करते है।

2. गंगा पुत्र कौन होते हैं और उनकी आजीविका कैसी चलती हैं–

उत्तर :–लेखक ने गंगा पुत्र उन लड़को को कहा हैं जो चढ़ावे के पैसे नदी की धाराओं में गोता लगाकर ले आते है। वास्तव में जब श्रद्धालु श्रदा के फलस्वरूप जब नदी में पैसा डालते हैं तब यह गोताखोर अपनी जान जोखिम मे डालकर पैसे ले आते हैं इससे ही इनकी आजीविका चलती है।

3. मनोकामना की गांठ भी अद्भुत अनोखी हैं कैसे दूसरा देवदास पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर :–गंगा घाट पर पारों की संभव से भेंट हुई थी पुजारी ने उन्हे पास खड़ा देखकर भ्रम से पति–पत्नी समझकर खुश रहने का आशीर्वाद दिया इससे लड़की सकपकाकर दूर खड़ी हो गयी परंतु इससे दोनो के मन में प्रेम का अंकुरण हो गया था। आज देवी के दर्शन के बाद लड़की ने कलावे की गांठ बांधते समय जो मन्नत मांगी उसी का परिणाम था की लड़के से फिर से मुलाकात हो गयी। वह सोचने लगी मनोकामना की यह गांठ कैसी अद्भुत हैं इधर बांधो तो उद्यर लग जाती हैं अर्थात इधर गांठ बाधने पर उधर मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

4. ममता कालिया की साहित्यिक परिचय लिखिए?

उत्तर :–ममता कालिया का भाषा पर पूरा अधिकार है। शब्दों की अच्छी परख है। तत्सम शब्दावली व तदभव और लोक प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है। भाषा प्रवाह पूर्ण वर्ण्य विषय के अनुकूल है। वर्णनात्मक और

श्रेयार्थी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

विवेचनात्मक शैली है।

कृतियां :– उपन्यास – बेधर, नरक दर नरक, एक पत्नि के नोट्स, प्रेम कहानी, लड़कियां, दौड़ इत्यादि।

कहानी संग्रह :– 'सम्पूर्ण कहानिया' 'पच्चीस साल की लड़की' 'थियेटर रोड़ के कौवे'

2004 में साहित्यि भूषण सम्मान मिल चुका है।

निबंधात्मक प्रश्नः–

1. प्रेम के लिए किसी भी निश्चित व्यक्ति समय और स्थिति का होना आवश्यक नहीं हैं दूसरा देवदास कहानी के आधार पर उपर्यूक्त पंक्ति को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर :– संभव अपनी नानी के घर हरिद्वार आया था। घर की पौड़ी पर स्नान के बाद मंदिर में पूजा की। नानी के कहने के अनुसार उसने मंदिर में सवा रूपए चढ़ाने वह मंदिर में गया तभी वहां एक पास लड़की आकर खड़ी हो गयी पुजारी ने उन दोनो को पति–पत्नी मान लिया और खुश रहने का आशीर्वाद दिया इसके बाद दोनो वहां से चले गए। परंतु इस छोटी सी मुलाकात ने संभव के मन हलचल उत्पन्न कर दी।

2. दूसरा देवदास कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए?

उत्तर :– 'दूसरा देवदास' कहानी में लेखिका ममता कालिया ने युवा मन की भावुकता संवेदना तथा वैचारिक चैतना को अभिव्यक्त किया है। कहानी का नायक संभव दिल्ली का शिक्षित युवा हैं जो हरिद्वार में अपनी नानी के पास आया है। गंगा दर्शन के लिए जब मंदिर जाता है तो एक लड़की से मुलाकाता होती है। मंदिर का पुजारी उनको भ्रमवंश पति–पत्नि समझ लेता हैं और खुश रहने का आशिर्वाद देता हैं। इस घटना के संभव उससे प्रेम करने लगता है।कहानी में लेखिका ने प्रेम के स्वरूप को रेखांकित किया है।

3. 'दूसरा देवदास' में वर्णित गंगा पुत्रों की जीवन चर्चा पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर :–गंगापुत्र उन गोताखोरो को कहां जाता हैं जो गंगाघाट पर हर समय मौजूद रहते है। लोगो द्वारा चढ़ाए गए चढ़ावा इनकी आजीविका का साधन होता है। लौग जब चढ़ावे के पैसे गंगा की लहरों में बहा देते है। ये गोताखोर गोता लगाकर उनको ले आते है। इस प्रकार इन गोताखारो अर्थात गंगापुत्रों जीवन गंगाघाट पर ही व्यतीत हो जाती है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
सप्रसंग व्याख्या

1. हिन्दी के नए–पुराने लेखको की चर्चा बराबर इस मंडली में रहा करती थी। मैं भी अपने को एक लेखक मानने लगा था। हम लोगो की बातचीत प्राय लिखने–पढने की हिन्दी में हुआ करती जिसमें निस्सन्देह इत्यादि शब्द आया करते थे जिस स्थान पर मै रहता था वहा अधिकतर वकील, मुख्तारों तथा कचहरी के अफसरो और अमलो की बस्ती थी। ऐसे लोगो के उर्दू कानो मे हम लोगो की बोली कुछ अनोखी लगती थी इसी से उन्हाने हम लोगो का नाम निस्सन्देह लोग रख छोड़ा था।

संदर्भ : – प्रेमधन की छाया स्मृति नामक पाठ से लिए गए गद्यावतरण के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल है। संस्मरणात्मक निबंध हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग – 2 में संकलित है।

प्रसंग :– मिर्जापुर में शुक्ल जी युवावस्था तक पहुंचते–पहुंचते अपने दोस्तो से हिन्दी में चर्चा परिचर्चा करते थे और ये लोग निस्सन्देह जैसे शब्दों पर बहस किया करते थे। उर्दू प्रेमियो को उनके ये शब्द बहुत ही खटकते थे इसलिए उन्होने व्यंग्य से उन लोगो का नाम निस्सन्देह लोग रख दिया था।

व्याख्या :– शुक्ल जी ने अपने जिन समवयस्क मित्रों की हिन्दी प्रेमी मंडली का उल्लेख किया हैं उनमें काशीप्रसाद जायसवाल, भगवानदास जी हालना बदरीनाथ उमाशंकर द्विवैदी प्रमुख थे। इस मंडली में प्रायः हिन्दी के नए पुराने लेखको मे चर्चा होती रहती थी और बहस करते समय ये लोग शुद्ध परिनिष्ठित हिन्दी का प्रयोग करते थे जिसमें निस्सन्देह जैसे शुद्ध हिंदी के शब्दों का आना स्वाभाविक ही था। शुक्ल जी जिस मोहल्ले में रहते थे उनमें अधिकतर कचहरी के बाबु, वकील मुख्तारों और सरकारी कर्मचारी रहते थे जिनका वास्ता उर्दू से अधिक पड़ता था उनके कान उर्दू सुनने के अभ्यस्त थे। उनके कानो में जब इनके शुद्ध हिन्दी के निस्सन्देह जैसे शब्द सुनाई पड़ते थे तो उन्हे बड़ा अजीब लगता था इसलिए व्यंग्य में उन्होंने इन लोगो का नाम ही निस्सन्देह लोग रख दिया था।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

विशेष :– **(i)** यहां लेखक व उनके हिंदी प्रेमी साथी लोगों की परिनिष्ठित खड़ी बोली के बारे में बताया गया है।

(ii) शुक्ल जी के आस–पास उर्दू बोलने वाले रहते थे अतः उन्हे हिन्दी के शब्द अखरते थे।

(iii) भाषा सरल सहज और प्रभावपूर्ण है।

(iv) शैली संस्मरणात्मक है।

(ii) सुमरिनी के मनके :–

बालक के मुख पर विलक्षण रंगों का परिवर्तन हो रहा था ह्रदय में कृत्रिम और स्वाभाविक भावो की लड़ाई झलक आंखो में दिख रही थी। कुछ खांसकर गला साफ करके नकली परदे के हट जाने पर स्वयं विस्मित होकर बालक ने धीरे से कहा 'लड्डू' पिता और अध्यापक निराश हो गए। इतने समय तक मेरा विश्वास घुट रहा था। अब मैने सुख भरी सांस ली। उस सबसे बालक की प्रवृतियों का गला घोटने में कुछ उठा नहीं रखा था पर बालक बच गया । उसके बचने की आशा हैं क्योंकि वह लड्डू की पुकार जीवित वृक्ष के हरे पत्तो को मधुर मर्मर था। मरे काठ की आलमारी की सिर दुखाने वाली खड़खड़ाहट नहीं।

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियों 'सुमिरिनी के मनके' शीर्षक के पाठ के प्रथम अंश बालक बच गया से ली गई हैं इस पाठ के लेखक प्रसिद्ध कहानीकार पं चन्द्रेधर शर्मा गुलेरी जी हैं और यह हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग 2 में संकलित है।

प्रंसग:– विद्यालय के वार्षिकोत्सव में आठ वर्षीय बालक प्रतिभा का प्रर्दशन कर रहा था तरह–तरह के सवालो के बालक रटे–रटाऐ जवाब दे रहा था उनको सुनकर सभी बहुत खुश हो रहे थें। एक वृद्ध महाश्य ने जब बच्चे के सिर पर हाथ रखकर मनचाहा इनाम मांगने को कहा तो जवबा मिला 'लड्डू' । लेखक निष्कर्ष निकालता हैं कि यह बच्चे की स्वाभाविक प्रवृति थी।

व्याख्या :– वृद्ध द्वारा इनाम मांगे जाने की सुनकर बालक के ह्रदय में एक द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न हो गई थी । रटे हुए उत्तर देते रहने से उसके मन मे एक बनावटी पन सा आ गया था और बालपन के कारण उसके मन में स्वाभाविक भाव भी उमड़ रहा था। ये दोनो भाव उसके चेहरे से झलक रहे थे। अतः वह अपनी स्वभाविक बात

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

कहने में उत्साहित हैं गला साफ करना उसी का संकेत था। जब वह लड्डू की मांग रखता हैं। तो लेखक

संतुष्ट होता हैं। क्योंकि उसकी स्वभाविक रूची के अनुसार मांग थी । शिक्षको ने बालक को बाल सुलभ व्यवहार के विपरित आचरण करने अर्थात रटन्त विद्या सिखाने में कोई कमी नही रखी परंतु बाल सुलभ प्रवृति नैसर्गिक हैं उसको दबाया नही जा सकता । उस समय बालक वह मनोभाव बुद्धि की शुष्कता और सुखे काठ की आलमारी की खड़खड़ाहट न होकर हरे भरे वृक्षो की सरसता और मधुर स्वरो का प्रतीक था उससे भविष्य की संभावनाएं व्यक्त हो रही थी।

विशेष :– **(i)** यहा लेखक ने बालको की सुक्ष्म प्रवृतियों को स्पष्ट किया है।

(ii) श्वास घुटना और गला घोटना जैसे मुहावारे के प्रयोग से वर्णन में जीवंतता, लाक्षणिकता, चित्रात्मकता की विशेषताए आ गई है।

(iii) भाषा सरल और सहज प्रवति की है।

(iv) वर्णनात्मक शैली में अवतरण है।

(iv) 'कच्चा चिट्ठा' :–

मै तो केवल निमित मात्र थां अरुण के पीछे सूर्य था। मैने पुत्र को जन्म दिया उसका पालन पोषण किया बड़ा हो जाने पर उसके रहने के लिए विशाल भवन बना दिया, उसमें उसका गृह प्रवेश करा दिया, उसके संरक्षण एवं परिवर्धन के लिए एक सुयोग्य अभिभावक डॉ सतीशचन्द्र काला को नियुक्त किया गया और फिर मैने संन्यास ले लिया।

संन्दर्भ :– यह अवत्तरण हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग 2 के पाठ कच्चा चिट्ठा से लिया गया है। इसके लेखक ब्रजमोहन व्यास हैं।

प्रसंग :– ब्रजमोहन व्यास ने अथक मेहनत करके अनेक कठिनाईयों एवं बाधाओं पर विजय प्राप्त करके एक संग्रहालय की स्थापना की। परन्तु इसकी स्थापना का श्रेय खुद न लेकर प्रकृति को देते है। और संग्रहालय को सुव्यवस्थित रूप से स्थापित करके उसके संरक्षण और परिवर्द्धन की जिम्मेदारी सुयोग्य व्यक्ति को देकर स्वयं

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

संन्यास ले लेता है।

व्याख्या :– व्यास जी प्रयाग संग्रहालय के संस्थापक थे परंतु इसका श्रेय वे निति नियंता को देते हैं एवं स्वयं को केवल निमित मात्र ही घोषित करते हैं। व्यास जी कहते हैं मैं तो केवल कारक हूं कर्ता तो कोई और ही हैं आकाश में अरूणोदय होते ही अंधकार दूर हो जाता हैं परंतु वास्तव में उस अरूण, प्रकाश के पीछे बल किसी और अर्थात सूर्य का होता है। व्यास जी कहते हैं। उन्हाने जो कुछ भी किया है।उसके पीछे वास्तविक कारक परमपिता परमेश्वर ही हैं उनके बिना इतना बड़ा कार्य संभव नहीं हैं जैसे हम बच्चे को जन्म देकर उसका लालन पालन करते है। उसके बड़े हाने पर उसको घर बनाकर देते हैं ठीक उसी प्रकार व्यास जी ने संग्रहालय को स्थापित किया उसको सुव्यवस्थित रूप से नए भवन में संरक्षित व संचालित किया और उसके संरक्षण एवं परिवर्द्धन की जिम्मेदारी एक योग्य संरक्षक डॉ सतीशचन्द्र काला को सौपी। अंत में खुद को इस कार्य से विरत कर लिया।

विशेष :– **(i)** व्यास के व्यक्तित्व में अद्‌भुत विनम्रता है।

(ii) विवरणात्मक व आत्मकथात्मक शैली है।

(iii) भाषा सरल और सहज प्रवति की है।

(iv) संवदिया :–

संवदिया डटकर खाता हैं और अफरकर सोता हैं किन्तु हरगोबिन्द को नींद नहीं आ रही हैं। उसने क्या किया? क्या कर दिया? वह किसलिए आया था? वह क्यो झुठ बोला? .... नही, नहीं सुबह उठते ही बुढ़ी माता को बड़ी बहुरिया का सही संवाद सुना देगा—— अक्षर, अक्षर मायजी, आपकी इकलौती बेटी बहुत कष्ट में है। आज ही किसी को भेजकर बुलवा लिजिए। नहीं तो वह सचमुच कुछ कर बैठेगीं। आखिर किसलिए वह इतना सहेगी। ——— बड़ी बहुरिया ने कहां हैं भाभी के बच्चों की झुठन खाकर वह एक काने में पड़ी रहेगी।

संदर्भ :–

प्रस्तुत गंद्याश हमारी पाठ्य पुस्तक कें अंतरा भाग 2 के पाठ संवदिया से लिया गया है। इस पाठ के लेखक फणीश्वरनाथ रेण है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

प्रसंग :– इस अवतरण में हरगोबिन नाम का संवदिया अपने गांव की बड़ी बहुरानी का संदेश लेकर उसके मायके जाता है। परन्तु भावावेश में आकर सही संदेश नही सुनाता है और बाद उसी विषय पर उसका मन मस्तिष्क उथल– पुथल करता है।

व्याख्या :– लेखक बताते हैं कि संवदिया को विशेष महत्व दिया जाता था। उसको स्वादिष्ट व्यंजन खिलाए जाते और वह खुब मस्त नींद में बेपरवाह सोता है। परन्तु हरगोबिन्द को आज नींद नही आ रही थी क्योंकि उसने अपना कार्य ठीक ढ़ग से पूरा नहीं किया था क्योंकि उसने जो संदेश सुनाया था वो गलत था जिसका उसे अपराध बोध हो रहा था उसको इसकी ग्लानी थी वह उसका पश्चाताप करता हुआ सोच रहा था कि वह सुबह उठते ही माँजी को सारी बाते सही–सही बता देगा 'कि माँजी आपकी बटी इस समय बहुत कष्ट में हैं वह बहुत दुख झेल रही है। सही वक्त पर उसको खाना भी नहीं मिल पाता हैं आखिर कब तक बथुआ साग खाती रहेगी किसके लिए वह इतना कष्ट सहन कर रही हैं कोइ भी तो नहीं हैं उसका अतः आप जल्दी से अपने पास बुला ले वरना सच में वह किसी दिन अपनी तंगहाली से परेशान होकर कुछ गलत कर बैठेगी जिसका बाद में अफसोस होगा। वह मायके में भाभी के बच्चो की जुठन खाकर भी गुजारा कर लेगी परंतु वहा उससे अब और नहीं सहा जाएगा। इस प्रकार अंर्तद्वन्द्व की स्थिति हरगोबिन संवदिया को सोने नही दे रही ।

विशेष :– **(i)** मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोगहै।

(ii) भाषा सरल और सहज प्रवति की है।

(iii) हरगोबिन्द के अंर्तद्वन्द्व की स्थिति का वर्णन है।

(v) लघु कथाएं– असगर वजाहत :–

कुछ दिनो के बाद मैने सुना की शेर अहिंसा और सह –अस्तित्ववाद का बड़ा जबरदस्त सर्मथक हैं इसलिए जंगली जानवरो का शिकार नहीं करता। मैं सोचने लगा शायद शेर के पेट में ये सारी चीजे हैं, जिनके लिए लोग वहा जाते हैं। और मैं भी एक दिन शेर के पास गया । शेर आंखे बंद किए पड़ा था और उसका स्टाफ ऑफिस का काम निपटा रहा था। मैने वहां पूछा, ''क्या यह सच हैं कि शेर साहब के पेट के अन्दर रोजगार का दफ्तर हैं? बताया गया की यह सच हैं?

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तिया असगर वजाहत की लघु कथा शेर से ली गई है। जो हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग 2 में संकलित है।

प्रसंग :– इस अवतरण में बताया गया हैं कि शेर जंगल में मुह खोलकर बैठा हैं और जंगल के जानवर अपने स्वार्थ से वशीभूत होकर उसके मुहं में समाते जा रहे हैं। लेखक ने वहां की वास्तविकता जानी पर वहां ऐसा कुछ नहीं मिला जिसका बखान किया जा रहा था।

शेखावाटी मिशन–100

व्याख्या :– शेर का प्रचारतंत्र बहुत मजबूत था उसने यह प्रचारित करवा दिया था कि वह अहिंसावादी है। और सबको साथ लेकर काम करने में विश्वास करता है। अब वह जानवरो का शिकार नहीं करता है। इसलिए उनको डरने की जरूरत नहीं हैं। लेखक विचार करने लगा कि शेर के पेट में जरूर हरी घास का मैदान और रोजगार का दफ्तर या स्वर्ग विद्यमान हो जिसके प्रलोभन में वे लोग उसके पेट में समाते जा रहे हैं। एक दिन जब लेखक वास्तविकता का पता लगाने शेर के पास पहुंचता हैं तो देखता है कि वहां शेर आंख बंद करके लेटा हैं और उसके ऑफिस के कर्मचारी काम निपटा रहे थे। जब लेखक ने पुछा कि क्या यह सच हैं कि शेर के पेट में रोजगार कार्यालय हैं तब उसको बताया गया कि यह सच है।

वशेष :– **(i)** प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग है।

(ii) भाषा सरल और सहज व स्पष्ट है।

(iii) शेर व्यवस्था, शासन तंत्र का प्रतीक है।

(vi) 'जहां कोई वापसी नहीं' :–

''ये लोग आधुनिक भारत के नए शरणार्थी हैं जिन्हे औद्योगिकरण के झंझावत ने अपने घर जमीन से उखाड़कर हमेशा के लिए निर्वासित कर दिया हैं। प्रकृति और इतिहास के बीच गहरा अंतर हैं। बाढ़ या

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

भूकंप के कारण लोग अपना घर–बार छोड़कर कुछ अरसो के लिए जरूर बहार चले जाते है। किन्तु आफत टलते ही वे अपने जाने पहचाने परिवेश में लौट आते हैं। किन्तु विकास और प्रगति के नाम पर जब इतिहास के लोगो को उन्मूलित करता हैं तो वे फिर कभी अपने घर वापिस नहीं लौट पाते। आधुनिक औद्योगिकरण की आंधी में सिर्फ मनुष्य ही नही उखड़ता बल्कि उसका परिवेश और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है।

संदर्भ :–

दिया गया गद्य अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग– 2 के पाठ जहां कोई वापसी नहीं से लिया गया है। इस पाठ के लेखक निर्मल वर्मा हैं।

प्रसंग :– प्रस्तुत गद्यांश के लेखक ने औद्योगिकरण के कारण विस्थापित हुए लोगो के दर्द को साझा किया हैं कि वे किस प्रकार से अपने ही देश में शरणार्थी बन गए है।

शेखावाटी मिशन–100

व्याख्या :– प्रायः व्यक्ति अपने मूल निवास स्थान से किसी प्राकृतिक आपदा या संकट के समय कुछ समय के लिए अलग हो जाता हैं परन्तु झंझावत के शांत होते ही वापस अपने मूल निवास स्थान पर आ जाते हैं। परन्तु औद्योगिकरण की वजह से विस्थापित हुए लोग अपने ही देश मे स्थायी शरणार्थी बन जाते है। क्योंकि उन्हे अपना घर–बार हमेश के लिए छोड़ना पड़ता है। वहां वे कभी वापस नहीं आ पाते है। प्राकृतिक प्रकोप तो कुछ समय के लिए आता है परन्तु औद्योगिकरण के द्वारा दिया गया घाव हमेशा के लिए होता है।इसके द्वारा उखाड़े गए लोग सदा के लिए अपना परिवेश और संस्कृति छोड़ने के लिए विवश हो जाते है उनके आवास स्थलो को सदा के लिए नष्ट कर दिया जाता है।

विशेष :– **(i)** भाषा सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण है।

(ii) शैली विवरणात्मक और विचारात्मक है।

(iii) औद्योगिक विस्थापन पर चिंता व्यक्त की है।

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(vii) दूसरा देवदास :–

भीड़ लड़के ने दिल्ली में देखी थी बल्कि रोज देखता था दफ्तर जाती भीड़, खरीद– फरोख्त भीड़ तमाशा देखती भीड़, सड़क क्रोस करती भीड़। लेकिन इस भीड़ का अंदाज निराला था इस भीड़ में एक सूत्रता थी। न यहां जाति का महत्व था न भाषा का, महत्व उद्देश्य का था और सबका समान था जीवन के प्रति कल्याण की कामना। इस भीड़ में दौड़ नही थी, अतिक्रमण नहीं था और भी अनोखी बात यह थी कि कोई भी स्नानार्थी किसी सैलानी आनंद में डूबकी नही लगा रहा था बल्कि स्नान से ज्यादा समय ध्यान ले रहा था ।

संदर्भ :–

प्रस्तुत पंक्तिया दूसरा देवदास नामक कहानी से ली गई है। इसकी लेखिका कहानिकार ममता कालिया है। यह कहानी हमारे पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग – 2 से संकलित हैं।

प्रसंग :– संभव दिल्ली में रहने वाला हैं और अपनी नानी के घर दिल्ली आया हैं वहां वह भीड़ देखता जो दिल्ली की भीड़ से एकदम अलग जो आध्यात्मिकता के सूत्र में बंधी हुई हैं।

व्याख्या :– संभव ने भीड़ दिल्ली में देखी थी बल्कि रोज ही देखता है कार्यालय जाती भीड़, समान खरीदती भीड़, मनोरंजन करती भीड़, पर हर की पौड़ी हरिद्वार में गंगा स्नान के लिए आयी भीड़ एकदम अलग है। इस भीड़ का अंदाज निराला हैं और सबका उद्देश्य समान है। अतः भीड़ में अनुशासन हैं। मेले में एकत्रित भीड़ का धर्म, भाषा, जाति सब अलग–अलग हैं। पर यहां पर वो सब गौण हैं उद्देश्य की एकरूपता, स्नान करके पूण्य लाभ कमाना–प्रमुख हो गई है। सबके हृदय में जीवन कल्याण की कामना प्रमुख थी दिल्ली की भीड़ में आपस में प्रतिस्पर्धा थी। परंतु यहा पर सभी लोग स्नान ध्यान में व्यस्त थे। स्नान से सभी ज्यादा ध्यान लगाकर भीड़ के लोग अपने जीवन में कल्याण की कामना कर रहे थे।

fo"ks'k % **(i)** भाषा सरल, सहजता से लिए हुए हैं तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है।

(ii) भारतीय संस्कृति की विशेषता अनेकता में एकता का उल्लेख किया गया है।

ओंगाणी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
कम्प्यूटर शिक्षा और आवश्यकता

1. मुख्य बिन्दु :–

(i) प्रस्तावना

(i) शिक्षा मंत्री के दायित्व–

(i) शिक्षा मंत्री के रूप में अभिनव प्रयास–

(i) योजना क्रियान्विति के प्रयास

(i) उपसंहार –

(i) प्रस्तावना :–

शि़क्षा सभी प्रकार के विकास का मूलभूत साधन हैं। इसके अभाव मे ॅसरकार कितनी भी योजनाएं बनाए, उसकी क्रियान्विति संभव नहीं है। शिक्षा समाज के राजनितिक, आर्थिक, नैतिक, वैज्ञानिक विकास में महती भूमिका निभाती है। किसी भी राज्य के निर्माण व विकास में शैक्षिक उन्नयन हेतु विभिन्न योजनाए बनाना तथा लागु करना सरकार का नैतिक दायित्व है। शैक्षिक उन्नति पर ही अन्य विकास निर्भर करता हैं राज्य के सभी वर्गो, महिला पुरूष, अमीर–गरीब, किसान– मजदूर को आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध कराने के साथ–साथ अपने अधिकारों के प्रति भी सजग बनाता हैं। अतः राज्य सरकार को शिक्षा की सर्वव्यापकता के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने का समान अवसर प्रदान करना चाहिए।

(ii) शिक्षा मंत्री के दायित्व–

सरकार सभी विभागो के विकास के लिए मंत्री व अधिकारी नियुक्त करती है। शिक्षा विभाग के लिए शिक्षा मंत्री व शिक्षा निदेशक, जिला अधिकारी एवं अन्य अधिकारी नियुक्त करती है। इनका दायित्व है कि विद्यालयों में भौतिक व मानविय संसाधन पर्याप्त मात्रा में हो। शिक्षा अधिकारियों की सहायता से सभी सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में शैक्षिक माहौल के उन्नयन हेतु उच्च शिक्षा प्राप्त व अनुभव शिक्षको

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

की व्यवस्था करे तथा गरीब एवं निम्न वर्ग के विद्यार्थियों के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने हेतु विभिन्न योजनाएं बनाए तथा उनको क्रियान्वित करें। उच्च वरीयता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को आगे अध्ययन हेतु उच्च शिक्षण संस्थानों की उपलब्धता के साथ–साथ उनमें गुणता का भी निर्वहन करें।

(iii) शिक्षा मंत्री के रूप में अभिनव प्रयास–

यदि मैं शिक्षामंत्री होता तो सभी सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करवाता। समय–समय पर शिक्षको को अद्यतन रखने के लिए उनको प्रशिक्षण भी अनिवार्य करता। विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा हेतु समय–समय पर मै नैतिक विकास हेतु किसी मोटिवेशनल स्पीकर के माध्यम से प्रोत्साहित कराता । विभिन्न सरकारी योजनाए बनाता ताकि शिक्षा से भी कोई भी परिवार वंचित नहीं रहता। शिक्षा का सर्वेसर्वा हाने के नाते, मेरा कर्तव्य हैं कि राज्य में सभी नागरिको को निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा हेतु प्रयास करू। एक शिक्षित नागरिक ही अपने अधिकारो के प्रति सजग रहकर राज्य के विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकता हैं विद्यालयों में बालक के शारीरिक, मानसिक नैतिक विकास हेतु शैक्षिक पाठ्क्रम हेतु शिक्षित व अनुभवी शिक्षाविदों की समिति गठित की जाए।

शेखावाटी मिशन–100

(iv) योजना क्रियान्विति के प्रयास :–

शैक्षिक उन्नयन के लिए बनायी गई सभी योजनाए तभी परिणाम लाएगी जब उनको निष्पक्ष रूप से लागु की जाए। शिक्षा के साथ–साथ खेलो के विकास को भी योजना लागु हो। सभी वर्गो के विद्यार्थियों के लिए उनके आर्थिक स्तर के अनुरूप योजना बने ताकि सभी वर्गो को लाभ मिल सके। मैं योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु विद्यालयों में एक शिक्षक नियुक्त करता, ताकि क्रियान्वयन प्रभावी तरीके से हो सके। छात्राओं के लिए उनमें आत्मविश्वास बढ़ान के लिए आत्मरक्षा और शारीरिक सुदृढता हेतु प्रशिक्षण करवाते हैं। विद्यालयों में पाठ्क्रम को भी समय–समय पर अपडेट करते ताकि विद्यार्थी स्वरोजगार के प्रति लालायित होते है। मैं सभी अधिकारियों को पूर्ण इमानदारी व निष्पक्षता से कार्य करने हेतु प्रेरित करता ताकि उनमें अपने कार्यो के प्रति उदासीनता नहीं आती।

(v) उपसंहार –

शिक्षा सम्पूर्ण समाज व राष्ट्र की आधारशिला होने के साथ–साथ सभ्य समाज के लिए महत्वपूर्ण है। सरकार व उनके मंत्री अधिकारी इसके विकास तथा पंक्ति के अंतिम विद्यार्थी तक पहुंच सुनिश्चित करें ताकि

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

कोई बालक वंचित ना रहे। शिक्षा के अभाव में समाज का पतन हो सकता हैं। शै़क्षिक उन्नयन हेतु पूरा विभाग या तंत्र पूरी तन्मयता व योजनाबद्ध तरिके से कार्य करें तभी समाज विकास कर पाएगां । जब प्रत्येक नागरिक के पास शिक्षा के अवसर उपलब्ध होंगे तभी समाज व राष्ट्र की वास्तविक उन्नति संभव होगी।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
कम्प्यूटर शिक्षा और आवश्यकता

1. मुख्य बिन्दु :–

(i) प्रस्तावना

(ii) कम्प्यूटर का प्रसार

(iii) कम्प्यूटर के चमत्कार

(iv) कम्प्यूटर शिक्षा की अनिवार्यता

(v) कम्प्यूटर के विविध प्रयोग एवं प्रभावः

(vi) उपसंहार

(i) प्रस्तावना : – वर्तमान समय में विज्ञान ने आश्चर्य जनक प्रगति की है। इस प्रगति मे कम्प्यूटर का आविष्कार आधुनिक युग की सर्वाधिक चमत्कारी घटना है। जीवन के सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर ने जितनी शीघ्रता से और व्यापकता से प्रवेश किया हैं, वह सचमुच आश्चर्य का विषय है। आज कम्प्यूटर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरूषार्थो की सिद्धी में मनुष्य का सहयोग कर रहा हैं।

(ii) कम्प्यूटर का प्रसार :– कम्प्यूटर के विकास का प्रथम प्रयास यूनान तथा मिस्र देशो में हुआ था। आधुनिक कम्प्यूटर का आविष्कार 1833 ई0 में इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध गणितज्ञ चार्ल्स बैवेज ने किया था। भारत में कम्प्यूटर का आयात सन् 1965 में किया थां निजी कम्प्यूटर सन 1985 में आया । प्रारम्भ में कम उपयोगी थे परन्तु वर्तमान में तकनीकी में लगातार सुधार से इसका कार्यक्षेत्र बढ़ता गया। अब तो शिक्षा, व्यापार, अनुसंधान, युद्ध उद्योग संचार अंतरीक्ष, मौसम, विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में इसका उपयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है।

(iii) कम्प्यूटर के चमत्कार :– शिक्षा के क्षेत्र मे कम्प्यूटर ने ज्ञान– विज्ञान प्रशिक्षण के आपार क्षेत्र खोल दिए गए हैं। कम्प्यूटर का सबसे बड़ा चमत्कार यह हैं की उसके सहयोग से यंत्रो, प्रणालियों युक्तियों की कार्यक्षमता से

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

कहीं अधिक दक्ष, प्रभावी तीव्र बनाया जा सकता है। कम्प्यूटर से ही प्रेक्षपास्त्रों का संचालन और नियंत्रण हो रहा हैं। असहाय रोगो की औषधियों में कम्प्यूटर सहयोगी रहा हैं। प्राकृतिक आपादाओं के पूर्वानूमान में भी कम्प्यूटर महत्वपूर्ण भूमिक निभा रहा हैं।

(iv) कम्प्यूटर शिक्षा की अनिवार्यता : – आज कम्प्यूटर को शिक्षा का अभिन्न अंग स्वीकार कर लिया गया हैं। राजस्थान में इसको सैकण्डरी स्तर पर अनिवार्य किया जा चुका हैं। जो इसके महत्व को उजागर करता हैं आज चाहे युवा किसी भी क्षेत्र में सरकारी या निजी क्षेत्र में नौकरी के लिए आवेदन करता हैं तो उसको कम्प्यूटर का बैसिक ज्ञान होना अनिवार्य कर दिया गया हैं। इस प्रकार हर दृष्टि से कम्प्यूटर शिक्षा की उपयोगिता प्रमाणित हो रही है।

(v) कम्प्यूटर के विविध प्रयोग एवं प्रभावः – वर्तमान में कम्प्यूटर का प्रयोग अनेक क्षेत्रों में हो रहा है। छोटे व्यवसाय से लेकर बड़े उद्योगों, रेल बस टिकटो के आरक्षण, आवागमन शेयर बाजारों, मनोरंजन के अनेक कार्यक्रमों में कम्प्यूटर का प्रयोग आम बात हो गई हैं।

शिक्षा और तकनीकी क्षेत्र में अब इसको प्रर्याप्त महत्व दिया जा रहा हैं कम्प्यूटर इंजीनियरिंग शिक्षा से इसका क्षेत्र बहुमुखी बन गया हैं। कम्प्यूटर का अब विविध क्षेत्रों में प्रयोग होने से मानव शक्ति का उत्तरोतर विकास हो रहा है।

(vi) उपसंहार :– आज का मानव धीरे – धीरे अपने रोजमर्रा के कार्यो के लिए भी कम्प्यूटर पर निर्भर होता जा रहा हैं जिसकी वजह से उसकी नैसंर्गिक क्षमता पर विपरीत असर पड़ रहा हैं। इसके अलावा आज कम्प्यूटर का उपयोग कई विध्वंसात्मक गतिविधियों के लिए किया जा रहा है। जो मानवता के लिए खतरे का संकेत हैं कम्प्यूटर मानव कल्याण का ही सूत्रधार बनें यह हम सबकी कामना और प्रयास रहना चाहिए।

2. मुख्य बिन्दु :–मेरा प्रिय लेखक :–

(i) प्रस्तावना

(ii) जीवन परिचय

शिक्षा वाहिनी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(iii) रचनाएँ

(iv) लेखन शैली

(v) उपसंहार

(i) प्रस्तावना : – कोई भी लेखक या कवि बनाए नहीं जाते हैं यह तो जन्मजात ही होते हैं उनकी प्रतिभा बच्चपन से ही फलती–फलती रहती हैं जो उसको एक समय बड़े मुकाम पर पहुचाती हैं। हिन्दी साहित्य में ऐसे कई ऐसे लेखक है। जिनकी क्षमता को पूरी दुनिया ने स्वीकार किया है। उन्ही में से एक थे उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द। जिनका नाम हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अदब से लिया जाता हैं।

(ii) जीवन परिचय :– मुंशी प्रेमचन्द का जन्म वाराणसी के निकट लमही गांव में 31 जूलाई 1880 को हुआ था उनके पिता का नाम अजबराय व माता का नाम आनंदी देवी था। प्रेमचन्द का मुल नाम धनपतराय था इन्हे नवाबराय के नाम से भी जाना जाता था। इनका बचपन्न बहुत ही अभावो में बीता था। बाहरवी कक्षा में अनुर्तीण होने पर इन्होने पढ़ाई छोड़ दी। प्रथम पत्नी के तलाक होने पर इन्होने शिवरानी देवी से दूसरा विवाह कर लिया। डिप्टी इन्सपेक्टर की नौकरी छोड़कर इन्होने असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया। साहित्य जीवन में प्रवेश करने पर सर्वप्रथम मर्यादा पत्रिका के संपादक रहें फिर प्रेस का संचालन किया। 1936 में लंबी बीमारी के कारण इनका निधन हो गया।

(iii) रचनाएँ :– मेरे प्रिय लेखक प्रेमचन्द की रचनाएं निम्न प्रकार से हैं–

उपन्यास :– कर्मभूमि, कायाकल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, प्रेमाश्रम वरदान, सेवासदन, रंगभूमि, गबन और गोदाम।

कहानी संग्रह :– नवनिधि, ग्राम्य जीवन की कहानियां प्रेरणा, कफन, कुत्ते की कहानी, प्रेम प्रसून, प्रेम पच्चीस, प्रेम चतुर्थी, मनमोदक, मानसरोवर, समर यात्रा, सप्त सरोज, समधि, प्रेम गंगा, और सप्त समना।

नाट्क :– कबिला, प्रेम की वेदी, संग्राम, रूठी रानी।

जीवन चरित्र :– कलम, तलवर, और त्याग, दुर्गादास महात्मा शेख सादी, रामचर्चा।

निबंध संग्रह :– कुछ विचार

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

सम्पादित :– गत्य रत्न, समुच्चय

अनुदित :– अंहकार, सुखदास, आजाद कथा, चांदी की डिबीया, टालस्टाय की कहानियां, सृष्टि का आरंभ।

(iv) लेखन शैली : – प्रेमचन्द जी ने अपने साहित्य की रचना जनसाधरण के लिए करते थे वह विषय एवं भावों के अनुकूल शैली को परिवर्तित कर लेती हैं। इनकी शैलिया निम्न प्रकार की थी–

– विवरणात्मक शैली
– विवेचनात्मक शैली
– मनोवैज्ञानिक
– हास्य
– भावात्मक

प्रेमचन्द की भाषा दो प्रकार की थी –

(1) एक तो जिसमें यह संस्कृत के तत्सम शब्दो का प्रयोग करते थे।

(2) दूसरी इसमें, उर्दू, संस्कृत और हिन्दी के व्यावाहरिक शब्दो का प्रयोग करते थें

(v) उपसंहार :–प्रेमचन्द युग प्रवर्तक कहानीकार होने के साथ –साथ नए कहानीकारों में भी अपना विशिष्ट स्थान रखते थे उनकी उपन्यास और कहानी में एक आदर्शमुख यथार्थवाद की प्रवृति रहती थी। यह आधुनिक युग में भी अपनी कहानियों से अग्रणी स्थान रखते हैं। हिन्दी साहित्य में मेरे प्रिय लेखक उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द का नाम हमेशा अमर रहेगा।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
विद्यार्थी के जीवन में अनुशासन का महत्व

1. प्रस्तावना :–

जिस जीवन में कोई नियम या व्यवस्था नहीं जिसकी कोई आस्था और आदर्श नहीं वह मानव जीवन नहीं पशु जीवन ही हो सकता हैं। ऊपर से स्थापित नियंत्रण या शासन सभी को अखरता है। इसलिए अपने शासन में रहना सबसे सुखदायी होता हैं। बिना किसी भय लोभ के नियमो का पालन करना ही अनुशासन है। विद्यालयों में तो अनुशासन में रहना और आवश्यक हो जाता है।

2. विद्यार्थी – जीवन और अनुशासन :–

वैसे तो जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन आवश्यक हैं किन्तु जहां राष्ट्र की भावी पिढ़ीयां ढलती हैं उस विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। किन्तु आज विद्यालयों में अनुशासन की स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। अनुशासन मे रहना आज के विद्यार्थी को शायद अपनी ज्ञान के खिलाफ लगता है। अध्ययन के बजाय अन्य बातो में छात्रों की रूचि अधिक देखने को मिलती है।

3. अनुशासनहीनता के कारण :–

विद्यालयों बढ़ती अनुशासनहीनता के पीछे मात्र छात्रों की उद्दण्डता की कारण नहीं हैं। सामाजिक परिस्थितियां और बदलती जीवन शैली भी इसके लिए जिम्मेदार है। टीवी ने छात्र को समय से पूर्व ही युवा बनाना प्रारम्भ कर दिया है उसे फैशन और आडम्बरों में उलझाकर उसका मानसिक और आर्थिक शोषण किया जा रहा हैं। बैरोजगारी उचित मार्गदर्शन न मिलना तथा अभिभावको का जिम्मेदारी से आंख से चुराना भी अनुशासनहीनता के कारण है।

4. दुष्परिणाम :–

छात्रों में बढ़ती अनुशासनहीनता ने केवल इनके भविष्य को अंधकार बना रही हैं बल्कि देश की भावी

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

तस्वीरों को भी बिगाड़ रही है। आज चुनौती और प्रतियोगिता का जमाना हैं हर संख्या और कंपनी श्रेष्ठ युवको की तलाश में है। इस स्थिति में नकल में उत्तीर्ण और अनुशासनहीनता छात्र कहा ठहर पायेंगे। आदमी की शान और अनुशासन तोड़ने में नहीं उसका स्वाभिमान के साथ पालन करने में है। अनुशासनहीनता ही अपराधियों और गुण्डो को जन्म देती हैं।

5. निवारण के उपाय :–

इस स्थिति में केवल अध्यापक या प्रधानचार्य नहीं निपट सकते। इसकी जिम्मेदारी पुरे समाज को उठानी चाहिए विृद्यार्थियों में ऐसे वातावरण हो जिसमें शिक्षक एवं विद्यार्थी अनुशासित रहकर शिक्षा का आदान–प्रदान कर सके। अनुशासनहीन राजनीतिज्ञों को भी अनुशासित होकर भावी पीढ़ी को प्रेरणा देनी होगी।

6. उपसंहार :–

आज का विद्यार्थी आंख बंद करके आदर्शों का पालन करने वाला नहीं है। उसकी आंख और कान दोनो खुले हैं। समाज में जो कुछ घटित होगा वह छात्र के जीवन में भी प्रतिबिम्बित होगा। समाज अपने आप को संभाले तो छात्र स्वयं संभल जाएगा। अनुशासन की खुराक केवल छात्रों को ही नहीं बल्कि समाज में हर वर्ग को पिलानी होगी। जब देश में चारो ओर अनुशासनहीनता छाई हुई है तो विृद्यालयों में इसकी आशा करना व्यर्थ है।

देश के उत्थान में युवावर्ग का योगदान :– मुख्य बिन्दु–

(i) प्रस्तावना :–

जब –जब संकट घिरे देश पर किसने वृक्ष अड़ाए है?
देश प्रेम की बलिवेदी पर किसने शीश चढ़ाएं है?
प्यासी धरती को श्रम जल से कौन सिचंता आया है?
किसने सपनो को सुमनो से मां का रूप सजाया है?

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

इन प्रश्नो के उत्तर में एक ही नाम, एक छवि उभरती है और वह हैं देश का युवा वर्ग। वह युवा वर्ग ही था जिसने मातृभूमि को परतंत्र की बेड़ियों में जकड़ने वाले क्रूर विदेशी शासन को चुनौती दी थी।

(ii) युवा वर्ग की क्षमता –

विधाता के किसी निर्माण को देखो। जवानी उसकी आयु का चरम क्षण होती है। जवानी की उमंगे सागर को मात करती है। जवान कल्पनाएं आकाश को भी छोटी साबित कर देती है। धरती फोड़कर वे जलधारा निकाल सकती है। पहाड़ो के सिर पर वे रास्ता बना लेती है।

पर्वतो को काटकर सड़के बनाए देते है वें।

सैकड़ो मरूभूमि में नदियों बहा देते हैं वे।

कविवर माखनलाल चतुर्वेदी ने युवा रक्त की भूमिका को सराहते हुए कहा हैं–

द्वार बलि का खोल चल, भूडोल कर दे,
एक हिमगिरी एक सिर का मोल कर दे।
मसल कर अपने इरादों सी उठाकर
दो हथेली है कि पृथ्वी गोल कर दें।

युवा वर्ग की क्षमताएं अनन्त हैं अतः यह तो इनकी क्षमताओं का दोहन करने वालों के ईमान पर निर्भर है। कि वे इस छुरी से निरपराध का गला काटते हैं या इसे एक शल्य चिकित्सक के हाथ थमाकर किसी मरणोन्मुख के प्राण बचाते है।

(iii) युवावर्ग और भारतीय लोकतंत्र :–

समाज का हर वर्ग लोकतंत्र का हर स्वयंभू ठेकेदार युवको को अपने हाथ खरीद लेना चाहता हैं। भारतीय लोकतंत्र का भविष्य जिनके कन्धो पर टिका हैं। उन युवाओ को बेरोजगार भटकते देखकर, उनका चारित्रिक पतन होते देखकर क्या इस लोकतंत्र को तनिक भी लज्जा का अनुभव होता हैं? केवल युवावर्ग के बाहुबल का और उसकी प्रतिभाओ का शोषण ही लोकतंत्र का पावन कर्तव्य बन गया है। युवाओ की समस्यओ का समाधान करना शासन और समाज का अनिवार्य दायित्व है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(iv) युवा ही लोकतन्त्र के संरक्षक –

लोकतंत्र को प्रतिष्ठित और स्थायित्व दिलाने वाले उसके युवक ही होते है। भारतीय लोकतंत्र की अधिकांश समस्याएं उसके युवको की समस्याएं हैं और युवा वर्ग ही उनके समाधान भी है। युवा पीढ़ी में हम जैसे संस्कार बोएंगे वैसे ही काटेने पड़ेगे। उनकी सुशिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, जीवनयापन और अभिलाषाओं के प्रति यह लोकतंत्र जितना जागरूक और सचेष्ट रहेगा उतनी ही उनसे अपेक्षाएं कर सकेगा। युवा वर्ग में व्याप्त असंतोष, भटकाव, और निराशा भारतीय लोकतंत्र की प्रतिष्ठा को उज्जवल नहीं बना पाएगी।

(v) उपसंहार :–

युवा शक्ति का विवेक और ईमानदारी से प्रयोग करना देश के वयोवृद्ध नेतृत्व का परम कर्तव्य है। युवा वर्ग एक दुलारी तलवार हैं जरा चूके तो लेने के देने पड़ सकते हैं। युवाओ को अपनी महत्वकांक्षाओ और स्वयं स्वार्थ की सीढ़ी के लोग सावधान हो जाएं । यह आग कभी भी उनके पाखण्ड पूर्ण इरादो को जलाकर खाक कर सकती है।

भ्रष्टाचार : – एक विकाराल समस्या :– मुख्य बिन्दु

(i) प्रस्तावना

(ii) भ्रष्टाचार के कारण

(iii) भ्रष्टाचार का कुप्रभाव

(iv) समाधान या निराकरण के उपाय

(v) उपसंहार

(i) प्रस्तावना :–

भ्रष्टाचार वह आचरण हैं जो भ्रष्ट हैं। यह सदाचार की विकृति है। हर समाज यही चाहता हैं की उसके सदस्य सदाचारी हो अर्थात वे समाज सम्मत आचरण का अनुगमन करें तथा इस लोकसम्मत आचरण जो च्यूत होना ही आवश्यक भ्रष्टाचार है।

''देश की उन्नति को आगे बढ़ाएं,

देश को भ्रष्टाचार से बचाए।''

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(ii) भ्रष्टाचार के कारणः–

जब मानव मन पर उसकी स्वार्थ एवं लालच से भी प्रवृतियां हावी हो जाती है। तब वह मर्यादित आचारण को भूलकर स्वेच्छाचारी हो जाता हैं और इसी स्वच्छाचारी से जन्म लेता हैं– भ्रष्टाचार। जब व्यक्ति अपनी आकांक्षओं तथा स्वार्थो व लालसाओं को आवश्यकताओं से अधिक फैला लेता हैं तो उनको पूरा करने के लिए अनैतिक और अवैध रास्तो को अपनाता हैं, तभी समाज में भ्रष्टाचार पनपता है। वर्तमान में बढ़ती इसी प्रवृति के कारण हमारा देश ही नहीं सारा विश्व भ्रष्टाचार की समस्या से जुझ रहा है।

''भ्रष्टाचार नाम को दूर भगाओं
अच्छो बनो अच्छा समाज बनाओं।''

(iii) भ्रष्टाचार का कुप्रभाव :–

भ्रष्टाचार के द्रष्प्रभावों का क्षेत्र भी काफी विस्तृत है। बेईमानी, चोरी, तस्करी, पक्षपात, विश्वासघात, जमाखोरी, अनैतिक, धन–संग्रह, भाई–भतीजावाद, खाने–पीने की चीजो में मिलावट, पद का दुरूपयोग, अधिक लाभ लेना, धोखेबाजी, सट्टा व्यापार, देश के प्रति गद्दारी, काला धन आदि सभी भ्रष्टाचार के अंग है। इसके अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति को जान बुझकर पीड़ित करना भी भ्रष्टाचार है।

''देश ने मिलकर यह ठाना हैं,
भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाना हैं।''

(iv) समाधान या निराकरण के उपायभ्रष्टाचर :–

भ्रष्टाचार का निवारण करने के लिए यद्यपि सरकार ने पृथक से भ्रष्टाचार उन्मूलन विभाग बना रखा हैं और इसे व्यापक अधिकार दे रखा हैं। समय – समय पर अनेक कानून बनाए जा रहे हैं और इसे अपराध मानकर कठोर दण्ड व्यवस्था का विधान हैं तथा देश में भ्रष्टाचार बढ़ ही रहा हैं। इसके निराकरण के लिए सर्वप्रथम जन–जागरण की आवश्यकता हैं तथा कर्तव्यनिष्ठा व ईमानदारी की जरूरत हैं अतः भ्रष्टाचार के उपर्युक्त सभी कारणो को पूरी तरह से समाप्त करना जरूरी है।

''आओ हम एक उम्मीद बनें,

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

भ्रष्टाचार को देश से दूर करे।''

(v) उपसंहार :–

भ्रष्टाचार देश की प्रगति में बाधक है। और आर्थिक असमानता का द्योतक है। इसे समय रहते नहीं रोका गया तो देश की जीवन्तता, सदाश्यता को यह दीमक की तरह चट कर जाएगा।

'' भ्रष्टाचार मुक्त जब होगा देश,
तभी बनेगा राष्ट्र विशेष।''

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
कक्षा – 12 हिन्दी साहित्य

समय 2 घंटे 45 मिनट पुर्णांक :– 80

शेखावाटी मिशन–100

परीक्षार्थी के लिए सामान्य निर्देशः –

→ परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्य लिखे।

→ सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।

→ प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में लिखें।

→ जिन प्रश्नो के आंतरिक खण्ड है उन सभी के उत्तर एक साथ लिखे।

खण्ड – (अ)

1. निम्नलिखित में से गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नो के उत्तर पुस्तिका में कोष्ठक में लिखिय – 6 x 1 = 6

तुलसी हमारे जातीय जनगणना के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी कविता की आधारशिला जनता की एकता है।मिथिला से लेकर अवध और ब्रज तक चार सौ साल से तुलसी की सरस वाणी नगरों और गांवों में गूँजती है। साम्राज्यवादी सामन्ती अवशेष और बड़े पूंजिपतियों के शोषण से हिन्दी भाषी जनता को मुक्त करके उसकी जातीय संस्कृति को विकसित करना है। हमारे जातीय संगठन के मार्ग में साम्प्रदायिकता, ऊँच नीच के भेद भाव, नारी के प्रति सामन्ती शासक का रूख आदि अनेक बाधाएं है। तुलसी का साहित्य हमें इनसे संघर्ष करना सिखाता हैं। तुलसी का मूल संदेश है– मानव प्रेम को सक्रिय रूप देना, सहानुभूति का व्यवहार में परिणत करके जनता के मुक्ति संघर्ष में योगदान देना हमारा कर्तव्य है।

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

i. उपर्युक्त अपठित गद्यांश का उचित शीर्षक होगा–

(अ) तुलसीदास (ब) तुलसीदास का साहित्य

(स) तुलसीदास की जीवनी (द) तुलसी –साहित्य का महत्व ( )

ii. तुलसीदास की रचनाओं की आधारशिला है–

(अ) सम्प्रभुता (ब) समन्वयता

(स) कर्मठता (द) एकता ( )

iii. हमारे जातीय जागरण के सर्वश्रेष्ठ कवि किसे माना गया हैं–

(अ) सूरदास (ब) केशवदास

(स) कबीरदास (द) तुलसीदास ( )

iv. तुलसी के साहित्य का मूल संदेश हैं–

(अ) प्राणी – प्रेम (ब) मनुष्य प्रेम

(स) देव प्रेम (द) पृथ्वी प्रेम ( )

v. साम्प्रदायिक, ऊंच – नीच के भेद–भाव, नारी के प्रति सामन्ती शासक का रूख आदि सभी बाधाएं किस संगठन के मार्ग को अवरूद्ध कर रही थी –

(अ) राजनैतिक (ब) आर्थिक

(स) सामाजिक (द) जातीय ( )

vi तुलसीदास का साहित्य मनुष्य को क्या बनाना सिखाता हैं–

(अ) कर्मशील (ब) संघर्षशील

(स) संवेदनशील (द) उपर्युक्त सभी ( )

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

उत्तर :– (i) द	(ii) द	(iii) द
(iv) ब	(v) द	(vi) ब

1. निम्नलिखित अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नो के उत्तर पुस्तिका मे कोष्ठक में लिखिए – 6 x 1 = 6

हो गई हैं पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए,
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए,
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए,
मेरी सीने मे नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कही भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

i. उपर्युक्त पद्यांश को शीर्षक हैं–

(अ) परिवर्तन (ब) कोशिश
(स) लहर (द) सामूहिक क्रांति ( )

ii. 'हो गई हैं पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए' पंक्ति में कवि का 'पीर पर्वत' से आशय हैं–

(अ) गहरा दर्द (ब) सामूहिक पीड़ा
(स) पर्वत समान ऊंची पीड़ा (द) उपर्युक्त सभी ( )

iii. निम्न उपर्युक्त पद्यांश में कवि क्या संदेश देना चाहता हैं–

(अ) परिवर्तन का (ब) क्रान्ति का
(स) जागरण का (द) शक्ति का ( )

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

iv. 'मेरी कोशिश हैं कि ये सूरत बदलनी चाहिए' पंक्ति में कवि का 'सूरत' से क्या अभिप्राय हैं–

(अ) रूप (ब) हालात

(स) समय (द) स्थिति ( )

v. 'हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए' पंक्ति में कवि का इशारा कैसी 'आग' से हैं–

(अ) दृढ़– निश्चिय (ब) बदली की

(स) क्रोध की (द) घृणा की ( )

vi. उपर्युक्त पद्यांश में कवि ने किसकी पीड़ा का वर्णन किया हैं–

(अ) पूंजीपति वर्ग (ब) उच्च वर्ग

(स) सामन्त वर्ग (द) आम वर्ग ( )

उत्तर :–	(i) अ	(ii) ब	(iii) स
	(iv) ब	(v) अ	(vi) द

2. दिए गए रिक्त स्थानों की पूर्ति करों– 6 x 1 = 6

(i) कोमलकान्त शब्दावली से युक्त काव्य में .... गुण होता हैं?

उत्तर :– माधुर्य गुण

(ii) काव्य में दोष .... का आस्वादन करने में बाधक होते हैं–

उत्तर :– रस का

(iii) जहां कारण होने पर भी कार्य सम्पन्न नहीं होता हैं वहां .... अलंकार होता हैं।

उत्तर :– विशेषोक्ति अलंकार

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(iv) उपमा अलंकार का उलटा .... अलंकार होता है।

उत्तर :–प्रतीप अलंकार

(v) छप्पय छंद .... तथा .... छंद से मिलकर बनता हैं।

उत्तर :– रोला तथा उल्लाला

(vi) सवैया .... वर्णिक श्रेणी का छंद है।

उत्तर :– सम

3. निम्नलिखित अति लघुत्तरात्मक प्रश्नो के उत्तर दीजिए प्रत्येक प्रश्न के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम शब्द सीमा 20 शब्द है। 12 x 1 = 12

(i) अन्योक्ति अलंकार और समासोक्ति अलंकार का मुख्य अन्तर बताइए–

उत्तर :– अन्योक्ति में अप्रस्तुत के द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाता हैं जबकि समासोक्ति में प्रस्तुत के साथ अप्रस्तुत की भी व्यंजना होती है।

(ii) विभावना अलंकार के लक्षण लिखिए।

उत्तर :–जहां काव्य में कारण के न होते हुए भी कार्य का होना पाया जाता हैं, वहाँ विभावना अलंकार होता हैं।

उदाहरण – बिनु पग चलै सुने बिनु काना।

(iii) पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं? नाम लिखिए–

उत्तर :– पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं– 1. पूर्णकालिक 2. अंशकालिक 3. फ्रीलांसर

(iv) विशेष लेखन की जरूरत किन क्षेत्रो मे अधिक पड़ती हैं?

उत्तर :–विशेष लेखन की जरूरत तकनीकी रूप, से जटिल क्षेत्रों से जुड़ी घटनाओं को समझाने के लिए पड़ती है।

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(v) बीट से जुड़ा समाचार किस शैली में लिखा जाता हैं?

उत्तर :– बीट से जुड़ा समाचार उल्टा पिरामिड शैली मे लिखा जाता हैं जिसमें समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता हैं।

(vi) गंगा पुत्र किसे कहा गया हैं और क्यों –

उत्तर :–गंगा पुत्र गंगा घाट के उन गोताखोरों को कहा गया हैं जो गंगा में प्रवाहित चढ़ावे का पैसा डूबकी लगाकर निकाल लेते है।

(vii) लेखक ने 'जहां कोई वापसी नहीं' पाठ में किस संवदेना को रेखांकित किया हैं?

उत्तर :– लेखक ने विकास के नाम पर पर्यावरण विनाश से उपजी विस्थापना संबंधी मुनष्य की यातना को रेखांकित किया है।

(viii) कवि विद्यापति ने नायिका के सौन्दर्य को क्षण–क्षण दुर्बल होने पर किसकी उपमा दी हैं?

उत्तर :– कवि विद्यापति ने नायिका के सौन्दर्य को पूर्णमासी के चन्द्रमा की भांति बताया हैं जो प्रतिदिन घटता – बढ़ता हैं।

(xi) कवि ने हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को ईमानदार क्यों कहा हैं?

उत्तर :–कवि ने हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को इसलिए ईमानदार कहा हैं क्योंकि यदि वह भ्रष्ट होता तो इस तरह हाथ फैलाकर भीख नहीं मांगता।

(x) कविता में चित्र भाषा क्या हैं?

उत्तर :– चित्रों या बिम्बों का प्रभाव व्यक्ति मन पर अधिक पड़ता हैं। दृश्य बिम्ब अधिक बौधगम्य होते हैं इसलिए कविता में चित्रभाषा का प्रयोग उसे प्रभावी बना देती है।

(xi) नाटक का महत्वपूर्ण अंग कौनसा हैं–

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

उत्तर :– नाटक का महत्वपूर्ण अंग हैं अभिनेयता अर्थात जिसे रंगमंच पर अभिनय किया जा सकता है। दूसरा महत्वपूर्ण अंग कथोपकथन अथवा संवाद है।

(xii) कथानक में द्वन्द्व का क्या महत्व हैं–

उत्तर :–कथानक में द्वन्द्व दो विरोधी तत्वों का टकराव, बाधाओं व अर्न्तद्वन्द्व के कारण पैदा होता हैं कहानी में द्वन्द्व बिन्दु जितने स्पष्ट होंगे कहानी उतनी सफलता प्राप्त करती हैं।

खण्ड – (ब)

निर्देशः– प्रश्न संख्या 4 से 15 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम शब्द सीमा 40 शब्द हैं।

4. फीचर लेखन कैसा होना चाहिए तथा प्रमुख फीचर लेखन के नाम बताइए–

उत्तर :– फीचर आम तौर पर तथ्यो, सूचनाओं और विचारों पर आधारित कथात्मक विवरण जिसमें मनोरंजक, सरसता के साथ कलात्मकता की विशेषता होनी चाहिए। इनमें खोजपरक फीचर, खेल आधारित फीचर, विज्ञान फीचर, व्याख्यात्मक फीचर, ऐतिहासिक फीचर, व्यक्तिगत फीचर, फोटो फीचर इत्यादि।

5. संपादकीय लेखन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :–संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिए किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट की जाती हैं। संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष के विचार नहीं होते इसलिए उसे किसी नाम के साथ नहीं छापा जाता। संपादीय लेख लेखने का दायित्व उस समाचार– पत्र में काम करने वाले संपादक तथा उसके सभी सहयोगियों पर होता है।

6. गीत और मोती की सार्थकता किससे जुड़ी हैं–

उत्तर :– गीत की सार्थकता उसके गाने पर ही निर्भर करती हैं। लोगो द्वारा गाए जाने पर उसका महत्व बढ़ता हैं। इस प्रकार कवि अपनी भावनाओं को गीत द्वारा व्यक्त करता है। और समाज उस गीत को गाकर सार्थकता

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

प्रदान करता हैं।

मोती की सार्थकता तभी होती हैं जब कोई गोताखोर समुद्र की अतुल गहराई से निकालकर उसे बाहर लाता हैं। समुद्र की गहराई में पड़े हुए मोतियों का कोई महत्व नहीं हैं। मोती को परखने वाले व्यक्ति ही उसके मूल्य व उपयोगिता को बताते है।

7. 'रहि चकि चित्र लिखी–सी' पंक्ति का मर्म अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए –

उत्तर :– माता कौशल्या को जब राम के वन गमन का ध्यान आता हैं तो वह चकित हो खड़ी की खड़ी रह जाती हैं। वे ऐसी लगती हैं कि सजीव स्त्री न होकर चित्र में बनी आकृति हों। वे चित्र में बनी आकृति की तरह एक ही जगह स्थिर होकर रह जाती हैं।

8. 'अज्ञेय' अथवा केशवदास में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचिय दीजिए –

उत्तर :–बहुमुखी प्रतिभा के धनी 'अज्ञेय' प्रयोगवाद के प्रवर्तक साहित्यकार माने जाते है। 'अज्ञेय' ने 'शेखर एक जीवनी' नदी के द्वीप (उपन्यास), अरे यायावर रहेगा याद, एक बूंद सहसा उछली (यात्रावृत), त्रिशंकु आत्मनेपद (निबन्ध) विपथगा, परम्परा, कोठरी की बात, जयदोल (कहानी–संग्रह) और चिन्ता, भग्नदूत, हरी घास पर क्षण भर, आंगन के पार द्वार आदि (काव्य कृतियां) की रचना की हैं।

9. गाँववालो ने उपवास क्यों रखा और उसे कब तोड़ा? कच्चा चिट्ठा पाठ के आधार पर दोनो प्रसंगो को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर :– व्यास जी किसी गाँव के बाहर एक पेड़ के नीचे रखी चतुर्मुखी शिव की मूर्ति को उठा लाए थे जिसकी पूजा अर्चना गाँववाले करते थें।जब गाँव वालो को इस बात का पता चला कि शिवजी अंर्तधान हो गए हैं तो उन्होंने ठान लिया कि जब तक शिवजी वापस नहीं आ जाएगें तब तक वे उपवास पर रहेंगे और एक बूँद पानी तक नहीं पीयेंगे। जब व्यास से उस मूर्ति के संदर्भ में अनुरोध करने पर उन्होने गाँववालो को मूर्ति वापस कर दी तभी गांव वालों ने अपना उपवास तोड़ा। व्यास जी लिखते हैं कि यदि उन्हें यह पता होता कि गाँववालों की इतनी ममता उस मूर्ति पर है तो वे उसे उठाकर लाते ही नहीं।

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

10. लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए 'घड़ी के पूर्जे' का दृष्टांत क्यों दिया हैं–

उत्तर :–घड़ी समय जानने के लिए होती हैं। यदि स्वयं घड़ी देखना नहीं आता तो किसी जानकार व्यक्ति से समय पूछ लो। घड़ी ने वह समय क्यों बताया, इस रहस्य को जानने के लिए तुम घड़ी के पूर्जो को खोलकर उन्हें फिर जमाने की चेष्टा मत करो। ऐसा करने पर तुम्हे निराशा हाथ लगेगी।

ठीक इसी तरह धर्म के बारे में बताया जा रहा हैं उसे चुप–चाप सुन लो, उसके बारे में तर्क–वितर्क और प्रश्न मत करों। धर्म का रहस्य पता करना उसी प्रकार तुम्हारा काम नहीं है। इसी कारण लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जो का दृष्टांत दिया हैं।

11. फणीश्वर नाथ रेणु अथवाा ममता कालिया में से किसी एक साहित्यिकार का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर :– फणीश्वर नाथ रेणु हिन्दी के प्रसिद्ध आंचलिक कथाकार और उपन्यासकार के रूप में चर्चित रहें है। इन्होने आंचल विशेष को अपनी रचनाओ का आधार बनाकर आंचलिक शब्दावली और मुहावरों का सहारा लेते हुए वहाँ के जन–जीवन और वातावरण का चित्रण किया है। मैला आँचल, परती परिकथा (उपन्यास), ठुमरी, तीसरी कमस, आदिम रात्रि की महक कहानी संकलन है।

12. मिठुआ के यह पुछने पर कि "और जो कोई सौ लाख बार लगा दे?" का उत्तर सूरदास ने किस प्रकार दिया?

उत्तर :–सूरदास ने ऐसा इसलिए कहा कि वह प्रतिशोध लेने का पक्षपाती नहीं था वह तो पुनर्निर्माण का पक्षधर था और उसी में विश्वास करता था। एक बार हारने के बाद वह पुनः दुगुने जोश से खेलने को तैयार था। वह परस्पर बैर भाव को भूलकर जीवन में समरसता का संचार करना उचित मानता था।

13. 'आरोहण' पाठ में बूढ़े तिलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी की बात सुनकर अजीब क्यों लग रहा था? स्पष्ट कीजिए–

उत्तर :–बूढ़ा तिरलोक सिंह पहाड़ी व्यक्ति हैं। उसके गांव में सभी लोग प्रतिदिन पहाड़ पर चढ़ते उतरते है। इसके लिए उन्हे किसी प्रकार का प्रशिक्षण भी नहीं लेना पड़ता है। उसने जब रूपसिंह को यह कहते सुना कि उसने पर्वतारोहण का प्रशिक्षण लिया हैं और इसी आधार पर नौकरी कर रहा हैं तब पहाड़ पर चढ़ने के लिए नौकरी मिलने की बात सुनकर तिरलोक सिंह को अजीब सा लगा।

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

14. 'अपना मालवा– खाऊ उजाड़ू सभ्यता में' किस प्रदेश से संबंधित हैं इसमें लेखक ने क्या बताने का प्रयास किया है। हैं–

उत्तर :–अपना मालवा .... पाठ मध्यप्रदेश से संबंधित है। इसमें लेखक मालवा प्रदेश की मिट्‌टी, नदियों का उद्‌गम विस्तार व स्थिति के विषय मे बताया हैं। नगरीकरण का विस्तार होने पर इनके नष्ट होने पर चिंता व्यक्त की हैं।

15. 'यह फूस की राख न थी उसकी अभिलाषाओं की राख थी' सूरदास की क्या अभिलाषाएं थी और उसकी राख किसने की ?

उत्तर :– झोंपड़ी मे लगी आग ने सूरदास की अभिलाषाओं को भी राख कर दिया था। जिसमे गया जाकर पिण्डदान करना, मिठुआ का विवाह करना, कुआं बनवाना आदि इच्छाएं थी। भैरों ने आपसी दुश्मनी के कारण झोंपड़ी में आग लगाकर उसका सब कुछ राख कर दिया।

शैक्षणिक मिशन–100

खण्ड – (स)

16. 'दूसरा देवदास' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए– **अंक = 3**

अथवा

सिंगरौली की उर्वरा भूमि तथा उस इलाके की सम्पदा ही उसके लिए अभिशाप बन गई सिद्ध कीजिए–

उत्तर :–लेखिका ममता कालिया कहानी दूसरा देवदास में प्रेम के महत्व और उसकी गरिमा को ऊंचाई प्रदान करती है। यह कहानी बताती हैं कि प्रेम के लिए किसी निश्चित व्यक्ति समय और स्थिति का होना आवश्यक नहीं हैं। वह कहीं भी, कभी भी, किसी भी समय और स्थिति मे उपज सकता हैं। प्रेम मे प्रथम आकर्षण और परिस्थितियों का गुम्फन ही प्रेम को आधार और मजबूती प्रदान करता है।

17. 'खाली कटोरों में बसंत का उतरना' से कवि का क्या आशय हैं 'बनारस' कविता के आधार पर बताइऐ।

अथवा

'यह दीप अकेला' कविता का केन्द्रीय भाव बताइए। **अंक = 3**

उत्तर :– कवि का यह आशय हैं कि बसंत ऋतु में सर्दी कम हो जाती हैं और गंगा स्नान के लिए लोगो की भीड़

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

बढ़ जाती हैं। उनसे भिखारियों को खूब भीख मिलती है। उनके कटोरों मे सिक्कों की खनक बढ़ जाती है। जिस प्रकार प्रकृति में वसंत ऋतु के आने पर मधुरता व खुशियाँ छा जाती हैं उसी प्रकार भिखारियों के चेहरों पर चमक भी बढ़ जाती हैं। कटोरों में पड़ते सिक्को की चमक में कवि को बसंत उतरता दिखाई देता है।

18. पहाड़ो की चढ़ाई में भूपदादा का कोई जवाब नहीं। उनके चरित्र की विशेषताए बताइए– अंक = 4

अथवा

नदियों की दुर्दशा और तलाबों के बारे में लेखक के चिंतन को स्पष्ट कीजिए। (उत्तर सीमा 80 शब्द)

उत्तर :– 'आरोहण' कहानी का प्रमुखतम पात्र तथा नायक भूपसिंह हैं। भूपसिंह के चरित्र की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

(i) कुशल पर्वतारोही :– पहाड़ पर चढ़ने में भूपसिंह का कोई मुकाबला नहीं हैं। वह पहाड़ों पर अपना संतुलन बनाकर सरलता से चढ़ जाता हैं।

(ii) पुष्ट एवं शक्तिशाली :– भूप पुष्ट एवं शक्तिशाली है। वह अत्यन्त सख्त है।

(iii) सबका हितैषी :– भूपसिंह का माही के लोगों से संबंध नही हैं। परन्तु वह किसी का अहित नहीं करता। वह सभी का भला चाहता हैं।

(iv) खुद्दारी के प्रति सजग:– भूपसिंह अपनी खुद्दारी के प्रति सजग है। उसने पहाड़ के धंसने पर हुए सर्वनाश में भी किसी से सहायता नहीं मांगी थी।

(v) बेहद अकेला :–

(vi) सहनशील एवं गम्भीर :–

खण्ड – (द)

19. निम्नलिखित पठित का व्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 1 +4 = 5

उत्तर :–

श्रृंगार रहा जो निराकार
रस कविता में उच्छवसित– धार
गाया स्वर्गीया– प्रिया– संग
भरता प्राणों में राग –रंग,

श्रेष्ठ शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

रति रूप प्राप्त कर रहा वही,
आकाश बदल कर बना मही।
हो गया ब्याह, आत्मीय स्वजन
कोई थे नहीं, न आमंत्रण
था भेजा गया, विवाह राग
भर रहा न घर निशि – दिवस जाग,
प्रिय मौन एक संगीत भरा
नव जीवन के स्वर पर उतरा।

अथवा

लेकिन पूरी तरह तुम्हारे संकोच लज्जा परेशानी
या गुस्से पर आश्रित
तुम्हारे सामने बिल्कुल नंगा निर्लज्ज और निरांकाक्षी
मैंने अपने को हटा दिया है हर होड़ से
मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वन्द्वी या हिस्सेदारी नहीं
मुझे कुछ देकर या न देकर भी तुम
कम से कम एक आदमी से तो निश्चिंत रह सकते हों।

शेखावाटी मिशन–100

20. निम्नलिखित पठित गद्यांशो में से एक सप्रसंग व्याख्या कीजिए– **1 +4 = 5**

उत्तर :– हिन्दी के नए पुराने लेखको की चर्चा बराबर इस मंडली में रहा करती थी। मैं भी अब अपने को एक लेखक मानने लगा था। हम लोगो की बातचीत प्रायः लिखने–पढ़ने की हिन्दी में हुआ करती थी जिसमें 'निस्संदेह' इत्यादि शब्द आया करती थे। जिस स्थान पर मैं रहता था वहां अधिकतर वकील, मुख्तारों तथा कचहरी के अफसरों और अमलों की बस्ती थी। ऐसे लोगो के उर्दू कानों में हम लोगो की बोली कुछ अनोखी लगती थी। इसी से उन्होने हम लोगो का नाम 'निस्संदेह' लोग रख छोड़ा था

अथवा

ये लोग आधुनिक भारत के नए 'शरणार्थी' हैं, जिन्हे औद्योगीकरण के झंझावत ने अपने घर–जमीन से उखाड़कर

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

हमेशा के लिए निर्वासित कर दिया हैं। प्रकृति और इतिहास के बीच यह गहरा अंतर है। बाढ़ या भूकम्प के कारण कुछ लोग अपना घरबार छोड़कर कुछ अरसे के लिए जरूर बाहर चले जाते हैं किन्तु आफत टलते ही वे दोबारा अपने जाने–पहचाने परिवेश में लौट भी आते है। किन्तु विकास और प्रगति के नाम पर जब इतिहास लोगों को उन्मूलित करता हैं तो वे फिर कभी अपने घर वापस नहीं लौट सकते । आधुनिक औद्योगीकरण की आँधी में सिर्फ मनुष्य ही नहीं उखड़ता बल्कि उसका परिवेश और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते है।

21. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 400 शब्दों में सारगर्भित निबन्ध लिखिए अंक = 6

(अ) कोरोना वायरस – 21वीं सदी की महामारी

(ब) विद्यार्थी जीवन में इन्टरनेट की भूमिका

(स) राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका

(द) यदि मैं शिक्षा मंत्री होता

(य) कोरोना काल और शिक्षा

उत्तर :–(अ) कोरोना वायरस – 21वीं सदी की महामारी

संकेत बिन्दु –

(1) प्रस्तावना

(2) कोरोना वायरस – लक्षण एवं बचाव के तरीके

(3) कोरोना वायरस महामारी का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव

(4) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना :– सन् 2020 के प्रारम्भ से ही कोरोना वायरस के रूप में जो महामारी फैल रही हैं, उसने सम्पूर्ण विश्व को हिलाकर रख दिया है। इस महामारी के कारण विश्व के समृद्ध देशों की स्थिति दयनीय हो गई है। वर्ष 2019 के अन्त में चीन के वुहान शहर के पहली बार प्रकाश में आए कोरोना वायरस संक्रमण ने विश्व के लगभग सभी देशों को अपनी चपेट में ले लिया हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन, (डब्ल्यू एच ओ) ने घातक कोरोना वायरस का आधिकारिक नाम कोविड–19 रखा हैं, जिसमें 'को' का अर्थ कोरोना, 'वि' का अर्थ वायरस तथा 'डी' का अर्थ डिसीज (बीमारी) है। चूंकि इस विषाणु

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

की पहचान पहली बार 31 दिसम्बर 2019 को चीन में हुई थी अतः अन्त में वर्ष 2019 का 19 अंक लिया गया हैं।

(2) कोरोना वायरस – लक्षण एवं बचाव के तरीके :–

लक्षण :– इसके लक्षण फ्लू से मिलते–जूलते हैं संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना, सिर में तेज दर्द, सुखी खांसी, गले में खराश व दर्द आदि समस्या उत्पन्न होती है। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता हैं, इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही हैं कुछ मामलों में कोरोना वायरस घातक भी हो सकता हैं खास तौर पर अधिक उम्र के लोग और जिन्हे पहले से अस्थमा, डायबटीज, हार्ट आदि की बीमारी हैं।

बचाव के तरीके :–स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं इसके मुताबिक हाथों को बार–बार साबुन से धोना चाहिए, इसके लिए अल्कोहल आधारित हैंड सेनेटाइजर का भी इस्तेमाल किया जा सकता हैं। खाँसते व छींकते समय अपने मुँह और नाक को टिशू/रूमाल से ढककर रखें। अपने हाथों से बार–बार आंख, नाक या मुंह न छुएं। भीड़– भाड़ वाले स्थान पर न जाएं। मास्क का प्रयोग करें तथा टीका लगवायें।

(3) कोरोना वायरस महामारी का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव :– इस वैश्विक महामारी से बचाव, रोकथाम, उपचार एवं पुनर्वास हेतु विश्व के लगभग सभी देशो मे लॉकडाउन, आइसोलेशन, क्वारंटाइन की नीति अपनाई गई, संक्रमण के भय से लगभग समस्त सामाजिक गतिविधियां, उत्सव, आदि बन्द हो गए। आर्थिक गतिविधियो के बन्द हो जाने से लोगों के रोजगार एवं आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। इससे न केवल निर्धनता के परिणाम और घातकता में भारी वृद्धि हुई है। इससे खाद्य असुरक्षा में वृद्धि, उत्पादन में कमी आदि से सामाजिक जीवन अत्याधिक प्रभावित हुआ हैं। इस महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को तोड़कर रख दिया हैं।

(4) उपसंहार– कोरोना वायरस जो 21वीं सदी की भयंकर महामारी हैं, इसने सम्पूर्ण विश्व को घेर लिया है। इस महामारी से स्वयं को बचाते हुए प्रत्येक नागरिक दूसरों का हित चिन्तन करे तथा 'जान भी हैं जहान भी हैं' इस कथन को सिद्ध करते हुए देश व समाज की समृद्धि में सभी को योगदान देना चाहिए।

श्रुतिवाणी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
हिन्दी साहित्य

→ निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नो के उत्तर लिखिए–

जब हम भारतीय साहित्य की एकता की चर्चा करते हैं तब हमारा आशय भारतवर्ष की भिन्न – भिन्न भाषाओं की साहित्य समाश्रयता से होता है। यदि हम आज की हिन्दी, बंग्ला, मराठी, गुजराती, अथवा दक्षिणी भाषाओं के साहित्य को देखे, तो उनमें थोड़ा बहुत अन्तर भी दिखेगा। परन्तु सार रूप में प्रवृतियां प्रायः एक सी ही पाई जाती हैं। विभिन्न प्रदेशो और जनपदो की सास्कृतिक विशेषताओं की छाप इन साहित्यों में प्राप्त होती हैं, जो स्वाभाविक हैं। साहित्य के विविध रूपों में से किसी भाषा में किसी रूप की विशिष्टता मिलती हैं। उदाहरण के लिए आज की मराठी साहित्य में नाटको की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक अच्छी हैं, व्यक्तिक निबन्ध भी उनके यहां अधिक परिणाम में लिखे जा रहे है। यह उनकी प्रासंगिक विशेषता है। इसी प्रकार वैभिन्नय के भीतर एक मूलभूत एकता हैं जिसे हम साहित्य की एकता कह सकते है।

1. भारतीय साहित्य की एकता का विषय क्या हैं–

(अ) विभिन्न भाषाओं के साहित्य की एकता

(ब) उनमें प्रचलित समान प्रवृतियों से

(स) अ व ब दोनों

(द) केवल अ (स)

2. मराठी साहित्य की प्रासंगिकता हैं–

(अ) नाटक और वैयक्ति निबंध की अधिकता

(ब) भाषाओं की समाश्रयता

(स) सांस्कृतिक विशेषताओं की अधिकता

(द) मूल भूत एकता (अ)

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

3. भारतीय साहित्य की विशेषता है–

(अ) विशिष्टता

(ब) वैभिन्य के भीतर एक मूलभूत एकता का होना

(स) समान प्रवृत्तियां

(द) समान भाषा (ब)

4. 'यह उनकी प्रासंगिक विशेषता हैं' यह किस प्रकार का वाक्य हैं–

(अ) मिश्र वाक्य

(ब) सयुक्त वाक्य

(स) साधारण वाक्य

(द) उपर्युक्त सभी (स)

5. 'समाश्रयता' शब्द में मूल शब्द उपसर्ग एवं प्रत्यय बताइए।

(अ) सम् + आ + श्रय + ता

(ब) सम् + अ + श्रय + त

(स) सम + आ + श्रय + त्

(द) सम + अ् + श्रय + ता (अ)

6. गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक क्या हैं–

(अ) भारतीय साहित्य की एकता

(ब) प्रासंगिकता

(स) सांस्कृतिक विशेषताएं

(द) साहित्यिक समाश्रयता (अ)

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

→ निम्नलिखित अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विस्तुनिष्ठ प्रश्नो के उत्तर लिखिए–

छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये।
दो बार नहीं यमराज कष्ठ कण्ठ धरत हैं,
मरता है जो एक ही बार मरता हैं।
तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे!
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे !।।

उपशम को ही जो जाति धर्म कहती हैं,
शम, दम, विराग को श्रेष्ठ कर्म कहती हैं,
धृति को प्रहार, क्षान्ति को वर्म कहती हैं,
अक्रोध, बिनय को विजय–मर्म कहती हैं,

अपमान कौन, वह जिस को नहीं सहेगी?
सब को असीस, सब का बन दास रहेगी।।

शेखावाटी मिशन–100

1. 'छोड़ो मत अपनी आन' – इस पंक्ति से कवि ने क्या संदेश दिया हैं–

(अ) चाहे प्राणों का बलिदान करना पड़े
(ब) अपरिमित कष्ट सहना पड़े अपनी आन नहीं छोड़नी
(स) अ व ब दोनो
(द) केवल ब (स)

2. संसार में कौनसे लोग अपमान सहते हैं–

(अ) शान्ति, क्षमाशील
(ब) सहिष्णु, विराग
(स) इन्द्रिय – संयम, धैर्य, अक्रोध, विनय आदि
(द) उपर्युक्त सभी (द)

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

3. 'स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो' का आशय हैं–

(अ) मृत्यु से डरना

(ब) आत्म सम्मान की कमी

(स) मृत्यु से न डरकर आत्मसम्मान की रक्षार्थ मर–मिटना

(द) कोई नहीं (स)

4. व्यक्ति को अपने स्वाभिमान की रक्षा किस तरह करनी चाहिए–

(अ) सीस कट जाने पर (ब) भयानक संकट आ जाने पर

(स) जान भी देनी पड़े (द) ब व स दोनों (द)

5. काव्यांश का मूलभाव क्या हैं–

(अ) अपनी आन–बान और शान

(ब) शान बनाए रखकर स्वतंत्र जीवन जीना

(स) तथा इसके लिए प्राणोत्सर्ग करने की प्रेरणा देना

(द) उपर्युक्त सभी (द)

2. दिए गए रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(i) अलंकार संप्रदाय के प्रवर्तक .... हैं (भामह)

(ii) उपमान को उपमय के समान लाने पर .... अलंकार होता है। (प्रतीप)

(iii) काव्य गुणो के प्रतिष्ठापक आचार्य .... है। (वामन)

(iv) काव्य गुणों की सर्वाधिक संख्या स्वीकार करने वाले .... आचार्य हैं। (भोजराज)

(v) छंद शास्त्र (वैदिक छंद) के आदि प्रवर्तक .... हैं– (ब्रह्म)

(vi) दोहा, सोरठा छंद में कुल .... मात्राएं होती हैं– (48 – 48)

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नो के उत्तर दीजिए –

(1) ''बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।।''

उपर्युक्त पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम एवं लक्षण लिखिए–

उत्तर :–उक्त पंक्ति में विभावना के बिना कारण के अथवा विपरित कारण के कार्य की उत्पति अर्थात कार्य के हाने का वर्णन किया जाता है। उक्त पंक्ति में बिना पैर के चलना, बिना कान से सुनना और हाथो के न होने पर भी अनेक कर्म करने का वर्णन हुआ है। अतः इसमें बिना कारण के कार्य होने का वर्णन होने से विभावना अलंकार हैं।

4. नीचे लिखी पंक्तियों में आये अर्थालंकार का नाम और लक्षण लिखिए।

जो रहीम ओछो बढ़ै, तो अति ही इतराय।
प्यादे ते फरजी भयो, टेढ़ो जाय।।

उत्तर :–इसमें ''दृष्टान्त'' नामक अर्थलंकार है।

लक्षण :– जहां एक बात कहकर फिर उससे मिलती – जुलती दूसरी बात की जाए, दोनो बातो में भिन्न – भिन्न धर्म होते हुए भी बिम्ब – प्रतिबिम्ब भाव हो वहां दृष्टान्त अलंकार होता हैं।

3. पत्रकारीय लेखन और साहित्यिक लेखन में अन्तर स्पष्ट कीजिए–

उत्तर :–(1) पत्रकारिता लेखन का संबंध वास्तविक घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों से हैं जबकि साहित्यिक लेखन का कल्पना से।

(2) पत्रकारिता लेखन का संबंध समसामयिक होता हैं जबकि साहित्यिक का इतिहास से।

4. संवादाता या रिपोर्टर किसे कहां जाता हैं–

उत्तर :–जो व्यक्ति किसी विशेष स्थान का समाचार लिखकर समाचार पत्रिका, पत्रिका आदि में छापने के लिए भेजता हो या सीधे दूरदर्शन पर समाचार देता हो उसे रिपोर्टर या संवाददाता कहते हैं। आमतौर पर अखबारों में समाचार पूर्वकालिक और अंशकालिक पत्रकार ही लिखते है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

5. 'मास्टर ऑफ वन' को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :–किसी एक विषय में विशेषज्ञता होना को 'मास्टर ऑफ वन' कहा जाता हैं।

6. साझे की खेती के बारे में हाथी ने किसान को क्या बताया –

उत्तर :–हाथी ने किसान को कहां कि वह उसके साथ साझे की खेती करे तो उसे लाभ ही होगा। क्योंकि उसके रहते जंगल के छोटे–मोटे जानवर खेतो को नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे और खेतीा की अच्छी रखवाली हो जाएगी।

7. 'अमझर' गांव के आम पेड़ो पर सूनापन क्यों आ गया था?

उत्तर :–अमरौली प्रोजेक्ट के तहत नवगांव क्षेत्र के कई गांव उजड़े जाने की घोषणा से पेड़ों में सूनापन आ गया था।

8. 'कार्नेलिया का गीत' का कथ्य कहा हैं–

उत्तर :–भारत देश की गौरव गाथा तथा प्राकृतिक का वर्णन प्रमुख कथ्य हैं।

9. 'सरोज– स्मृति' कविता किस भाव से केन्द्रित हैं–

उत्तर :–'सरोज–स्मृति' कविता निराला की दिवंगत पुत्री सरोज की स्मृतियों पर केन्द्रित है।

10. कविता क्या हैं–

उत्तर :–हम कह सकते ही की कविता हमारी संवेदनाओं के बहुत ही निकट होती है। वह हमारे मन को छू लेती है। एवं कभी– कभी वह हमे झकझोर देती है। कविता के मुल संवेदना हैं राग तत्व है। यह संवेदना सम्पूर्ण सृष्टि से जुड़ने और अपना बना लेने का बोध हैं।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

11. नाटक का भूतकाल भविष्य काल और वर्तमान काल से क्या संबंध हैं–

उत्तर :– नाटककार अपनी रचना का विषय भूतकाल अथवा भविष्यकाल किसी भी काल से ले सकता हैं। नाटक का काल कोई भी हों परन्तु नाटक एक विशेष समय में एक विशेष स्थान पर वर्तमान काल में घटित होता है। जैसे नाटक में कोई एतिहासिक या पौराणिक कहानी को हम वर्षो पश्चात उसे पुनः मंत्र पर प्रत्येक्ष घटित होते हुए देख सकते है।

12. कथानक में द्वन्द्व का क्या महत्व हैं–

उत्तर :–कथानक के बुनियादी तत्वों में द्वन्द्व का महत्व बहुत अधिक है। द्वन्द्व ही कथानक को आगे बढ़ाता है। कहानी में द्वन्द्व दो विरोधी तत्वों का टकराव या किसी की खोज में आने वाली बाधाएं, अन्तर्द्वन्द्व आदि के कारण पैदा होता हैं। कहानीकार अपने कथानक में द्वन्द्व के बिन्दुओं को जितना स्पष्ट रखेगा, कहानी भी उतनी सफलता से आगे बढ़ेगी।

निर्देशः– प्रश्न में 04 से 15 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम शब्द सीमा 40 शब्द है।

4. विशेष रिपोर्ट को किस शैली में लिखा जाता हैं? बताइयें।

उत्तर :– आमतौर पर विशेष रिपोर्ट को उल्टा पिरामिड शैली में लिखा जाता हैं। लेकिन कई बार इन रिर्पोटो की फिचर शैली में भी लिखा जाता हैं। चूंकि ऐसी रिपोर्ट सामान्य सामाचारों की तुलना में बड़ी और विस्तृत होती हैं। अतः रूचीकर बनाए रखने हेतु रिपोर्ट उल्टा पिरामिड शैली और फीचर शैली दोनो को मिलाकर लिखा जाता है।

5. फीचर लेखन ढ़ांचा बताते हुए प्रमुख फीचर लेखन के नाम बताइऐ।

उत्तर :–फीचर का कोई निश्चित ढ़ाचा नहीं होता है। फीचर कही से भी शुरू कर सकते है। हर फीचर का एक प्रारम्भ, मध्य और अंत होता है। प्रारंभ आकर्षक और उत्सुकता पैदा करने वाला होना चाहिए। समाचार बैकग्राउंडर, खोजपरक फीचर, साक्षात्कार फिचर, जीवनशैली फीचर, रूपमक फीचर, व्यक्ति चित्र फीचर आदि प्रमुख फीचर हैं।

6. बड़ी बहुरिया अपने मायके संदेश क्यों भेजना चाहती थी–

उत्तर :–पति का निधन होने के बाद से ही बड़ी बहुरिया के तीन देवरों ने लड़ाई – झगड़ा शुरू कर दिया था। वे

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

गांव छोड़कर शहर में जा बसे थे। बड़ी बहुरिया की देह से जेवर खींच छीनकर बांट लिए थे। बड़ी बहुरियां की आर्थिक हालत खराब हो गई थी। वह गरीबी मे जी रही थी। इसलिए अपने मायके सन्देश भेजना चाहती थी कि वे उसे अपने पास बुलाा ले।

7. कोयल और भौरों के कलरव का नायिका पर क्या प्रभाव पड़ता हैं–

उत्तर :–कोयल और भौंरो के कलरव का नायिका पर यह प्रभाव पड़ता हैं कि कोयल की मधुर कूक और भौरो की मधुर गुंजार नायिका के विरह को और उद्दीप्त कर देते हैं, इसलिए वह कान बन्दकर लेती है। आशय यह हैं कि उनके कलरव को सुनकर नायिका का विरह बढ़ जाता हैं क्योकि उसे और अधिक प्रिय की याद सताने लगती है।

8. कवि जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर :–जयशंकर प्रसाद भारतीय संस्कृति से प्रभावित ऐसे महाकवि थे जिन्होने अपनी रचनाओं में भारत भूमि की महिमा भारतीय जीवन–मूल्यो, त्याग–बलिदान एवं राष्ट्रीय जागरण आद का स्वर व्यक्त किया। प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । उन्होने झरना, ऑसू, लहर, कामायनी आदि काव्य, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी आदि नाटक, कंकाल, तितली, इरावती, उपन्यास– आंधी, इन्द्रजाल, आकाशदीप आदि कहानी संग्रह तथा काव्य और कला तथा अन्य निबंध–संग्रह की रचना कर साहित्य की सभी विधाओं पर लेखनी चलाई है।

9. दो रूपए में प्राप्त बोधिसत्व की मूर्ति को फ्रांसीसी डीलर दस हजार रूपयों में भी लेने को क्यो उत्सुक था।

उत्तर :–लेखक ने बुढ़िया से दो रूपए में जो मूर्ति लेनी थी वह बहुमूल्य थीं। वह बोधिसत्व की अब तक संसार में पाई गई मूर्तियों में सबसे पुरानी है। मूर्ति के पदस्थल पर खुदा था कि कुषाण सम्राट कनिष्क के राज काज के दूसरे वर्ष स्थापित की गई थी। उस मूर्ति का चित्र और उसका वर्णन विदेशी पत्रों में छप गया था। फ्रांसीसी डीलर ने उसे पढ़ा होगा इसलिए वह उसे दस हजार रूपए देकर लेने को उत्सुक था।

शिक्षा वाहिनी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

10. भारत का आत्म परिताप उनके चरित्र के किस उज्जवल पक्ष की ओर संकेत करता हैं –

उत्तर :–भरत का आत्म परिताप इस बात की ओर संकेत करता हैं कि वे सज्जन स्वभाव के तथा श्रीराम से आगाथ स्नेह रखते है। उनका ह्रदय निर्मल हैं और माता कैकेयी ने जो कुछ अनर्थ किया, उसे वे अपने दुर्भाग्य का दोष मानते हैं। श्रीराम के वनगमन से माताओं एवं नगरवासियों का दुःख उन्हे व्यथित करता हैं। राम वनवास का कारण वे स्वयं को दोषी मानते है।

11. रामचन्द्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय लिखिए ।

उत्तर :–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रखर आलोचक, इतिहासकार और मौलिक चिन्तन थे। उन्होने भारतीय साहित्य की नई अवधारणा प्रस्तुत की और हिन्दी आलोचना का नया स्वरूप विकसित किया हिन्दी साहित्य के इतिहास को व्यस्थित करते हुए शुक्लजी ने हिन्दी कवियों की सम्यक समीक्षा प्रस्तुत की । उन्होने आलोचनात्मक लेखन के साथ ही भाव और मनोविकार संबंधी उच्च कोटी के निबंध भी लिखे। शुक्लजी की प्रमुख रचानाएं इस प्रकार हैं–

1. निबंध–संग्रह – चिन्तामणिस चार खण्ड, रस मीमांसा।

2. आलोचनात्मक ग्रन्थ – सूरदास, तुलसीदास, त्रिवेणी।

3. सम्पादन – जायसी ग्रन्थावली, भ्रमरगीत सार, आनन्द कादम्बिनी पत्रिका।

4 इतिहास–ग्रन्थ – हिन्दी साहित्य का इतिहास

इनके अलावा शुक्ल जी ने कहानी, साहित्यिक लेख, काव्य, संस्मरण आदि के लेखन से अपने साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय दिया है।

12. सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि से गुप्त रखना चाहता था–

उत्तर :–सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानी को इसलिए गुप्त रखना चाहता था, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि लोग प्रश्न करते कि इस अन्धे भिखारी के पास इतन धन कहां से आया और यदि इतने रूपए इसके पास थें तो वह भीख क्यों मांगता था? भिखारियों के लिए धन संचय पाप संचय से कम अपमान की बात नहीं हैं।

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

13. शैला और भूप ने मिलकर किस तरह पहाड़ पर अपनी मेहनत से नयी जिंदगी की कहानी लिखी?

उत्तर :–शैला और भूप ने मिलकर खेतो ढ़लवां बनाया और जहां पानी की समस्या थी वहां हिमांग ऊपर से गिरने वाले झरने के पानी को पहाड़ काटकर खेतों तक लाए। सर्दियों में जब पानी जम जाता तब लकड़ी जलाकर उसकी ऊष्मा से बर्फ को पिघलाते और खेतो मे पानी देते। इस प्रकार शैला और भूप ने मिलकर पहाड़ पर मेहनत से जिन्दगी की नई कहानी लिखी।

14. मालवा में अब जब सब जगह बरसात की झड़ी लगी रहती हैं तब मालवा के जन जीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है।

उत्तर :–मालवा में जब सब जगह बरसात की झड़ी लगी रहती हैं तब वहां के सारे कुएं –बावड़ी, ताल–तलैया पानी से लबालब भर जाते है और सभी नदी नाले भरपूर वेग से बहने लगते है। मालवा के पास से बहने वाली नर्मदा नदी में भी खूब पानी आ जाता हैं। वहां पर फसले लहलाती है। मालवा की बरसता लोगो के जन–जीवन को समृद्ध बनाती है। तथा खुशीया मनाने को उत्साहित करती हैं।

15. ''अजीब होते है ये पहाड़ी लोग।'' यह कथन किसके द्वारा किसके प्रसंग में कहा गया हैं–

उत्तर :– घोड़े वाला लड़का महीप रास्ते में पड़े एक भारी पत्थर को हटाने लगा। पत्थर हटाने में उसकी साहयता के लिए रूपसिंह घोड़े से उतरने वाला था कि लड़के ने अकेले ही पत्थर नीचे धकेल दिया। उस लड़के की खुद्दारी देखकर रूपसिंह ने उसी प्रसंग में यह कहा। परन्तु रूपसिंह स्वयं भी तो पहाड़ी था। इस बात पर स्वयं भी मन ही मन में झेंप गया था।

16 निर्मल जी सिंगरौली क्यों गए थे और उन्होने वहा जाकर क्या निष्कर्ष निकाला–

उत्तर :–सिंगरौली प्राकृतिक खनिज संपदा से भरा क्षेत्र था अतः उसका दोहन करने के लिए यहां सेन्ट्रल कोल फिल्ड एवं एन0टी0वी0सी0 ने तमाम स्थानिय लोगो को विस्थापित कर दिया था। नयी सड़के, नये पुल बने। कोयले की खादानों और उन आधारित ताप विद्युत गृहों का निर्माण हुआ। विकास की इस प्रक्रिया से कितने व्यापक पैमाने पर विकास हुआ इसका जायजा लेने के लिए दिल्ली की लोकायन नामक संस्था ने निर्मल जी को सिंगरोली भेजा था। वहां पहुंचकर लेखक ने देखा कि औद्योगिकरण और विकास के चक्के में आम आदमी को

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

अपने परिवेश एवं संस्कृति से विस्थापित होना पड़ा था। विकास का चेहरा माननिय होना चाहिए अर्थात विकास तो हो पर उससे मानव को कोई हानि न पहुंचे। हमारे स्तनधारियों ने विकास के लिए यूरोपिय मॉडल को अपनाकर उनकी नकल की हैं जो भारतीय परिवेश के लिए ठीक नहीं है। यही लेखक का निष्कर्ष हैं।

17. ''वह लता वही की, जहां कली तू खिली' पंक्ति के द्वारा किस प्रसंग को उदघाटित किया गया हैं–

उत्तर :–कवि यह उद्‌घाटित करना चाहता हैं कि बेट! जिस लता पर तुम कली बनकर खिली वह लता भी वहीं की थी, उसी जमीन की थी। कवि ने सरोज की ममता को अपने पीहर, मायके में सुख मिला था और सरोज को भी अपनी नानी के घर स्नेह मिला। एक भाव यह भी प्रकट होता हैं कि सरोज का ननिहाल लता हैं और सरोज कली हैं क्योंकि सरोज बचपन्न से वहीं और बड़ी हुई हैं। कविता की यह पंक्ति दोनो प्रंसगो को उद्‌घाटित करती हैं।

18. ''आशा से ज्यादा दिर्घजीवी और कोई वस्तु नहीं होती।'' सूरदास की मनः स्थिति के आधार पर इस कथन की विवेचना कीजिए –

उत्तर :–सूरदास ने झोंपड़ी मे रखी हुई रूपयों की थैली की चिन्ता थी। वह सोच रहा था–

''रूपए पिघल भी गए होंगे तो चांदी तो वहां पर ही होगी।'' उसने इस आशा से उसी जगह जहां छपर में थैली रखी थी, बड़े उत्तावलेपन और अधीरता से राख को टटोलना शुरू कर किया और पूरी राख छान डाली। उसे लोटा और तवा तो मिल गए परन्तु पोटली का कोई अता – पता न चला।

झोंपड़ी में राख हो जाने पर भी सूरदास को रूपए नहीं तो चांदी मिलने की आशा थी। उसके मन में यह आशा बनी रही और वह राख को बार–बार टटोलता रहा। उसके पैर आशारूपी इसी सीढ़ी पर रखे थे। पैरो का सीढ़ी से फिसलना आशा की डोर का टूटना था। जब आशा पूरी तरह नष्ट हो गयी तो उसके मन बहुत गहरी निराशा के गड्‌ढ़े में जा पड़ा। जब उसके मन रूपए मिलने की आशा पूरी तरह से मिट गई तो वह राख के ढेर पर बैठकर रोने लगा। आशा के दीर्घजीवन होने का अर्थ है कि आशा मनुष्य के मन में लंबे समय तक जीवित रहती हैं। काफी मुश्किले आने पर वह फिर से राख को बटोरकर एक जगह करने लगा।

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

19. निम्नलिखित पठित काव्यांशो में से किसी एक का संप्रसंग व्याख्या कीजिए –

यह दीप अकेला स्नेह भरा
हैं गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।
यह जन हैं– गाता गीत जिन्हे फिर और कौन गाएगा?
पनडुब्बा – ये मोती सच्चे फिर कौन कृती लाएगा?
यह समिथा–ऐसी आग हठीला बिरला सुलगाएगा।
यह अद्वितीय – यह मेरा – यह मैं स्वयं विसर्जित–
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।

अथवा

हिमालय किधर हैं?
मैने उस बच्चे से पूछा जो स्कूल के बाहर
पतंग उड़ा रहा था
उधर – उधर – उसने कहां
जिधर उसकी पतंग भागी जा रही थी
मैं स्वीकार करूँ
मैने पहली बार जाना
हिमालय किधर हैं।

प्रसंग :– प्रस्तुत अवतरण कवि केदारनाथ सिंह द्वारा रचित दिशा नामक कविता हैं। इस कविता में कपिव पतंग उड़ाते बच्चे से हिमालय के बारे में पूछकर बाल – मनोविज्ञान का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या :–कवि स्कूल के बाहर पतंग उड़ा रहे एक बच्चे से पूछता हैं कि हिमाालय किस दिशा में हैं? बच्चा पतंग उड़ाने में व्यस्त था। वह पतंग उड़ाने का आनन्द ले रहा था। उसे कवि का अचानक यह प्रश्न असामयिक लगा और फिर भी उसने सहजता से कहा कि हिमालय उधर है। जिधर मेरी पतंग उड़ रही है। बालक को हर चीज पतंग की दिशा में ही नजर आती हैं। कवि कहता हैं । कि मैने यह पहली बार स्वीकार किया कि बच्चों की दुनियां सीमित होती हैं उनकी सोच की सीमा भी उसी तरह सीमित होती हैं इस कारण वे हर चीज को अपने ढंग से देखते है और उसका उत्तर उसी दृष्टिकोण से देते हैं बच्चे दुनिया को अपने ढंग से देखते है। वे उसी सीमा

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

में सोचते है। वे अपने कार्य को करने की दिशा और लक्ष्य एक ही रखते है। इसके माध्यम से संदेश मिलता है। कि अपने लक्ष्य पर ध्याना रखते हुए निरन्तर उसी दिशा में बढ़ते रहना चाहिए क्योकि दिशा से भटकाव लक्ष्य प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करता है। बच्चे का सहज दृष्टिकोण की जीवन की सहजता को व्यक्त करता हैं।

विशेषः– **(i)** कविता बाल मनोविज्ञान का चित्रण करती है।

(ii) 'स्कूल के बाहर' में व्यंजना है।

(iii) 'उधर–उधर' में पुनरूक्तिप्रकाश अलंकार है।

(iv) भाषा सहज, सरल व सरस है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
हिन्दी साहित्य

निम्नलिखित पठित गद्यांशो का सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

खेतो की डाँड़–डाँड़ जा रहा था कि एक खेत की मेड़ पर बोधिसत्व की आठ फुटलंबी एक सुदंर मूर्ति पड़ी देखी। मथूरा के लाल पत्थर की थी। सिवाए सिर के पदस्थल एक वह संपूर्ण थी। मै लोटकर पांच–छह आदमी और लटकाने का समान गांव से लेकर फिर लौटा। जैसे ही उस मूर्ति को मैं उठवाने लगा वैसे ही एक बुढ़िया जो खेत निरा रही थी, तमककर आई और कहने लगी, ''बडे चले हैं मूरत उठावै। ई हमारा है। इम नप देबै। दुई दिन हमारा हर रूका रहा तब हम इनका निरवावा है। ई नकसान कठन भरी?'' मै समझ गया। बात यह हैं कि मै उस समय भले आदमी की तरह कुरता धोती में था इसलिए उसे इस तरह बोलने की हिम्मत पड़ी। सोचा कि बुढ़िया के मुहं लगना ठिक नहीं ।

प्रसंग :– इस अवतरण में लेखक ने यह बताया हैं कि उन्हें बोधित्व की कुषाणकालीन मूति किस तरह दा रूपयों में प्राप्त हुई। एक बुढ़िया के खेत पर पड़ी आठ फुट की वह प्राचीन मूर्ति पुरातात्विक दृष्टि से बेशकीमती थी। बुढ़िया उस पर अपना हक जता रही थी तब व्यास जी ने जेब में पड़े रूपयों को खनकाते हुए बुढ़ियाप को दो रूपए देकर संतुष्ट किया और मूर्ति अपने संग्रहालय के लिए ले ली।

व्याख्या :– संस्कृत में एक कहावत है।–

''उद्वेजयति दरिद्‌ परमुद्‌ायाः झणत्कारम्‌।''

अर्थात दूसरे की मुद्रा की झनझनाहट गरीब आदमी के हृदय में उत्तेजना पैदा करती है। व्यास जी ने जब खेत की मेड़ पर पड़ी आठ लंबी बोधिसत्व की उस प्रतिमा को उठावने का उपक्रम किया तो खेत मालकिन बुढ़िया ने यह कहते हुए एतराज किया कि यह मूर्ति मेरी है और मै इसे नहीं दूंगी। यह मेरे खेत से निकली है। दो दिन तक हमारा हाल रूका रहा तब हम इसे निकलवा पाए है। हमारा नुकसान कौन भरेगा। तब व्यास जी ने जेब में पड़े सिक्कों की खनखनाकर बुढ़िया के मन में लालच और उत्तेजना उत्पन्न कर दी और उसे दो रूपए देकर कहां– तुम ठीक कहती हो। ये दो रूपए लो। इससे तुम्हारा नुकसान भी पुरा हो जाएगा और ये मूर्ति यहा

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

पड़े–पड़े जो रूकावट पैदा कर रही हैं। वह दूर हो जाएगी साथ ही ये तुम्हारे किसी काम की भी नहीं हैं न तो दोहरी (के स्थान) पर इन्हे लगा सकती हो और न छप्पर में बंडेरी (मोटा खम्भा) के रूप में ये लगा सकेगी। बुढ़िया तुरन्त मान गई और कहने लगी मैं मना नहीं करती हैं आप इसे ले जाएं। इस तरह दो रूपए में वह बेशकीमती बोधिसत्व की मूर्ति प्रयाग संगहालय हेतु व्यास जी ने प्राप्त कर ली।

21. निबंध – बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं :–

मुख्य बिन्दु –

(i) प्रस्तावना

(ii) लिंगानुपात कम होने के कारण

(iii) स्त्री शिक्षा का महत्व एवं उपाय

(iv) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ–अभियान एवं उदेश्य

(v) उपसंहार

विस्तार से :–

(i) प्रस्तावना :–

वर्तमान काल में उनके कारणो से लिंगभेद का अंतर सामने आया है जो कन्या भ्रूण हत्या का पर्याय बनकर बालक–बालिका के समान अनुपात को बिगाड़ रहा है। इसी कारण आज ''बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं'' नारा दिया जा रहा है।

''चलती–फिरती लक्ष्मी घर आंगन की शान,
होती जिस घर की बेटियां उस तीर्थ जहांन।''

(ii) लिंगानुपात कम होने के कारण :–

वर्तमान में मध्यवर्गीय समाज बालिकाओं को पढ़ने में अपनी परम्परावादी सोच के

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

कारण बेटी को पराया धन मानता है। इसलिय बेटी को पालना–पोसना, पढ़ाना–लिखाना, उसकी शादी में दहेज देना आदि को बेवजह भार ही मानता हैं। इस दृष्टि से कुछ स्वार्थी सोच वाले लोग गर्भावस्था में ही लिंग परीक्षण करवाकर कन्या जन्म को रोक देते है। परिणामस्वरूप बेटी या कन्या को बचाना तथा संरक्षण देनो हमारा प्रथम कर्तव्य बन गया ।

''मानव तेरे कर्म को धरा रही धिवकार,
देवी कहता है। जिस रहा गर्भ में मार।''

(iii) स्त्री शिक्षा का महत्व एवं उपाय :–

शिक्षित नारी आदर्श ग्रहिणी आदर्श माता, आदर्श बहिन और आदर्श सेविका बनकर श्रेष्ठ नागरिक का निर्माण करती है। जिस राष्ट्र की नारियां शिक्षित होती हैं वह राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। हमारे देश में लड़कियों के लिए अब उच्च स्तर निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था हैं। सामान्य उच्च स्तर तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था हैं सामान्य शिक्षा के अतिरिक्त स्त्रीयों के लिए रोजपरक शिक्षा को भी अनेक योजनाएं सरकार द्वारा चलाई जा रही हैं। उच्च स्तर स्त्रियों के लिए शिक्षो के सभी क्षेत्रों में पुरूषों के समान ही उचित अवसर उपलब्ध है।

''बेटे से कम आंक मत कर देना भूल,
खूशबू दे जो उम्र भर बेटी ऐसा फूल।''

(iv) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ–अभियान एवं उदेश्य :–

''बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं'' अभियान के संबंध में हमरे राष्ट्रपति ने लोकसभा को जून 2014 में संबोधित किया। जिसमें इस आवश्यकता पर बल दिया गया कि ''बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं''उनका संरक्षण और सशक्तीकरण किया जाए। इसके बाद यह निश्चिय किया गया कि महिला एंव बाल विकास विभाग इस अभियान का मुख्य मंत्रालय होगा, जो कि परिवार कल्याण और मानव संसाधन मंत्रालय के साथ मिलकर इस कार्य को आगे बढ़ाएंगे। इस अभियान में लिंग परीक्षण में बालिका भ्रूण हत्या को रोकना बालिकाओं को पूर्ण संरक्षण तथा उनके विकास के लिए शिक्षा से संबंधित इसकी सभी गतिविधियों में पूर्ण भागीदारी रहेगी।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

''हाथ जोड़कर मिनाक्षी करती आज गुहार,
कन्या ही तो है सृष्टि का आधार।''

(v) उपसंहार :–

''बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं'' अभियान के प्रति हमारे समाज मे जागरूकता आनी चाहिए। बेटा–बेटी एक समान है। बेटियां भी बेटो से कम नहीं है। हर क्षेत्र में बेटियां आगे बढ़ रही है। वकील, डॉक्टर, प्रशासनिक अधिकारी, राजनीतिक, खेल, उद्यमी, पायलट अन्य सभी प्रकार के पेशे यहां तक की सेना एवं अन्तरीक्ष तक में स्त्रियां आगे बढ़ रहीं है। अतः बेटियों को बचाना और इन्हें पढ़ाना पूरे समाज की जिम्मेदारी है।

''बेटी का है मान जगत में, बेटी का कोई मान नहीं,
हे प्यारे भगवान! बता दो, बेटी क्या इंसान नहीं।''

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
सूरदास की झोंपड़ी – प्रेमचन्द्र

लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

1. 'चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनो का कलेजा कैसे ठंडा होता?' इस कथ के आधार पर सूरदास की मनः स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :– रात के दो बजे थे। सूरदास की झोपड़ी में आग लगी थी। बजरंगी तथा जगधर ने सूरदास से पूछा – 'आग कैसे लगी, चूल्हा ठण्डा किया था या नहीं?' इस पर नायकराम ने उत्तर दिया – 'चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मनो का कलेजा कैसे ठंडा होता।' सूरदास का किसी की बातों की ओर कोई ध्यान नहीं था। उसे अपनी झोपड़ी अथवा अपने बरतन आदि जल जाने की चिन्ता नहीं थी। उसे अपनी उस पोटली के जल जाने का दुख था जिसमें जीवन भर की कमाई थी। उन रूपयों से वह पितरों का पिंडदान अपने पौत्र मिठुआ की शादी आदि अनेक योजनाएं पूरी करना चाहता था। इसक प्रकार उसकी मनः स्थिति निराशापूर्ण थी।

2. 'यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी' सन्दर्भ सहित विवेचन कीजिए–

उत्तर :– सूरदास बैठा रहा लोग चले गए थे और धीरे–धीरे झोपड़ी की आग ठंडी हो गई थी। तब वह उठा और अनुमान से द्वार की ओर से झोंपड़ी में घुसा। उसने उसी दिशा में राख को टटोलना शुरू किया जहां छप्पर में पोटली रखी थी निराशा, उतावलेपन और अधीरता से उसने सारी राख छान डाली परन्तु पाटली नहीं मिली। उसने एक एक कर रूपऐ जोड़े थे। उसने सोचा था कि उन रूपयों से अपने पितरों को पिंडदान करेगा। रोटी अपने हाथो से बनाते पूरा जीवन बीत गया। अब वह अपने पौत्र मिठुआ की शादी करेगा और चैन की रोटी खायेगा। झोपड़ी जलने से उसके सारे अरमान ही जल गए थें। यह फूस की राख उसकी इन्ही अभिलाषाओं की राख थी।

निबन्धात्मक प्रश्नः–

3. 'तो हम सौ लाख बार बनाएंगे' इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र का वर्णन कीजिए–

उत्तर :– 'सूरदास की झोपड़ी ' का प्रमुख पात्र सूरदास ही हैं उसकी झोंपड़ी जला दी जाती हैं और जीवन भर

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

की संचित कमाई चोरी हो जाती हैं। वह निराशा उदास और दुखी है। मिठुआ के पुछने पर वह अपनी झोंपड़ी को बार–बार बनाने का निश्चय प्रकट करता हैं और कहता हैं – ''तो हम सौ लाख बार बनाएंगे। '' इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नखित हैं–

(i) दृढ़– सूरदास भिखारी होते हुए भी दृढ निश्चय हैं उसकी झोपड़ी को द्वेषवश भैरो जला देता हैं और रूपए चुरा लेता है। सूरदास बहुत दुःखी है। किन्तु उसमें निश्चय की कमी नहीं है।

(ii) बालोचित सरलता– सूरदास में बालोचित सरलता है। झोपड़ी के जलने पर और रूपए के न मिलने पर वह दुखी होकर रोने लगता है। परन्तु घिसू को मिठुआ से यह कहते सुनकर – ''खेल में रोते हो'' – वह एकदम बदल जाता हैं उसका पराजय भाव समाप्त हो जाता है।

(iii) कर्मठ और उदार – सूरदास कर्मठ हैं वह भीख मांगता हैं परंतु अपने कामो में अलग रहता है। द्वेषवश भैरो उसकी झोपड़ी जला देता है तथा रूपए चुरा लेता है तब वह उसके प्रति उदार बना रहता है।

(iv) परम्परा का प्रेमी – सूरदास धार्मिक परम्परा को मानता था वह अपने पुरखो का गया मे जाकर पिंडदान करना चाहता है। दूसरे के हित में कुंआ बनवना चाहता है। वह मिठुआ की शादी करने का अपना कर्तृव्य भी निभाना चाहता हैं। वह भैरो की पत्नी सुभागी को पिटने से बचाता है। वह अपने रूपयों की चोरी को पूर्व जन्म मे पाप का परिणाम मानता है।

(v) सहनशील– सूरदास सहनशील व्यक्ति हैं। झोंपड़ी जलने से उसकी सभी आशाएं और योजनाएं जल जाती है। पर वह सब कुछ चुपचाप सह लेता है।

4. 'सूरदास की झोपड़ी' पाठ की वर्तमान समय में प्रासंगिकता क्या हैं? अपने विचार लिखिए–

उत्तर :– प्रस्तुत पाठ 'सूरदास की झोपड़ी' प्रेमचन्द की प्रसिद्ध उपन्यास 'रंग भूमि' का एक अंश है। सूरदास उसके मूख्य पात्र तथा नायक हैं। उपन्यासकार ने उसके चरित्र के माध्यम से अपने पाठकों के जीवन का सर्वोतम

शैक्षणिक मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

संदेश देने का प्रयास किया हैं। मानव जीवन संघर्षपूर्ण होता है। मनुष्य के सामने अनके समस्याएं आती–जाती हैं। उसे अनेक विघ्न बाधाओं से होकर जीवन की नौका खेनी होती है। समाज के अनेक लोगो के अकारण ईर्ष्या द्वेष और दूश्मनी सहनी होती है। सूरदास अंधा हैं भिखारी हैं। वह अपना गुजारा भीख मांगकर करता है। वह फूस की झोंपड़ी में शान्ति से रहता है। वह किसी को सताता नहीं है। अपने दयालू स्वभाव के कारण वह भैरो की पत्नी सुभागी को उनके पति की पिटाई से बचाता है। इस कारण उसको भैरो की पत्नी को दुश्मनी का शिकार बनना पडता है। भैरों उसकी झोंपड़ी जला देता है। और रूपए चुरा लेता हैं। वह उसे रोता हुआ देखना चाहता है। फिर भी सूरदास उसके प्रति दुर्भावना नही ंरखता है। सूरदास के माध्यम से प्रेमचन्द संदेश देनो चाहता हैं ''कि मनुष्य को निराशा, अवसाद और गलानी से बचना चाहिए उसे दूसरो पर दोषरोपण ने करके स्वयं अपनी शक्ति और सामर्थ्य पर भरोसा रखना चाहिए। उसे आत्मविश्वास की भावना के साथ कठोर श्रम करके अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।

आरोहण – संजीव–

5. यूँ तो प्रायः लोग घर छोड़कर कही न कही जाते हैं परदेश जाते हैं, किन्तु घर लौटते समय रूप सिंह को एक अजीब किस्म की लाज, अपनत्व और झिझक क्यो घेरनी लगी–

उत्तर :– रूपसिंह हिमांगी की तलहटी में स्थित माही गांव का रहने वाला था। एक पर्वतरोही कपूर साहब उससे प्रसन्न होकर उसे मंसूरी ले गए थें वहा रूपसिंह ने पर्वतरोहण विभाग में चार हजार रूपए मासिक की नौकरी कर ली थी। अब पूरे ग्यारह वर्ष बाद वह कपूर साहब के बेटे शेखर कपूर के साथ अपने गांव लौट रहा था। पिछले ग्यारह साल से रूपसिंह का सम्पर्क अपने परिवार के लोगों के साथ नहीं था। उसे यह भी पता नहीं था कि उसके माता–पिता जीवित भी हैं या नहीं उसका भाई कहां हैं उसकी प्रेमिका शैला का क्या हुआ उसे कुछ भी पता नहीं था। कोई उससे पूछेगा कि वह इतने साल कहा रहा और अब लौटकर क्यो आया हैं तो वह क्या उतर देगा यह भी वह समझ नही पा रहा था। इस कारण उसको अपने गांव लोटने में अपनत्व का अभाव था किन्तु लज्जा और झिझक का अनुभव भी हो रहा था। शेखर कपूर का साथ होना रूपसिंह की लज्जा और झिझक का दूसरा कारण था।

श्रेष्ठवाणी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

6. बूढ़े तिरलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी की बात सुनकर अजीब क्यो लगा–

उत्तर :– माही पहुंचने पर रूपसिंह सबसे पहले तिरलोक सिंह के पास पहुंचा रूपसिंह ने अपना परिचय दिया और तिरलोक सिंह के पैर छूए। किसी ने पूछा कि वह इतने दिनो तक कहां रहा? रूपसिंह ने बताया कि वह पर्वतारोहण संस्थान में था वहा पहाड़ पर चढ़ना सिखाया जाता हैं। सरकार इस नौकरी के लिए चार हजार रूपए महीना वेतन देती है। बूढ़ा तिरलोकसिंह का गांव माही पहाड़ की तलहटी में बसा था। वह पहाड़ी था पहाड़ के लोग हर दिन पहाड़ पर चढ़ते उतरते थे। राह उनके लिए एक मामूली सा काम था इस काम के लिए सरकार चार हजार रूपए की नौकरी दे यह बात उसे सच नहीं लग रही थी। उससे पहले यह सुना भी नहीं था अतः उसे रूपसिंह की पहाड़ पर चढ़ने की नौकरी करने की बात अजीव सी लगी थी।

7. 'पर्वतारोहण संस्थान' से क्या आशय हैं–

उत्तर :–'पर्वतारोहण संस्था' उस संस्थान को कहते हैं जो पर्वत पर चढ़ने की इच्छा रखने वालो को पर्वत पर चढ़ने की कला सिखाते हैं। इसके लिए इन संस्थानों में पर्वत पर चढ़ने की कला में दक्ष व्यक्ति पर्वत पर चढ़ने की कला सिखाता है। इसमें ये लोग पतरों, खूंटियों , रस्सों, कूल्हाड़ी तथा दूसरी चीजो की मदद लेत हैं। अब तो पर्वतारोहण शिक्षा में पाठ्यक्रम में स्थान पा चुका हैं। पर्वतारोहण के क्षेत्र में बछेन्द्री पाल व संतोष यादव का नाम प्रसिद्ध हो चुका है।

8. 'भूपदादादा सांप थे , छिपकली थे, वनमानुष थे, या रोबोट थे।' इस कथन के आधार पर भूपसिंह चरित्र चित्रण कीजिए–

उत्तर :–भूप दादा आरोहण के प्रमुखतम पात्र हैं। पर्वतारोहण में उनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता है। पर्वत पर चढ़ने में उनकी महारत हासिल है। उन्होने पर्वतारोहण की शिक्षा नहीं ली हैं जो कुछ सिखा हैं अपने अनुभव से ही सिखा हैं। वह बिना किसी उपकरण की सहायता से पहाड़ पर चढ़ जाता है। यहा तक की पेड़ो और चट्टानों का सहारा लेना भी वह जरूरी नहीं समझते । भूपदादा पर्वत पर चढ़ते हैं तो किसी सांप, छिपकली, वनमानुष अथवा रोबोट जैसे लगते है। वह अत्यन्त शक्तिशाली हैं तथा उनमें अद्भुत आत्मविश्वास है। वह अपनी दो–दो पत्नियों तथा दो–दो बछड़ो को भी नीचे से अपने कंधो पर उठाकर पहाड़ के ऊपर ले आए थे। उनका छोटा भाई रूप भी इस मामले में उसका मुकाबला नहीं कर सकता है।हिमांग पर चढ़ते समय वह और उसका ि

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

मत्र शेखर पेड़ो और चट्टानो के सहारे थोड़ा उपर चढ़ पाते है। मगर फिर थककर हाफने लगते है।रूप तो पर्वता–रोहण की शिक्षा भी देता हैं किन्तु वह भी भूप दादा के सामने बोना सिद्ध होता है। भूपदादा कुशल पर्वतारोही, परिश्रम किसान , स्नेही भाई, सच्चे प्रेमी, सफल पति, यथार्थवादी मानव तथा वात्सल्यतामय पिता हैं। उनके चरित्र का प्रमुख गुण उनका आत्मसम्मान के प्रति सजग रहना है। वह कष्ट रहकर भी अपनी खुद्दारी यानी अपना आत्मविश्वास नहीं छोड़ते।

9. हमारी आज की सभ्यता इन नदियो को अपने गन्दे पानी के नाले बना रही हैं क्यों और कैसे –

उत्तर :– हमारी आज की सभ्यता यूरोप और अमेरिका से आयातित सभ्यता है। उसका आधार विशाल उद्योग हैं। इनमें बड़ी–बड़ी मशीने से भारी मात्रा में उत्पादन होता है। उनकी आवश्यकता का कच्चा माल प्राप्त करने के लिए वनो को उजाड़ा जाता है। इनका धुआं वातावरण को तथा दूषित रसायनो से युक्त पानी नदियों में बहकर उनको प्रदुषित करता हैं। नदियां जल का सर्वोतम साधन है। जल को जीवन माना गया है। जल उपलब्धता के कारण ही नदियों के तट पर विशाल प्रसिद्ध तथा ऐतिहासिक सभ्यताओं और नगरों का जन्म हुआ है। आज ही जीवनदायीनी नदियां मृत्यु का उपहार बांट रही है।कारखानो का दूषित पानी उनमें बह रहा हैं और जीवन के लिए संकट बन गयाहै। यह आधुनिक सभ्यता का ही दुष्प्रभाव हैं कि नदियो का जल पीने तो क्या खेतो की सिंचाई के लिए भी उपयुक्त नहीं रहा है।

10. 'डग डग रोटी, पग–पग नीर' यह उक्ति किसके बारे में कही गई है व क्यों–

उत्तर :– मालवा की धरती पर अनेक नदियां तथा जलाशय है। इस कारण वहां जल का आभाव नहीं होता है। खूब पानी मिलने के कारण फसले पैदा होती हैं तथा अन्न और खाद्य पदार्थो की कमी भी नहीं रहती है। इस कारण यह प्रदेश समृद्ध है। इसी कारण 'डग डग रोटी पग–पग नीर' यह युक्ति मालवा की धरती के लिए कही गई है। लेकिन आज की पश्चिमी सभ्यता हमे प्रकृति से दूर ले जा रही हैं। जिससे धरती पर तापमान बढ़ने से ऋतु चक्रप्रभावित हो रहा हैं। इससे खेतो में अन्नोत्पादन प्रभावित हो रहा हैं बड़े उद्योग लगाने से वातारण प्रदुषित हो रहा हैं। नदियों में स्वच्छ जल नहीं उद्योगो का अपशिष्ट कचरा बह रहा हैं। इससे मालवा की धरती उजड़ने का संकट पैदा हो रहा हैं।

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

11. अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था उसके क्या कारण हैं–

उत्तर :– अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता है जैसा गिरा करता था वर्षा का कम होना आज मालवा का ही नहीं अन्य प्रदेश क्षेत्रों की भी समस्या है। इसका कारण ॠतु चक्र का अवव्यवस्थित हो जाना हैं। वर्षा, शरद, तथा ग्रीष्म सभी ॠतुओ के समय चक्र में परिवर्तन हो गया है। बेमौसम बरसात होने से मानसून कम होता है तथा देर से ओर कम वर्षा होती है। औद्योगिकरण के कारण वायुमण्डल में प्रदुषण बढ़ रहा हैं इससे प्रकृति के नियम टुट रहे है। तापमान की निरन्तर वृद्धि हाने से वायुमण्डल में नमी घट रही है। आज हम अप्राकृतिक जीवन जी रहे है। वनो को काटा जा रहा हैं और यातायात कारखानों की वृद्धि ने वर्षा को ही नही गर्मी और सर्दी की ॠतुओ को भी प्रभावित किया हैं। मालवा में अब पहले जैसी बारिश इसी कारण नहीं होती हैं।

12. लेखक को क्यो लगता हैं कि हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता हैं? आप क्या मानते हैं–

उत्तर :– लेखक ने आधुनिक सभ्यता को 'खाऊ–उजाड़ू सभ्यता' कहा हैं। यह भारत की अपनी सभ्यता नहीं हैं। यह यूरोप तथा अमेरिका से भारत आई हैं। इस सभ्यता का आधार विशाल उद्योग हैं। इन विशाल उद्योग में भारी मात्रा में उत्पादन होता है। इसके लिए विश्व के अविकसित निर्धन देशो में बाजार तलाशा जाताहैं। इस तरह यह सभ्यता शोषण तथा पूंजी के केन्द्रीभूत होने की सभ्यता हैं। इससे जो बाहरी चमक दिखाई देती हैं उसे ही विकास माना जाता हैं। इस औद्योगिक सभ्यता के कारण होने वाला विकास वास्तविक विकास नहीं हैं। इस मान्यता के कारण वनो तथा प्राकृतिक संसाधनों का अनावश्यक दोहन होता हैं जिससे वातावरण प्रदुषित होता है। तथा लोगो को प्रकृति के प्रकोप को सामना करना पड़ता हैं। समस्त विश्व को आज जल, वायु तथा ध्वनि प्रदुषण झेलना पड़ रहा है। मौसम का चक्र बिगड़ गया हैं। वर्षा न होने से जलाभाव हो गया है। फसले भरपुर अन्न नहीं दे रही हैं खाने की वस्तुओं तथा पीने के पानी में का संकट हैं। समुद्रो का जलस्तर बढ़ रहा हैं ध्रूवों की बर्फ पिघल रही है, लद्दाख में बर्फ की जगह पानी गिर रहा है। बाड़मेर के गांव जलमग्न हो रहे है। यूरोप और अमेरिका में गर्मी पड़ रही है। कार्बन डाईऑक्साइड ने मिलकर धरती के तापमान को तीन डिग्री सेल्सियस बढ़ा दिया है। सारी गड़बड़ी पृथ्वी का तापमान बढ़ने से हो रही हैं। यह संकट इस पाश्चात्य सभ्यता के कारण उत्पन्न हुआ है। यह सभ्यता नहीं खाऊ–उजाड़ू अपसभ्यता है।

शिक्षा विभाग मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
काव्य गुण, दोष, छंद, अलंकार

दिए गए रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. ओज गुण में .... ध्वनियां का प्रयोग होता है। (मूर्धन्य)

2. कालीघटा का घमण्ड घटा, नभ मंडल तारक वृन्द खिले। पंक्ति में .... अलंकार है। (यमक)

3. छह अथवा आठ चरणो वाले छंद को .... छंद कहते है। (छप्पय)

4. संक्षिप्त उक्ति द्वारा प्रस्तुत और अप्रस्तुत का बोध जहां एक साथ होता हैं, वहां .... अलंकार होता हैं। (समासोक्ति)

5. जब किसी कविता को पढ़ने या सुनने मात्र से कानो में कटुता उत्पन्न हो जाए तो वहां .... दोष होता हैं। (श्रुति कटुत्व)

6. समान्यतः प्रत्येक छंद में चार पंक्तियां होती हैं , इनको .... या पद कहा जाता है। (चरण)

7. कुण्डलियां छन्द के प्रत्येक चरण में .... मात्राएं होती हैं। (24)

8. व्यतिरेक अलंकार में उपमान की अपेक्षा .... का उत्कर्ष दिखाया गया है।(उपमेय)

9. आचार्य भरत के काव्य गुणों की संख्या .... मानी हैं (दस)

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

10. 'पद बिनु चलै सुनै बिनु काना' पंक्ति में .... अलंकार हैं। (विभावना)

11. सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेस विवस पहिराई ने जाई । पंक्ति में .... अलंकार हैं (विशेषोक्ति)

12. 'होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन' में .... नामक काव्य गुण हैं' (ओज)

13. मनहरण कवित छंद के प्रत्येक चरण में .... वर्ण होते है। (31)

14. कारण के बिना ही कार्य हो जाने पर .... अलंकार होता हैं । (विभावना)

15. काव्य में जहां चमत्कार शब्द में स्थित होता हैं , वहां .... होता है। (शब्दालंकार)

16. 'शरद आया पुलो को पार करते हुए।' पंक्ति में .... अलंकार हैं। (मानवीकरण)

17. 'गीतिका' छंद के प्रत्येक चरण में .... मात्राएं होती हैं। (26)

18. 'छप्पय' छंद .... होता है (मात्रिक विषम)

19. 'रोला' छंद .... होता हैं। (मात्रिक सम)

20. ''बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो स्लेट पर या लाल खड़िया चाक, मल दी हो किसी ने। '' पंक्ति में .... अलंकार है। (उत्प्रेक्षा)

21. ओज गुण में .... वर्ण की प्रधानता होती हैं (कठोर)

शेखावाटी मिशन—100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

22. केशवदास ने 'कवि प्रिया' में .... दोषों का विवेचन किया है। (चार)

23. 'सोरठा' दोहे का .... होता है। (उल्टा)

24. मुख्यार्थ में बाधा पहुंचाने वाले कारकों को .... कहतें है। (काव्य दोष)

निम्नलिखित में से लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. समासोक्ति अलंकार लक्षण तथा उदाहरण लिखिए –

उत्तर – जहां संक्षिप्त उक्ति द्वारा प्रस्तुत और अप्रस्तुत अर्थ का बोध होता हैं अर्थात कुछ ऐसे विश्लेषणों का प्रयोग किया जाता है जिनसे प्रस्तुत और अप्रस्तुत अर्थ का बोध एक साथ हो जाता हैं वह समासोक्ति अलंकार होता है।

उदा0 :– सिन्धु सेज पर धरा वधू अब, तनिक संकुचित बैठी सी।
प्रलय –निशा की हल चल स्मृति में, मान किए सी ऐंठी सी।।

इसमें समान विश्लेषणो के द्वारा पृथ्वी एवं नायिका का वर्णन एक साथ किया गया हैं इसलिए समासोक्ति अलंकार है।

2. अन्योक्ति अलंकार को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए –

उत्तर –जहां अप्रस्तुत का वर्णन कर उसके द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाता है वहां अन्योक्ति अलंकार होता हैं।

उदा0 – नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इति काल।
अली कली ही सौं बन्ध्यौं, आगे कौन हवाल ।।

उक्त उदाहरण में भंवरे को लक्ष्यकर राजा जयसिंह को सावचेत रहने के लिए कहा गया है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

3. विशेषोक्ति अलंकार का लक्षण उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर – जहां कारण के हाने पर भी कार्य के न होने का वर्णन किया जावे, वहां विशेषोक्ति अलंकार होता है।यह विभावना अलंकार का विपरीतार्थक हैं।

उदा0 – नेह ने नैननि को कछु, उपजी बड़ी बलाय।

नीर भरे नित प्रति रहें, तऊ न प्यास बुझाया।।

यहां प्यास बुझाना कार्य का कारण नीर, पानी हैं। नीर नयर में रहता हैं जल से प्यास बुझानी चाहिए, परन्तु उससे प्यास नहीं बुझ रही हैं। कारण विद्यमान हैं, फिर भी कार्य नहीं होना वर्णित है।

4. दृष्टान्त अलंकार की परिभाषा लिखिए –

उत्तर –जहां पहले एक बात कही जाए, फिर उससे मिलती–जुलती दूसरी बात कही जाए उन दोनो में भिन्न – भिन्न धर्म होने पर भी बिम्ब – प्रतिबिम्ब भाव हो, अर्थात उपमेय और उपमान में बिम्ब – प्रतिबिम्ब भाव हो, तो वहा दृष्टांत अलंकर होता है।

5. 'पति –सेवारत सांझ'

उचकता देख पराया चांद,

ललाकर ओट हो गयी ।'

इसमें कौनसा अलंकार हैं? नाम व लक्षण लिखिए–

उत्तर – इसमें मानवीय अलंकार है।

लक्षण – जहां पर अमूर्त भावों का मूर्तिकरण होवे, प्रकृति के अचेतन पदार्थो पर चेतन का अथवा मानवीय क्रिया, गुण आदि का आरोप किया जाए वहां पर मानवीकरण अलंकार होता है।

उक्त उदाहरण में संध्या पर पति –सेवारत स्त्री का एवं चन्द्रमा पर परपुरूष का आरोप कर मानव व्यवहार का आरोपण किया गया हैं। इसमें चन्द्रोदय के साथ ही संध्या के विलीन होने का दृश्य वर्णित है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

6. 'प्रतीप' अलंकार की परिभाषा का उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए–

उत्तर – जहां उपमान का उपमेय रूप में, उपमान का हीनत्व रूप में या तिरस्कार रूप में या उपमेंय को अप्रस्तुत रूप में रखकर वर्णन किया जाता हैं वहां प्रतीप अलंकार होता हैं। यह उपमा अलंकार के विपरीतार्थ होने पर प्रतीप कहलाता हैं।

उदाहारण :– **(i)** सिय मुख्य समता पाव किमि, चन्द्र बापूरो रंक।

(ii) कल्पवृक्ष केहि काम का जब है नृप जसवन्त।।

इन उदाहरणो में प्रसिद्ध उपमान चन्द्रमा और कल्पवृक्ष को हीन बताकर सियमुख और नृय जसवन्त चन्द्रमा और कल्पवृक्ष को हीन बताकर सियमुख और नृत्य जसवंत का अर्थात उपमान की उपेक्षा उपमेय का उत्कर्ष दिखाया गया है। इस तरह उपमा के विपरीतार्थ में वर्णन किया गया हैं।

7. 'अलंकार' का अर्थ लक्षण एवं परिभाषा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –अलंकार शब्द का अर्थ हैं – आभूषण या गहना । आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाते हैं इसी प्रकार काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व को अलंकार कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार ''जिसके द्वारा अलंकृत किया जाए वह अलंकार है।''

जैसे :– ''राम ने सीता के मुख की तरफ देखा'' इस वाक्य को अलंकार लगाकर कहे तो बहुत ही अधिक सुन्दर हो जाएगा– ''सिद्धमुख ससि भए नयन चकोरो।'' अर्थात राम के नेत्र रूपी चकोर सीता के मुख रूपी चन्द्रमा को देखने लगे। इस प्रकार अलंकार काव्य की शोभा बढ़ाने वाला धर्म हैं परन्तु काव्य में इसकी स्थिति आवश्यक या स्थिर नहीं मानी गई है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022

1. समाचार :– समाचार नवीनतम घटनाओं और समसामयिक विषयों पर तथ्यात्मक सूचनाओं को कहते हैं जिन्हे मुद्रण प्रसारण अन्तर्जाल (इन्टरनेट) की सहायता से पहंचाया जाता हैं।

→ समाचार लेखन के प्रकार :– समाचार लेखन के तीन प्रकार

(i) प्रिन्ट मिडियाः छापा खाना (मुद्रित माध्यम)

(ii) इलेक्ट्रोनिक मीडिया

(iii) इन्टरनेट

→ समाचार बनाने के लिए छह ककारो का प्रयोग किया जाता हैं–

प्रारम्भिक सूचनाः–

(i) क्या ?

(ii) कौन (किसके) ?

(iii) कब ?

(iv) कहां ?

→ विस्तृत सूचनाः–

(v) क्यों ?

(vi) कैसे ?

→ उल्टा पिरामिड शैली :– यह समाचार लेखन की विशेष पद्धति हैं। इसके तीन भाग होते हैं–

(i) इन्ट्रो :– यह समाचार का महत्वपूर्ण भाग होता है।

(ii) बॉडी :– इसमें सूचना का विस्तृत रूप होता है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(iii) समापन :– इसमें सूचना का समापन किया जाता है।

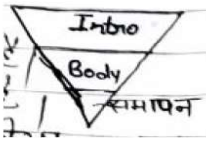

→ अच्छे लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बाते :–

(i) छोटे वाक्य लिखे तथा जटिल वाक्य की तुलना में सरल वाक्य संरचना को वरीयता दे।

(ii) आम बोलचाल की भाषा और शब्दों का प्रयोग करे।

(iii) उपयुक्त मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग करें।

(iv) अशुद्धियों का ध्यान रखें।

(v) लेखन कसावट पूर्ण हो।

(vi) भावनाओं विचारों और तथ्यो को वरीयता दे।

(vii) अच्छे लेखन में तथ्यों को जुटाने और किसी विषय पर बारीकी से विचार करने का धैर्य होना चाहिए।

→ पत्रकारीय लेखन :–

अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों, श्रोताओं तक सूचनाएं पहुंचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपो का इस्तेमाल करते हैं इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं जैसे– समाचार लेखन, फीचर लेखन, संपादक लेखन, स्तम्भ लेखन।

→ पत्रकारों के प्रकार :– पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं–

(i) पूर्णकालिक पत्रकार – किसी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतन भोगी कर्मचारी।

(ii) अंशकालिक पत्रकार – किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार।

(iii) फ्रीलांसर पत्रकार – इसका संबंध किसी खास अखबार से नहीं होता हैं बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग–अलग अखबारों के लिए लिखता है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

→ फीचर–

फीचर आम तौर पर तथ्यों सूचनाओं और विचारों पर आधारित कथात्मक विवरण होता हैं। फीचर मनोरंजक,सरस के साथ कलात्मक भी होना चाहिए। इनमें खोजपरक फीचर, यात्रा फीचर, साक्षात्कार फीचर, व्यक्तिगत, फीचर, रेडियो फीचर आदि प्रमुख है।

→ विशेष रिपोर्ट – अखबारों पत्रिकाओ ंऔर टीवी के समान्य समाचारों के अलावा किसी विषय पर गहरी छानबीन विश्लेषणात्मक, अनुसंधानात्मक तथा व्याख्यात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत होती हैं, उसे विशेष रिपोर्ट कहा जाता है। ऐसी रिपोर्ट किसी समकालीन सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विषय पर प्रकाशित की जाती है। यह उल्टा पिरामिड शैली का मिश्रण होती है।

→ विशेष रिपोर्ट के प्रकार :– इसके कई प्रकार होते हैं–

(i) खोजी रिपोर्ट :–

ऐसी रिपोर्ट में रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के जरिए ऐसी सूचनाएं या तथ्य सामने लाता हैं जो सार्वजनिक तौर पर पहले से उपलब्ध नहीं थी। खोजी रिपोर्ट का इस्तेमाल आम तौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओ और गड़बड़ी को उजागर करने के लिए किया जाता है।

(ii) इन डेफ्थ रिपोर्ट :–

ऐसी रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आंकड़ो की गहरी छानबीन की जाती हैं और उसके आधार पर किसी घटना समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्वपुर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।

→ स्तम्भ लेखन :–

यह विचार–परक लेखन का एक रूप में हैं। कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपनी खास लेखन शैली व वैचारिक रूझान के कारण लोकप्रिय होते हैं, ऐसे लेखको को अखबार में एक नियमित स्तम्भ लिखने का

शेखावाटी मिशन–100

जिम्मा मिल जाता हैं। स्तम्भ का विषय चुनने और उसमें विचार व्यक्त करने की स्तम्भ लेखक को पूरी आजादी होती है। कुछ स्तम्भ लेखन इतने लोकप्रिय होते है कि अखबार भी उनके कारण ही पहचाने जाते है।

→ संपादक के नाम पत्र :–

सभी अखबारों में यह एक स्थायी स्तम्भ होता हैं इस स्तम्भ के जरिए अखबार के पाठक न सिर्फ विभिन्न मुद्दो पर अपनी राय व्यक्त करते हैं, बल्कि जन समस्याओ को भी उठाते हैं एक तरह से यह स्तम्भ जनमत को प्रतिबिंबित करता हैं, साथ यह नए लेखकों को हाथ मांजने का भी अच्छा अवसर देता है।

→ लेख :–

अखबार के संपादकिय पृष्ठ पर समसामयिक मुद्दो या विषयो पर वरिष्ठ पत्रकारो और विषय विशेषज्ञो के द्वारा जो लेख प्रकाशित होते है उन्हे लेख कहते है। इन लेखो में लेखकों के विचारों को प्रमुखता दी जाती हैं। लेखक इन लेखो में तथ्यों और सूचनाओं के विश्लेषण और अपने तर्को के जरिए अपनी राय प्रस्तुत करता है।

→ ऑफ एड :–

समाचर पत्रों में संपादकीय पृष्ठ के सामने प्रकाशित होने वाला वह पन्ना जिसमें विश्लेषण फीचर साक्षात्कार और विचारपूर्ण टिप्पणियां प्रकाशित की जाती हैं। अंग्रेजी के हिंदू व इंडिया एक्सप्रेस जैसे अखबारो में ऑफ एड पृष्ठ देखे जा सकते है।

→ डेड लाइन :–

समाचार माध्यमों में किसी समाचार को प्रकाशित या प्रसारित हाने के लिए पहुंचने की आखिरी समय सीमा को डेड लाइन कहते है। अगर कोई समाचार डेड लाइन निकलने के बाद मिलता हैं तो आम तौर पर उसके प्रकाशित या प्रसारित होने की सम्भावना बहुत कम होती है।

→ डेस्क :–

समाचार माध्यमों में डेस्क का आशय संपादन से होता है। समाचार माध्यामों में (मौटे तौर पर

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

संपादकीय कक्ष डेस्क आोर रिर्पोटिंग मे बंटा होता है।) डेस्क पर समाचारो को संपादित किया जाता है उसे छपने योग्य बनया जाता है।

→ न्यूज पेग :–

न्यूज पेग का अर्थ हैं किसी मुद्दे पर लिखे जा रहे लेख या फीचर में उस ताजा घटना का उल्लेख जिसके कारण वह मुद्दा चर्चा में आ गया हैं जैसे शहर में महिलाओं के खिलाफ बढ़ रहे अपराध पर फीचर का न्यूज पेग सबसे ताजी वह घटना होगी जिसमें किसी महिला के खिलाफ अपराध हुआ हैं।

→ पीत पत्रकारिता :–

इस शब्द का सबसे पहले इस्तेमाल 19वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में हुआ। इसमें सनसनी फैलाने का तत्व प्रमुख होता है। उस समय के प्रमुख समाचार पत्रों ने पाठकों को लुभाने के लिए झूठी अफवाहों व्यक्तिगत अरोप प्रत्यारोप, प्रेम संबंधों, भंडा–फोड़ और फिल्मी गपशप को समाचार की तरह प्रकाशित किया गया ।

→ पेज थ्री पत्रकारिता :–

पेज थ्री पत्रकारिता का तात्पर्य ऐसी पत्रकारिता से है जिसमें फैशन, अमीरों की पार्टियों महफिलो और जाने–माने लोग (सेलिब्रिटी) के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। यह आमतौर पर समाचार पत्रों के तीसरे पृष्ठ पर प्रकाशित होता रहा है। इसलिए इसे पेज थ्री पत्रकारिता कहते है।

→ एफ एम (फ्रीक्वेंशी माड्यूलेशन) :–

रेडियो प्रसारण की एक विशेष तकनीक जिसमें फ्रीक्वेंसी को मॉड्यूलेट किया जाता है। एफ एम तकनीक अपेक्षाकृत नयी हैं और इसके प्रसारण की तकनीक बहुत अच्छी मानी जाती हैं लेकिन इसका दायरा सीमित होता है।

→ बीट :–

समाचार पत्र या अन्य समाचार माध्यमों के द्वारा अपने संवाददाता को किसी क्षेत्र या विषय विशेष की दैनिक रिर्पोटिंग की जिम्मेदारी दी जाती हैं इसे क्षेत्र या विषय को ही बीट कहते हैं जैस– कोई संवाददाता शिक्षा बीट कवर करता है तो कोई खेल को।

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

→ बीट रिपोर्टिंग व विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अन्तर :–

(i) बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में सामान्य जानकारी और दिलचस्पी होनी चाहिए जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सामान्य खबरो से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण किया जाता है।

(ii) एक बीट रिपोर्टर को अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरे ही लिखनी होती हैं। जबकि विशेषीकृत रिपोर्टर तथ्यों का विश्लेषण करके उसके तह तक जाकर कारणों को भी बाताएगा।

(iii) बीट रिपोर्टर को संवाददाता कहते हैं जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहते है।

→ स्टिंग ऑपरेशन :–

जब किसी टेलीविजन चैनल का पत्रकार छुपे टेलीविजन कैमरे के जरिए किसी गैर कानूनी, अवैध और असामाजिक गतिविधियों को फिल्माता हैं और फिर उसे अपने चैनल पर दिखाता हैं तो इसे स्टिंग ऑपरेशन कहते हैं। जैसे–' ऑपरेशन दुर्योधन, ऑपरेशन चक्रव्यूह आदि।

→ विशेष लेखन का विषय : –

शिक्षा, खेलकूद, फैशन, मनोरंजन सिनेमा, स्वास्थ्य, विज्ञान और पर्यावरण आदि।

→ पत्रकारीय विशेषज्ञता : –

पत्रकारीय विशेषज्ञता का अर्थ हैं कि व्यावसायिक रूप से प्रकाशित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को उस हद तक विकसित करना ही, उस विषय या क्षेत्र में घटने वाली घटनाओं और मुद्दों की आप सहजता से व्याख्या कर सके और पाठकों के लिए उनके मायने स्पष्ट कर सके।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

→ <u>पत्रकारिता की विशेषज्ञता कैसे हासिल करे</u> : –

(i) उस विषय से संबंधित पुस्तकें खुब पढ़नी चाहिए।

(ii) उस विषय से जुड़ी खबरों और रिपोर्टों की कटिंग करके फाइल बनानी चाहिए।

(iii) उस विषय के प्रोफेशनल विशेषज्ञों के लेख और विचारों की कटिंग को भी सहेज कर रखाना चाहिए।

(iv) उस विषय से संबंधित संदर्भ सामग्री भी यथासंभव जुटाकर रखना चाहिए।

(v) उस विषय का शब्दकोश औरा इनसाइक्लोंपीडिया आपके पास होनी चाहिए।

(vi) उस विषय में हमारी दिलचस्पी होनी चाहिए।

→ <u>कविता लेखन की प्रक्रिया</u> :–

(i) शब्दों से मेलजोल कविता की पहली शर्त हैं अतः आरंभ में शब्दों से खेलना चाहिए।

उदाहरणः– अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो अस्सी–नब्बे पूरे सौ।

(ii) कविता भाषा में होती हैं इसलिए भाषा का सम्यक ज्ञान होना चाहिए। भाषा प्रचलित और सहज होने पर संरचना ऐसी हो की वह पाठक को नयी लगे।

(iii) कविता में संकेतो का बड़ा महत्व होता हैं अतः आवश्यकतानुसार संकेतो का प्रयोग करना चाहिए।

(iv) छंद के अनुशासन से ही आंतरिक लय का निर्वाह सम्पन होता है। अतः छंदोंबद्ध और मुक्तछंद दोनो तरह की कविता के छंद का ज्ञान होना जरूरी है।

(v) कविता समय विशेष की उपज होती है। उसका स्वरूप समय के साथ–साथ बदलता रहता हैं अतः समय विशेष की प्रचलित प्रवृतियों की जानकारी कविता के लिए आवश्यक होती है।

(vi) कम शब्दों में अपनी बात कहना और कभी–कभी शब्दों या वाक्यों के बीच अनकहा छोड़ देना अच्छी कविता की विशेषता होती है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(vii) अच्छी कविता के लिए कवि में प्रतिभा होना भी आवश्यक हैं।

(viii) कविता के लिए विभिन्न काव्य शैलियों का ज्ञान भी जरूरी होता है।

→ नाटक की विशेषताएं :–

(i) नाटक ही एक ऐसी विधा हैं जो हमेशा वर्तमान काल में घटित होती है। यहा तक की नाटक की कहानी बेसक भूतकाल या भविष्यकाल से संबंधित हो तब भी उसे वर्तमान काल में घटित होना पड़ता है।

(ii) नाटककार को पहले घटनाओं का चुनाव करना पड़ता हैं फिर उन्हे एक निश्चित क्रम में रखना पड़ता है।

(iii) एक अच्छा नाट्ककार वही होता हैं जो कथा को आपसी बहस मुबाहिसों से आगे बढ़ाता है।

(iv) नाटक और रंगमंच जैसी विधा का सृजन मूलतः अस्वीकार के भीतर ही होता है।

→ नाटक के तत्व :–

(i) समय का बंधन :– नाटक को एक निश्चित समय में ही पूरा करना आवश्यक होता हैं तथा नाटक की विषय वस्तु चाहे भूतकाल की हो या भविष्यकाल की हो दोनो ही स्थितियों में वर्तमान काल में संयोजित करना पड़ता हैं। (नाटक में तीन अंक होते हैं प्रत्येक अंक 48 मिनट का होता हैं)

(ii) शब्द :– नाटक के लिए शब्द का विशेष महत्व है। नाटयशास्त्र में भी वाचिक अर्थात बोले जाने वाले शब्दो को नाटक का शरीर कहा गया है। नाटककार के लिए ये जरूरी हैं कि वह अधिक से अधिक सांकेतिक भाषा का प्रयोग करे जो अपने आप में वर्णित न होकर क्रियात्मक अधिक हो तथा शाब्दिक अर्थ के स्थान पर व्यंजनागत अर्थ या व्यंजित अर्थ की प्रधानता हो।

(iii) कथ्य/ कथानक :– नाटककार को कथ्य की कहानी के रूप में किसी शिल्प फॉर्म अथवा संरचना के

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

भीतर उसे पिरोना होता हैं इसके लिए घटनाओं, स्थितियों अथवा दृश्यों का चुनाव एवं उनका सही क्रम (शून्य से शिखर की ओर) लिखन आना चाहिए।

(iv) संवाद :– नाटक का सबसे जरूरी व सशक्त माध्यम हैं संवाद। अन्य विधाओं में संवाद इतने आवश्यक नहीं होते हैं। लेकिन नाटक का बिना संवादों के काम नहीं चल सकता। नाटक के लिए तनाव उत्सुकता रहस्य रोमांच और अंत में उपसंहार जैसे तत्व अनिवार्य हैं। इसके लिए आपस में विरोधी विचारधाराओं का संवाद होना जरूरी है। सशक्त नाटक में लिखें और बोले जाने वाले संवादों से ज्यादा अनलिखें व अनकहें संवादों का ज्यादा महत्व होता है। अंग्रेजी भाषा में इन्हें 'सबटैक्स्ट' कहा जाता हैं।

(v) चरित्र–चित्रणः– एक अच्छे नाटके के लिए यह अत्यंत जरूरी हैं कि उसके चरित्र सपाट सतही व टाईप्ड न होकर स्वाभाविक और जीवंत हो।

→ <u>कहानी का इतिहास</u> :–

कहानी का इतिहास उतना ही पुराना हैं जितना मानव का इतिहास। क्योंकि कहानी मानव स्वभाव और प्रकृति का हिस्सा हैं। धीरे–धीरे कहानी कहने की आदिम कला का विकास होने लगा।

→ कथावाचक कहानियां सुनाते थे कहानियां में घटनाओं युद्ध प्रेम, प्रतिशोध आदि के किस्से सुनाए जाते थे।

→ मानव स्वभाव का एक गुण कल्पना भी हैं अतः सच्ची घटनाओं पर आधारित कथा कहानी सुनाते सुनाते उसमें कल्पनाओं का भी समावेश होने लगा क्योंकि प्रायः मनुष्य वही सुनन चाहता है। जो उसे प्रिय हैं।

→ हम कहानी के नायक की हार पसंद नही करते, अतः कथा वाचक अपनी कल्पना के माध्यम से नायक की वीरता, शूरता उदारता आदि गुणों का बखान करेगा।

→ हमारे देश में कहानी की परम्परा बहुत पुरानी है, और देश के कई भागों में विशेष रूप से राजस्थान में आज भी प्रचलित हैं।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

→ प्राचीन काल में मौखिक कहानियां ही संचार का प्रमुख और लोकप्रिय माध्यम रही है।

→ धर्म प्रचार पुण्य ने कहानियों को ही अपना माध्यम बनाया। शिक्षा का माध्यम भी कहानियां थी जैसे पंचतंत्र की कहानियां बहुत ही शिक्षाप्रद है।।

→ कहानियों के तत्व :–

(i) कथानक :– कहानी का केन्द्रीय बिन्दु कथानक होता हैं कथानक कहानी का वह संक्षिप्त रूप हैं जिसमें प्रारम्भ से अंत तक की सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख किया गया है। कथानक में तीन स्थितियां होती हैं– प्रारम्भ, मध्य और अंत। कथानक आगे बढ़ता हैं तो उसमें द्वंद्व तत्व भी होता हैं, द्वंद्व का अर्थ बाधा । द्वंद्व कहानी को रोचकता प्रदान करती हैं। कथानक की क्रूरता की शर्त यही होती हैं कि कहानी नाटककीय ढंग से अपने उद्देश्य को पूरा करने के बाद ही समाप्त हो।

(ii) देशकाल :– कहानी का दूसरा प्रमुख तत्व देशकाल होता हैं जो कहानी को प्रामाणिकता और रोचकता प्रदान करता है। देश का अर्थ 'स्थान' और काल का अर्थ हैं 'समय' कहानी के घटित होने का स्थान और समय देशकाल है।

(iii) पात्र :– पात्र कहानी का महत्वपूर्ण तत्व होता हैं। कहानीकार के सामने पात्रों का स्वरूप जितना स्पष्ट होगा उतनी ही आसानी उसे पात्रों का चरित्र – चित्रण करने और उसके संवाद लिखने में होगी। कहानीकार को यह पता होना चाहिए कि पात्रों के गुणो का स्वयं बखान न करके पात्रों के क्रियाकलापों अथवा अन्य लोगो के कथनों द्वारा प्रकट करे।

(iv) संवाद/कथोपकथनः– कहानी के पात्रों के संवाद बहुत महत्वपूर्ण होते है। संवाद के बिना पात्र की कल्पना मुश्किल हैं। संवाद ही कहानी के पात्र को स्थापित, विकसित करते हैं और कहानी को आगे बढ़ाते हैं। अतः कहानी के पात्रों द्वारा बोले गए संवाद पात्रो के स्वभाव और पृष्ठ भूमि के अनुकूल हो तथा उसके विश्वासों, आदर्शों एवं स्थितियों के अनुकूल हो। जहां तक सम्भव हो संवाद संक्षिप्त होने चाहिए क्योंकि अधिक लंबे संवाद उबाऊ हो जाते है।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(v) चरमोत्कार्ष (क्लाइमेक्स) :– कथानक के अनुसार कहानी का चरमोत्कर्ष क्लाइमेक्स कहलाता हैं। क्लाइमेक्स का चित्रण बहुत ही सावधानी से करना चाहिए क्योंकि भावों या पात्रों की अतिरिक्त अभिव्यक्ति क्लाइमेक्स के प्रभाव को कम कर सकती है। कहानीकार का उद्देश्य पूर्ति के प्रति अतिरिक्त आग्रह कहानी को भाषण में बदल सकता है। अतः लेखक को यह प्रयत्न करना चाहिए कि पाठक को इतनी स्वतंत्रता दी जाए कि पाठक यह महसूस करे कि वह स्वयं चरमोत्कर्ष पर पहुंचा हैं उसने जो भी निर्णय निकाला है। वह उसका अपना है।

कविता में बिम्ब विधान :– किसी शब्द को पढ़कर या सुनकर जब हमारे मन में कोई चित्र उभर आता हैं तो उसे काव्य की भाषा में बिम्ब कहा जाता है। कविता में बिम्बों का बहुत महत्व हैं कविता में चित्रमय शब्दों का प्रयोग करने से उसकी ग्रह्यता बढ़ जाती है। बिम्ब के माध्यम से किसी अनुभूति को सही कविता में ढ़ाला जा सकता है। जो सहज ही समझ में आ सकती हैं। उदाहरण के लिए पंतजी की संध्या के बाद की ये पंक्तियां ली जा सकती है।

तट पर बगुलों सी वृद्धाऐं, विधवाऐ जप ध्यान में मग्न।
मंथर धारा में बहता जिनका अदृश्य गति अंतर रोदन।।

→ काव्य गुण :– काव्य में रस का उत्कर्ष करने वाली बातो को काव्य गुण कहते है।

→ काव्य गुणों के प्रकार – ये तीन प्रकार के हैं–

(i) माधुर्य गुण :– माधुर्य काव्य का वह गुण है। जो चित को पिघलाकर उसे आहलादित कर देता है। माधुर्य गुण का संबंध श्रृंगार, करूण व शांत रसो से होता हैं

उदाहरण :– मंद – मंद मुरली बजावत अधर धरे
मन्द – मन्द निकस्यों मुकुंद मधु बन ते।

(ii) ओज गुण :– ओज काव्य का वह गुण जिसके कारण काव्य में उत्साह उत्तेजना या तेजस्विता उत्पन्न होती है। ओज गुण का संबंध वीर, रौद्र तथा वीभत्स रसो होता है।

उदाहरण :– होगी जय होगी जय हे पुरूषोत्तम नवीन।

श्रद्धावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(iii) प्रसाद गुण :– जिस काव्य रचना को पढ़ते सुनते ही अर्थ समझ में आ जाता हैं वहां प्रसाद गुण होता है।

उदा0 :– विनती सुन लो हे भगवान

हम बालक है नादान।

→ काव्य दोष :– काव्य की रसानुभूति में बाधक तत्वों को काव्य दोष कहते है।

→ काव्य दोष के प्रकार :–

(i) च्युतसंस्कृति दोष :– जब व्याकरण विरूद्ध (व्याकरण की दृष्टि से दूषित) शब्द या शब्दो का प्रयोग किया गया हो या भाषा के संस्कार से गिरने का कारण च्यूतसंस्कृति दोष होता हैं(संस्कृति का आशय यहां व्याकरण से है।)

उदाहरण– क्षण भर रहा उजाला में

यहा उजाला को स्थान पर उजाले का प्रयोग किया जाता है।

(ii) अश्लील दोष :– काव्य में जब ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाए जो जुगुप्सा सूचक या लज्जासूचक हो जो सभ्य समाज या शिष्ट बोलचाल में लज्जा जनक माने जाते हैं।

उदा0 :– रावण की सभा में अंगद का पाद।

पाद शब्द का अर्थ पैर के साथ अपानवायु भी हैं जो जुगुप्सा सूचक है।

(iii) किलष्टत्व दोष :– जब किसी काव्य पंक्ति में ऐसे कठिन शब्दो को प्रयोग हो जिनका अर्थ लगाना मुश्किल हो वहां क्लिष्टत्व दोष होता हैं।

उदाहरण – हेम सुता पति वाहन प्रिय! तुम इसमें रति न फेर।

यहा पार्वती के पति शिव का वाहन बैल अर्थात मुर्ख हैं जो आसनी से समझ में नही आता है।

(iv) न्यून पदत्व दोष :– जब वाक्य में अर्थ ज्ञान के लिए आवश्यक होने पर भी किसी शब्द का प्रयोग न किया जाए वहां न्यून पदत्व दोष होता है।

जैसे :– पानी पावक प्रभु ज्यों असाधु त्यो साधु।

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

जल, अग्नि, हवा और ईश्वर जैसे बुरे के साथ बर्ताव करते है। वैसे ही भले के साथ करते है। यहा असाधु और साधु के आगे साथ शब्द भी अर्थ समझने के लिए आवश्यक है।

(v) अधिक पदत्व दोष :– जब काव्य में ऐसे अनावश्यक शब्दों का प्रयोग किया जाए जिनको हटा देने से भी काव्य के अर्थग्रहण में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती है। वहां अधिक पदत्व दोष होता है।

उदा0 :– लिपटी पुहुप पराग में सनी सेद मकरंद।

चूंकि पराग तो पुहुप का ही होता हैं अतः पुहुप शब्द में अधिक पद दोष है।

(vi) अक्रमत्व दोष :– जब वाक्य में शब्दो का क्रम वाक्य रचना की दृष्टि से अनुचित हैं वहा अक्रमत्व दोष होता हैं। यह दोष विभक्ति चिन्हों , अवयवो, उपसर्ग आदि के क्रम भंग होने से होता है।

उदा0 अ–मानुषी भूमि अ– बानरी करौ।

यहा अ–मानुषी शब्द भूमि के पूर्व नही अपितु पश्चात आना चाहिए तभी सही अर्थ निकलेगा भूमि को मनुष्यों और वानरों से हीन कर दूंगा।

अन्य उदाहरण – घंटा लेके जननि हरि को गोद में बैठती थी।

(vii) दुष्क्रमत्व दोष :– जहां शास्त्रों अथवा परंपरा में प्रसिद्ध क्रम के विपरीत कोई बात वर्णित हो वहां दुष्क्रम दोष होता हैं।

उदा0 : – मारूत – नदंन मारूत को मन को

खगराज को वेग लजायो।

अन्य उदा0 – राजन देहु मोहि अथवा देहु मतंग।

मतंग(हाथी), तरंग(घोड़ो) की अपेक्षा ज्यादा मूल्यवान होता है। अतः पहले हाथी मांगा जाना चाहिए फिर हाथी ने दे तो तुरंग दे।

(viii) पुनरूक्त दोष :– जब एक ही अर्थ वाले शब्दो का पुनः अनावश्यक प्रयोग कर दिया जाए वहां पुनरूक्त दोष होता हैं।

उदा0 :– दृश्य बड़ा था रम्य, मंजु, सुन्दर, मनोहर।

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

यहा रम्य, मंजु, सुन्दर, मनोहर आदि शब्द एक ही अर्थ की पुनरूक्ति कर रहे हैं।

(ix) ग्राम्यत्व दोषः– जब काव्य में शिष्ट समाज में प्रयुक्त न होने वाले असंस्कृति सूचक या गंवारू शब्दो का प्रयोग किया जाए वहां ग्राम्यत्व दोष होता है।

उदा0 – मूँड पे मुकुट धरे सोहत है गोपाल।

'मूँड' शब्द गंवरू है।

अन्य उदा0 – मच्चक – मच्चक मत चलो।

'मच्चक – मच्चक' गंवरू है।

(x) श्रुतिकटुत्व दोष :– जब काव्य में कानों को कठोर कर्कश लगने वाले वर्णो, परूष(कठोर) वर्णो का प्रयोग हो वहां यहदोष होता है।

मूर्धन्य वर्ण (ट वर्ग, ष आदि) संयुक्त वर्ण साधारणतः परूष और श्रुतिकटु होते है।

उदा0 :– भर्त्सना से भीत हो वह बाल तब चुप हो गया। यहां 'भर्त्सना' शब्द में श्रुतिकटुत्व दोष है।

अन्य उदा0 – 1. कब की इकटक डटि रही टटिया अंगरिन टारि।

2. कार्तार्थी तब होऊंगी मिलि हैं प्रतिम आय।

(xi) अप्रतीवत्व दोष – जब ऐसे शब्द का प्रयोग किया जाए जो उस अर्थ में किसी विशेष शास्त्र में ही प्रयुक्त होता है।

उदा0 :– तत्व ज्ञान पाकर हुए आशय दलित समस्त।

यहा 'आशय' का अभिप्रेरित, जो लिया गया है। अर्थ 'वासना' हैं पर इस अर्थ में यह शब्द योग शास्त्र में ही प्रयुक्त होता हैं ।

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

शेखावाटी मिशन 2022
पाठ्यपुस्तक आधारित वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अपठित पद्यांश – अंक - 6x1 = 6

ऊंची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर हैं,
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी
छाआयों का डर हैं।
शोषण से मृत हैं समाज
कमजोर हमारा घर हैं,
किन्तु आ रही जिन्दगी
यह विश्वास अमर हैं।
जन–गंगा में ज्वार,
लहर तुम, प्रवाहमान रहना
पहरूए, सावधान रहना।

(i) उपर्युक्त अपठित पद्यांश का उचित शीर्षक होगा–

(अ) मशाल (ब) सावधान
(स) नयी जिन्दगी (द) पहरूए सावधान रहना (द)

(ii) 'आगे कठिन डगर हैं' में कवि का 'डगर' से क्या तात्पर्य हैं–

(अ) रास्ता (ब) राह
(स) मार्ग (द) प्रगति की डगर (द)

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(iii) 'जन–गंगा में ज्वार' पंक्ति में कवि ने 'ज्वार' कहा हैं–

(अ) लहर को (ब) तरंग को

(स) उत्साह को (द) आकांक्षा को (स)

(iv)'कमजोर हमारा घर हैं' पंक्ति में 'कमजोर' से कवि का आशय हैं–

(अ) सम्पन्नता (ब) विपन्नता

(स) निरक्षरता (द) साक्षरता (ब)

(v) 'शत्रु हट गया लेकिन उसकी छायाओ का डर हैं' कवि ने शत्रु किसे कहा हैं–

(अ) मुगलो को (ब) अफगानी को

(स) अंग्रेजो को (द) इच्छाओ को (स)

(vi) 'पहरुए सावधान रहना' में कवि ने किसे संबोधित किया हैं–

(अ) सैनिको को (ब) सीमा जवानो को

(स) सैना प्रमुख को (द) उपर्युक्त सभी (द)

2. अपठित पद्यांश – अंक - 6x1 = 6

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।
हैं अनिश्चित, किस जगह पर
सरिता, गिरी, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित किस जगह पर
बाग, वन सुन्दर मिलेगें।
किस जगह यात्रा खत्म हो जायगी यह भी अनिश्चित,
हैं अनिश्चित कब सुमन कब कंटको के शर मिलेंगे।

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(i) उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक होगा–

(अ) पहचान (ब) लक्ष्य

(स) पथिक (द) पथ की पहचान (द)

(ii) 'बाट की पहचान कर ले' इस पंक्ति में 'बाट' से क्या आश्य हैं–

(अ) वजन (ब) लक्ष्य

(स) मार्ग (द) रास्ता (ब)

(iii) 'बटोही' का अर्थ हैं–

(अ) पथक (ब) साथी

(स) मनुष्य (द) उपर्युक्त सभी (अ)

(iv) 'हैं अनिश्चित ....' यात्रा मार्ग में क्या अनिश्चित हैं–

(अ) बाधा (ब) कष्ट

(स) सुख (द) उपर्युक्त सभी (द)

(v) 'बाग – वन सुन्दर मिलिगे' में 'बाग–वन' से क्या आश्य हैं–

(अ) सुख–सुविधा (ब) बाग–बगिचा

(स) सुन्दर पार्क (द) इनमें से कोई नहीं (अ)

(vi) 'कंटको के शर मिलेंगे' में कंटक का सामान्य अर्थ है–

(अ) दुःख (ब) तीर

(स) कांटे (द) उपर्युक्त सभी (स)

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

3. अपठित गद्यांश – अंक - 6x1 = 6

मानव जीवन का सर्वतामुखी विकास ही शिक्षा का उदेश्य है। मुनष्य के व्यक्तित्व में अनेक प्रकार की शक्तियां अर्न्तनिहित रहती हैं शिक्षा इन्ही शक्तियों का उद्घाटन करती हैं। मानवीय व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करने का कार्य शिक्षा द्वारा ही सम्पन्न होता हैं। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक मानव ने जो प्रगति की हैं, उसका सर्वाधिक श्रेय मनुष्य की ज्ञान– चेतना को ही दिया सकता हैं। मनुष्य में ज्ञान–चेतना का उदय शिक्षा द्वारा ही होता है। बिना शिक्षा के मनुष्य का जीवन पशु– तुल्य होता है। शिक्षा ही अज्ञान रूपी अन्धकार से मुक्ति दिलाकर ज्ञान का दिव्य आलोक प्रदान करती है। विद्या मनुष्य को अज्ञान के बंधन से मुक्त करती है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक होगा–

(अ) शिक्षा (ब) शिक्षा का उदेश्य

(स) शिक्षा का स्वरूप (द) उपर्युक्त सभी (ब)

(ii) विद्या मनुष्य को किसके बंधन से मुक्त करती हैं–

(अ) ज्ञान (ब) विज्ञान

(स) अज्ञान (द) उपर्युक्त सभी (स)

(iii) मानव प्रगति का सर्वाधिक श्रेय किसे दिया सकता हैं–'

(अ) परिश्रम (ब) धैर्य

(स) ज्ञान–चेतना (द) सवावलम्बन (स)

(iv) शिक्षा का उदेश्य क्या हैं–

(अ) सर्वांगीण विकास (ब) आत्मनिर्भरता

(स) स्वालम्बन (द) विचार दृढ़ता (अ)

(v) मनुष्य में ज्ञान – चेतना का उदय किसके द्वारा होता हैं–

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(अ) समाज (ब) शिक्षा

(स) परिवार (द) शिक्षक (ब)

(vi) शिक्षा द्वारा मनुष्य के व्यक्तित्व की किन शक्तियों का उद्घाटन होता हैं–

(अ) ब्राह्यमुखी (ब) सर्वमुखी

(स) अपेक्षित (द) अन्तर्निहित (द)

4. अपठित गंद्याश – अंक - 6x1 = 6

संसार मे अमरता ऐसे ही लोगो को मिलती हैं जो अपने पीछे कुछ आदर्श छोड़ जाते हैं। बहुधा देखा गया है कि ऐसे व्यक्ति संपन्न परिवार में बहुत कम पैदा होता है। अधिकांश ऐसे लोगो का जन्म मध्यम वर्ग के घरो में या गरीब परिवारों में ही होता है। इस तरह उनका लालन–पोषण साधारण परिवार में होता हैं और वे सादा जीवन बिताने के आदी हो जाते है।

मनुष्य में विनयद्व उदारता, सहिष्णुता और साहस आदि चारित्रिक गुणों को विकास अत्यावश्यक है। इन गुणों का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है। व्यक्ति की सच्ची पहचान उसके विचारों और करनी से होती है। मनुष्य के विचार उसके आचरण पर प्रभाव डालते है। और विवेक को जाग्रत रखते हैं सादगी मनुष्य के चरित्र का अंग है। वह बाहरी चीज नहीं हैं। महात्मा गांधी सादा जीवन पसंद करते थे और हाथके कते और बुने खद्दर के मामूली वस्त्र पहनते थे, किन्तु अपने उच्च विचारों के कारण वे संसार में वंदनीय हो गए।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक होगा–

(अ) अमरता (ब) पहचान

(स) मध्यम वर्ग (द) महापुरूषों का जीवन (द)

(ii) संसार में अमर कौन हो पाता हैं–

(अ) सम्पन्न लोग (ब) विपन्न लोग

(स) श्रेष्ठ लोग (द) पूंजीपति लोग (स)

शेखावाटी मिशन-100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

(iii) मनुष्य पर किन गुणो का प्रभाव जीवनभर पड़ता हैं–

(अ) विनय (ब) उदारता व सहिष्णुता

(स) सहास (द) उपर्युक्त सभी (द)

(iv) व्यक्ति की सच्ची पहचान किससे होती हैं–

(अ) सुन्दर वेशभुषा (ब) बाह्य रंग

(स) कथनी से (द) विचारो और करनी से (द)

(v) महापुरूष लोग अपने पीछे क्या छोड़कर जाते हैं–

(अ) आदर्श (ब) धन–दौलत

(स) निशानी (द) दरबार (अ)

(vi) मनुष्य के विचार व आचरण से क्या जाग्रत किया जा सकता हैं–

(अ) चाह को (ब) लोभ को

(स) विवेक को (द) अहम् को (स)

शेखावाटी मिशन–100

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

AAYAAM
CAREER ACADEMY
A NEW DIMENSION OF 'SUCCESS'
NEET | XI & XII FOUNDATION

पंखों को खोल
ज़माना सिर्फ
उड़ान
देखता है

Admission Open
Session 2022-23

NEET
XI & XII
FOUNDATION

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

Result: NEET 2020

131+ विद्यार्थियों का सरकारी मेडिकल कॉलेज में चयन !

AIR 67

JITENDRA KUMAWAT
S/o SURENDRA KUMAR
PALSANA

MAULANA AZAD GOVT. MEDICAL COLLEGE, DELHI

AIR 197

MANOJ KUMAR
S/o BABU LAL VERMA
PALSANA

AIIMS JDHPUR

Result: NEET 2021

उत्कृष्ट परिणाम के लिए
आयाम
ही सर्वोपरी संस्थान

एक बार फिर आयाम ने
साबित की अपनी श्रेष्ठता....

AIR 190 (OBC)

SAKSHAM YADAV
S/O RAJENDRA YADAV
Neem Ka Thana

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com

Result: NEET 2021

सीकर में अनुपात की दृष्टि से सबसे **ज्यादा सलेक्शन** देने वाला संस्थान!

100+ विद्यार्थियों का सरकारी मेडिकल कॉलेज में चयन संभावित !

AIR 215 (OBC) | AIR 435 (SC) | AIR 470 (OBC) | AIR 665 (OBC) | AIR 689 (ST) | AIR 789 (OBC) | AIR 828 (SC)

RAGHUVEER YADAV
S/o SITA RAM YADAV
Chhapoli, Udaipurwati

RAJESH
S/o CHHOTU RAM
Tibbi, Hanumangarh

NISHANT BAGARIA
S/o SAGAR BAGARIA
Malikpur, Khandela

MANISH YADAV
S/o Sh. ARJUN LAL YADAV
Amber, Jaipur

POOJA KUMARI
D/o Sh. SHANKAR LAL
Lisadiya, Shrimadhopur

ARJUN YADAV
S/o Sh. GOPAL LAL YADAV
Nathi Ka Bas, Renwal

HIMANSHU KUMARI
D/o Sh. RAMESH KUMAR
Singrawat Khurd, Didwana

AIR 902 (OBC) | AIR 940 (OBC) | AIR 1477 (SC) | AIR 1585 (OBC) | AIR 1619 (OBC) | AIR 1621 (OBC) | AIR 1841 (GEN.)

GAYATRI SIDDH
D/o Sh. SAWANT RAM
Napasar, Bikaner

NEETU
D/o Sh. BHOLA RAM
Mathandi, Shrimadhopur

YASHWANT VERMA
S/o Sh. GANPAT LAL
Kadiya Seema, Rajsamand

DEVENDRA KUMAR
S/o Sh. RAMAVATAR
Jalpali, Shrimadhopur

RAVI SAINI
S/o Sh. CHIRANJI LAL SAINI
Thanagazi, Alwar

ABHAY SINGH
S/o Sh. SAGAR SINGH
Kotri Dhayalan, Reengus

DEVISHI SHARMA
D/o Sh. JAIPRAKASH SHARMA
Karad, Dantaramgarh

AIR 1977 (GEN.) | AIR 2062 (SC) | AIR 2144 (GEN.) | AIR 2330 (OBC) | AIR 2338 (OBC) | AIR 2505 (GEN.)

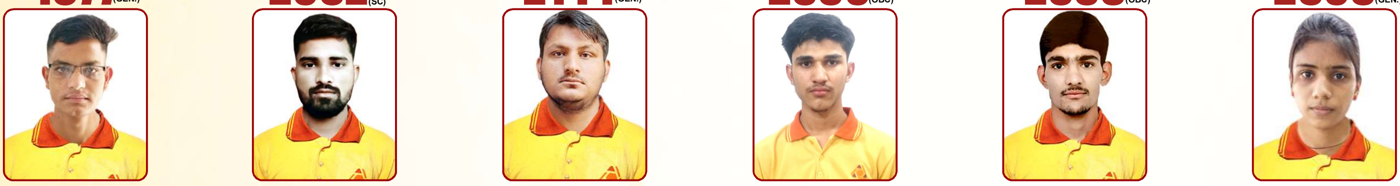

RAHUL SHARMA
S/o Sh.OMPRAKASH
Amber,Jaipur

BABU LAL NAYAK
S/o Sh. TAKA RAM
Pogal, Bikaner

RAHUL SHARMA
S/o Sh. NANU RAM SHARMA
Jorpura, Renwal

SURENDER MOOND
S/o Sh. NARSA RAM
Ranisar, Bikaner

RISHI YADAV
S/o Sh. SHIVPAL YADAV
Gopalpura, Ajitgarh

POOJA SHARMA
D/o SH. PAWAN KUMAR
Sari, Chirawa

AIR 2905 (GEN.) | AIR 3104 (OBC) | AIR 3240 (OBC) | AIR 3355 (OBC) | AIR 3381 (OBC) | AIR 3626 (OBC)

ARBAZ KHAN
S/o SAMSHER KHAN
Mangloona, Laxmangarh

OM PRAKASH
S/o Sh. SANWALA RAM
Bhedana, Barmer

RAHUL KUMAWAT
S/o Sh. BABU LAL KUMAWAT
Alisar, Badi Dhani, Chomu

ARYAN JANGIR
S/o Sh. SANJAY JANGIR
Udaipurwati, Jhunjhunu

SAROJ GEELA
D/o Sh. JALU RAM GEELA
Geelon Ki Dhani, Lamiya

AJAY KUMAR KURI
S/o Sh. GOPAL SINGH
Panawali Dhani, Kasarda

AIR 4228 (OBC) | AIR 4285 (OBC) | AIR 4551 (OBC) | AIR 4656 (OBC) | AIR 4689 (OBC) | AIR 4943 (OBC)

ROSHAN KUMAR
S/o Sh. MANOHAR LAL
Jharli, Thoi

SANGHARSH KUMAR
S/o Sh. MURARI LAL SAMOTA
Patwari ka Bas, Shrimadhopur

RAHUL KUMAR
S/o Sh. SITA RAM YADAV
Mohanpura, Kishangarh, Renwal

AKASH SERAWAT
S/o Sh. PHOOL CHAND
Nimadi, Hathnoda, Chomu

ANITA YADAV
D/o Sh. BALU RAM YADAV
Munduru, Shrimadhopur

VEENA DORATA
D/o Sh. MAHIPAL DORATA
Dumoli Khurd, Khetri

AIR 4951 (OBC) | AIR 5116 (OBC) | AIR 5467 (OBC) | AIR 5658 (OBC) | AIR 5730 (OBC) | AIR 5945 (OBC)

RAMESH CHOUDHARY
S/o Sh. BAJRANG LAL
Lunkaransar

ANIL KUMAR SAINI
S/o Sh. SHIMBHU DAYAL
Shyampura Bansur, Alwar

ASHISH KUMAWAT
S/o Sh. KRISHNA GOPAL
Palsana

SANTOSH YADAV
S/o Sh. RAMAWATAR YADAV
Sherpura, Khori, Shahpura

ROSHAN YADAV
S/o Sh. BANSHIDHAR YADAV
Etawa-Bhopji, Chomu

ANIL CHOUDHARY
S/o Sh. SITARAM
Bilanderpur, Shahpura

Download all mission 100 -manitidiyasar.blogspot.com
AAYAAM
हर बार...लगातार...
Highest Selection Ratio
Session 19-20
131 Selection
Session 18-19
129 Selection
Session 17-18
108 Selection
SUCCESS
AAYAAM
CAREER ACADEMY
A NEW DIMENSION OF 'SUCCESS'
NEET | XI & XII FOUNDATION
01572-244555, 7300335555 PIPRALI ROAD, SIKAR
E-mail: info@aayaamacademy.com Website: www.aayaamacademy.com
FOLLOW US ON SOCIAL MEDIA
You Tube
Subscribe to our YouTube Channel AAYAAM ACADEMY, SIKAR
Follow & Like us on Facebook facebook.com/AAYAAMACADEMYSIKAR
Join us on Whatsapp 7300335555